Vol. II
No. 17



Monday
5th October, 1953

HYDERABAD LEGISLATIVE ASSEMBLY DEBATES

Official Report

PART II—PROCEEDINGS OTHER THAN QUESTIONS AND ANSWERS

CONTENTS

Note:—In this part, a star at the beginning of the speech denotes confirmation not received.

HYDERABAD LEGISLATIVE ASSEMBLY

MONDAY, 5TH OCTOBER, 1953

The House met at Half Past Two of the Clock

[*Mr. Speaker in the Chair*]

QUESTIONS AND ANSWERS

(*See Part I*)

Business of the House

Mr. Speaker: We shall now take up Short-Notice question.

Shri V. D. Deshpande (Ippaguda): If I remember right, it was decided in the Business Advisory Committee that questions of Saturday would be taken up on Monday.

Mr. Speaker: We have not got the questions of Saturday with us. We have only got the questions of 1st October.

Shri V. D. Deshpande: Yes, 1st October.... (*Laughter*)

Shri M. Buchiah (Sirpur): But if there are questions which have been given notice of for Saturday......

Mr. Speaker: Let Shri Ch. Venkatrama Rao put the Short Notice Question.

شری جی - هنمنت راؤ (ملگ) - فرسٹ اکتوبر کو تعطیل دیگئی تھی کیونکه هاؤز کے سامنے بزنس نہیں تھا اسلئے اوس دن کے سوالات آج لئے جائیں تو اچھا ہوگا -

مسٹر اسپیکر - آپ انسٹر کشنس (Instructions) پڑھ لیجئے - اون کے تحت ایسے سوالات ان اسٹارڈ (Unstarred) هوجاتے هیں -

Shri Ch. Venkat Rama Rao (Karimnagar): Whether it is a fact that the Congress President, Shri Swami Ramanand Tirth reported to the Government about the situation on his return from Sirpur on 13-7-1953?

If so, what are the details of the report and whether the hon. Minister will place it on the table of the House ?

Is it not a fact that the police is still continuing its terror and framing false cases against the Trade Unions ? If so, why ?

Mr. Speaker : It appears that this question is wrongly addressed. It should be addressed to the Chief Minister.

Now, there is one petition to be presented by Shri Ch. Venkat Rama Rao.

Shri V. D. Deshpande : The Chief Minister is always very active to reply. He can reply now. [*Laughter*]

On a point of information, Sir.

اگر کوئی سوال کسی دوسرے منسٹر کے نام پر غلطی سے اڈریس (Address) کیا جائے تو کیا یہ لازمی ہوتا ہے کہ وہ سوال ممبر کو واپس بھیجدیا جائے ؟ کیا ایسا نہیں ہوسکتا کہ سکرٹری کے آفس سے اس میں چینج (Change) کر کے متعلقہ منسٹر کے پاس وہ روانہ کردیا جائے -

مسٹر اسپیکر - بات یہ ہے کہ اگر آفس سے کرکشن (Correction) ہوتو ممکن ہے کہ سوال کرنے والے کا جو منشا ہے وہ فوت ہوجائے - اسلئے یہ احتیاط کرنی پڑتی ہے -

شری وی - ڈی - دیشپانڈے - اس خاص کوئسچن کے متعلق یہ جواب ملا تھا کہ آج اسکو رکھا گیا ہے - رکھنے کے بعد یہ کہا جارہا ہے کہ وہ اس منسٹر سے متعلق نہیں ہے -

مسٹر اسپیکر - ایسے بہت سے سوالات جو رانگلی اڈریس (Wrongly address) کئے جاتے ہیں وہ نامنظور کئے جاتے ہیں -

Petition re: the increase in Salaries and Grades of Process servers

شری سی - ایچ - وینکٹ رام راؤ - میں حسب ذیل پٹیشن هاؤز میں پیش کرتا ہوں جس کے دستخط کنندگان مسرس راجو ،عبد الرحیم - عبد الحکیم اور دیگر دس اشخاص ہیں - اپنے متعلقہ پیمنٹ اور وظائف وغیرہ کے سلسلہ میں درخواست پیش کرتے ہوئے کہتے ہیں کہ " یہ بدنصیب عملہ طلبانہ جو رات اور دن بلالحاظ موسم پیدل دوڑدھوپ، کوسوں کی منزلیں ہر ماہ طے کرتا ہے جسکا گریڈ درج ذیل ہے اور اسکا نفاذ سنہ ۲۰ف سے ہوا ہے- پیلیف ۲۵ تا ۳۵ الونس گرانی ۱۲ - جوانان طلبانہ تنخواہ ۱۵ تا ۲۰ الونس گرانی ۱۲

روبیہ ۔ ڈریس طلبانہ جنکو رات اور دن ہر موسم میں کوسوں کی منزلیں طے کرتے ہوئے دیہات میں جا کر زمین پر سونا پڑتا ہے عملہ طلبانہ کو ہر سال فی کس ایک چھتری اور ایک بیا گ دیا جانا چاہئے ۔ تا کہ سمن وغیرہ محفوظ رکھکر بارش میں خراب نہ ہونے دیں ۔

ملازمین ادنی علاقہ دیوانی قواعد رخصت و وظیفہ سے مستفید ہوا کرتے ہیں لیکن یہ مظلوم طبقہ عملہ طلبانہ اس سے ہمیشہ کیلئے محروم رہا ہے ۔ ایسی مثال کسی اورسررشتہ کے ملازمین ادنی میں نہیں مل سکتی ۔ اس عمل کا نتیجہ یہ ہوتا ہے کہ عملہ طلبانہ کے ہاتھ و پیر میں جب تک قوت باقی رہے وہ ملازمت کرسکتا ہے ۔ بیلیفی کی خدمت نہ صرف اہل قلم کی ہے بلکہ ایک اہم ذمہ دارانہ خدمت ہے لیکن اسکی خدمت کو درجہ ادنی قرار دیا گیا ہے ۔ حالانکہ یہ لاکھوں روپیہ کے مالیت ضبطی کے کاروبار سخت خطرہ کی حالت میں انجام دیتا ہے ۔ عملہ طلبانہ کی ملازمت عاملانہ دورہ کی ہے ۔ اسلئے قواعددورہ کے تحت انکو سفر خرچ عطا فرمایا جائے ۔ بیلیف کے لئے فی ماہ ۲۰ روپیہ اور جوانان طلبانہ کے لئے فی ماہ ۱۰ روپیہ الونس سواری مستقلا نہ منظور فرمایا جائے ۔ ملازمین ادنی علاقہ دیوانی کو سال سنہ ۲۰ف سے جو مراعات اس وقت تک عطا فرمائے گئے ہیں عملہ طلبانہ کو بھی اسی سال سے صدر مراعات عطا فرمائے جا کر بقایا منظور و سرفراز فرمایا جائے

Mr. Speaker : This petition is referred to the Committee on Petitions.

L. A. Bill No. XV of 1953, The Hyderabad Agricultural Debtors' Relief Bill

Mr. Speaker : Now, we shall take up item No. 3 : First reading of L. A. Bill No. XV of 1953.

شری گو پی ڈی ۔ گنگاریڈی (نرمل ۔ عام) ۔ اس بل کا ترجمہ کر کے نہیں دیا گیا ۔

مسٹر اسپیکر ۔ ترجمہ تقسیم کیا گیا ہے ۔

Minister for Education and Rural Reconstruction (Shri Devi Singh Chauhan) : Mr. Speaker, Sir, I beg to move :

"That L. A. Bill No. XV of 1953, a Bill to consolidate and amend the law for the relief of Agricultural Debtors in the State of Hyderabad, be read a first time."

Mr. Speaker : Motion moved.

श्री. देवीसिंग चौहान :—अध्यक्ष महाशय, हैदराबाद अॅग्रिकल्चरल डेटर्स रिलीफ बिल (Hyderabad Agricultural Debtors Relief Bill) आज आप के सामने रखा जा रहा है। उसका मकसद यह है कि हमारे मुल्क में जो अॅग्रिकल्चरिस्ट (Agriculturist) हैं उनके ऊपर कर्ज का बोझा बहुत बडा हुआ है ; और उसको कंट्रोल करने की जरूरत है। कुछ जमाने से इसके बारे में तदाबीर सोंचे जा रहे हैं। इसकी इब्तदा बहुत पुरानी रही है। दूसरे स्टेट में इसके बारे में कई कानून बनाये गये हैं। जबसे हिंदुस्थान में अंग्रेजों की हुकूमत कायम हुई और जब पीस अॅन्ड ट्रंक्विलिटी (Peace and Tranquility) कायम हुई तब से, अग्रिकल्चरल अिनडेटेडनेस (Agricultural indebtedness) का काम करने की कोशिश हो रही है। ब्रिटिश अिंडिया में सबसे पहले इस तरह की कोशिश हुई। खास तौर पर १८५७ के बाद इस तरह की कोशिश की गई। सबसे पहले १८३९ में डेक्कन अॅग्रिकल्चरिस्ट रिलिफ अॅक्ट (Deccan (Agriculturist Relief Act) आया। उसके बाद अलग अलग सूबों में अलग अलग कानून बनाये गये। लेकिन हमारे स्टेट में इस तरह का कानून १९३९ में बनाया गया वह बहुत ही माइल्ड (Mild) था। हैदराबाद स्टेट में रूरल अॅग्रिकल्चरल इंडेटेडनेस (Rural) (Agricultural indebtedness)के बारे में कुछ इनव्हेस्टिगेशन (Investigation) किया गया था। १८७० में यह पहले पहल औरंगाबाद में फरदून जी जमशेटजी ने किया था। १८७० में ६४ फीसद कास्तकार मकरूज थे। लेकिन यहां पर कोई ऐसा कानून तयार नहीं हुआ।

१९३६ में श्री. भरूचा को जो रेव्हिन्यू डिपार्टमेंट में अफसर थे, उन्हें इसकी जांच के लिये कहा गया था। और उन्हें यह हिदायत दी गई थी कि अॅग्रिकल्चरिस्ट इंडेटेडनेस के बारे में तहकीकात करें, और एक रिपोर्ट पेश करें। उन्होंने जो रिपोर्ट पेश की उसकी बिना पर १९३९ में एक दस्तुरुल अमल बनाया गया जो कि कनसिलिएशन (Conciliation Debt) के बारें में था वह कानून जो कर्जे की हद तक था श्री. भरूचा का जो रिपोर्ट पेश हो गया था उसमें उन्होंने ११० मवाजियात का इनव्हेस्टिगेशन (Investigation) किया था। इसमें इन्होंने ५ हजार फॅमिलीज (Families) का लिव्हिंग(Living)देखा। उसके ज्यादा तफसील में मैं नहीं जाना चाहता, लेकिन इतना कहना चाहता हूं कि श्री. भरूचा ने जो इनव्हेस्टिगेसन किया था, उसमें कुल ९ करोड रुपये का कर्जा है ऐसा मालूम होता है। ऊसपर से यदि हर फमिली का अॅव्हरेज (Average) कर्जा निकाला जाय, तो कुछ १९० रुपये फी फॅमिली कर्जा आता है। अगर यह कर्जा फी आदमी निकाला जाय तो तकरीबन ३० रुपये फी आदमी आता है। इस कर्जे का हिसाब जमीन पर किया जाय तो हर एकर (Acre) के लिये १० रुपये कर्जे का अंदाजा मालूम हुआ। इन्हीं वाकयात की बिनापर, भरूचा की रिपोर्ट की बिना पर हमारे यहां दो कानून बनाये गये। उसमें से एक हैदराबाद डेट्स कन्सिलियेशन अॅक्ट (Hyderabad (Debts Conciliation Act) था और दूसरा हैदराबाद मनिलेंडर्स अॅक्ट (Hyderabad Money Lender's Act)था। डेट्स कनसिलियेशन अॅक्ट का मनशा यह था कि डेटर (Debtor) और क्रेडिटर (Creditor) दोनों को एक जगह बुलाया जाय और दोनों के बीच बीच मुफाहमत की कोशिश की जाय। इस तरह यदि डेटर और क्रेडिटर राजी हो जावें तो फिर कर्जा कमी करने की कोशिश की जाय। अगर दोनों में मसालिहत हो तो

कर्जा कम किया जा सकता था। लेकिन यह देखा गया कि इस तरह मसालिहत से कर्जा कम करने के लिये क्रेडिटर कभी तैयार नहीं होते थे।

इस कानून के तहत जुमला ११,७१२ केसेस डेटर्स कनसिलियेशन बोर्ड (Debtors' Conciliation Board) के सामने आई थी। उन मुकद्दमात में अलग अलग सेक्शन के तहत कुल ११४ लाख की रुकूमात के कर्जे थे। उसमें से २२६६ केसेस में कनसिलियेशन (Conciliation) किया गया। इस में ११ लाख ९८ हजार रुपयों की रकम कम की गई। इस पर से यह दिखता है कि इस कनसिलियेशन बोर्ड से बहुत ही कम फायदा हुआ। गोया कर्जे में एक फीसद भी कमी नहीं हुई। जुमला ९० करोड में से सिर्फ तकरीबन १२ लाख रुपये की ही रकम कम की जा सकी थी। फायदा इस बोर्ड के जरिये से हुआ था।

जो बिल आज यहां लाया जा रहा है यह बहुत देरी से लाया जा रहा है। दूसरे स्टेटों में तो इस तरह का कानून इसके पहले ही आ गया था। बंबई और मद्रास में १९१४–१८ के जंग के बाद जो बडा स्लंप (Slump) आया था, उस वक्त यह कानून लाया गया था, और डेट्स कनसिलियेशन ॲक्ट (Debts Conciliation Act) सन् १९३६–३७ में नाफिज किया गया था। लेकिन उनको पांच सात सालों के अनुभव से मालूम हुआ कि ऐसे कानून से कास्तकारोंको जितना फायदा पहुंचना चाहिये उतना नहीं पहुंचता है। इसके बाद १९३६-३७ में स्टेटों में कॉंग्रेस मिनिस्टरी आई। डेटर्स कनसिलियेशन ॲक्ट रिपील (Repeal) करके डेटर्स रिलीफ ॲक्टस (Debtors, Relief Acts) कायम किये गये। और कर्जदहंदा और कर्ज लेनेवाले दोनों को खुश रखने की कोशिश की गई। हमारे यहां इस तरह का कोई कानून अभी तक नहीं बना, यह कानून तो यहां बहुत पहले से ओव्हरड्यू (Overdue) है। और केशव अयंगार ने इसके सिलसिले में जो इनव्हेस्टिगेशन्स (Investigations) किये थे उनमें ६ मवाजियात शामिल थे। इस तहकीकात में ८९६ फॅमिलीज (Families) आई थीं। और उनका टोटल डेट्स ५ लाख हजार रुपये था। याने तकरीबन ५०० फॅमिली में ५ लाख ११ हजार का कर्जा था। इसका यदि फी कस हिसाब लगाया जाय तो २९ रुपये निकलता है, और भरूचा रिपोर्ट में जो हिसाब लगाया गया था वह ३० रुपये था। दोनों के इनव्हेस्टिगेशन में कुछ ज्यादा फरक नहीं आया है।

मैंने जो यह आदाद अर्ज किये, वैसे ही फिगर्स दूसरे प्रांतों में जो इनव्हेस्टिगेशन हुआ था उनमें भी पाये गये हैं। ऐसा एक इनव्हेस्टिगेशन मद्रास में १९४५ में किया गया था। उसके कुछ कंपेरिटिव्ह फिगर्स (Comparative figures) मैं आप के सामने रखना चाहता हूं।

यह जो इनव्हेस्टिगेशन किया गया है वह पांच अकसाम में किया गया था। (१) बडे जमीनदार, (२) मीडियम लॅंड होल्डर्स (Medium Landholders), (३) छोटे लॅंड होल्डर्स, (४) टेनंट्स (Tenants), (५) लॅंड लेबरर्स (Land labourers)

मालूम हुआ कि १९३९ में जो बड जमीनदारों का कर्जा ३४.४ फीसद था, वह १९४५ में १०.८ फीसद हुआ। मीडियम लॅंड होल्डर्स का कर्जा १९३९ में ४५.५ फीसद था, वह १९४५ में

४१ फीसद हुआ । स्मॉल होल्डर्स (Small holders) का कर्जा १९३९ में ३५.३ फीसद था, वह १९४५ में ३८.७ फीसद हुआ। टेनंट्स (Tenants) का कर्जा १९३९ में ५.४ फीसद था, वह १९४५ में ७ फीसद हुआ । लँड लेबरर्स (Land labourers) थे। उनका कर्जा १९३९ में १.४ फीसद था। वह १९४५ में २.५ फीसद हुआ । इससे मालूम होता है कि टेनंट और लँड लेबरर्स के कर्जे की फीसदी बढी हुवी है ।

केशव अयंगार ने जो इनव्हेस्टिगेशन (Investigation) किया है उसे देखने से भी मालूम होता है कि नीचे के तबके पर कर्जे का भार ज्यादा बढा है। जो ३०० रुपये फी कुंबे का कर्जा था वह ५७१ तक बढा है। फीकस जो ३० रुपये था वह २९ रुपये हुआ है ।

मद्रास में जो सर्वे (Survey) किया गया है अुसे देखने से मालूम होता है कि दूसरी जंग के बाद लँडलॉर्ड की जमीन की आमदनी बढी है, और उनके कर्जे में थोडीसी कमी हुई है। लेकिन छोटे छोटे काश्तकार के कर्जे में इजाफा हुआ है। टेनंट्स और लँड लेबरर्स के कर्जे में इजाफा हुआ है। यह हालात हमारे सामने हैं। हमारे यहां भी जो बडे बडे जमीनदार हैं उनके कर्जे में कुछ कमी हुई है, लेकिन जो छोटे छोटे काश्तकार हैं, या जो टेनंट्स और जिराअती मजदूर हैं, उनके कर्जे में इजाफा ही हुआ है। हमारे यहां थोडासा सर्व्हे (Survey) का काम हुआ है उससे भी यही मालूम होता है ।

यह बात सही है कि यह कानून इसके पहले ही आना चाहिये था। यह येक अहम कानून है, और देरी से भी क्यों न हो आज यह असेंब्ली के सामने आया है । तो मैं उमीद करता हूं कि हाउस के सब मेंबर्स इसका स्वागत करेंगे और उसको पास करेंगे ।

अब मैं इस कानून में जो अलग अलग दफात हैं, उनके बारे में कुछ वजाहत करना चाहता हूं। जो डेटस् कन्सिलिवेशन (Debts conciliation) का कानून था, याने कर्जे के मसालिहत का जो कानून था, उसमें क्रेडिटर (Creditor) और डेटर (Debtor) की राजी खुशी से कर्जे में कमी हो सकती थी। लेकिन अब यह जो कानून लाया जा रहा है, उसमें ऐसी बात नहीं है। इस कानून के लिहाज से कर्जे में कमी करने के लिये कोई मसालिहत नहीं होगी। क्रेडिटर यदि नहीं भी चाहे लेकिन अगर कर्जदार काश्तकार है तो उसका कर्जा कानून कम होगा।

इस कानून में काश्तकारी की तारीफ की गई है। काश्तकार से मुराद वह आदमी है जो खुद ॲग्रिकल्चरिस्ट (Agriculturist) हो, और जिसकी नॉन-ॲग्रिकल्चरल आमदनी तेहत्तीस फीसद से ज्यादा न हो, या उसका ॲन्युअल इनकम (Annual income) ५०० रुपये से ज्यादा न हो। अगर जॉइंट हिंदू फॅमिली (Joint Hindu Family)है तो नॉन-ॲग्रिकल्चरल इनकम (Non-agricultural income) ४० फीसद से या १५०० रुपये से ज्यादा नहीं होना चाहिये। इस कानून के तहत कर्जे में कमी करने की भी गुंजायश रखी गई है।

क्लॉज २२ में यह बताया गया है कि १ जनवरी, १९३५ के पहले जो कर्जदार थे उनके बारे में कोर्ट अकाउंट्स (Accounts) मंगायेगा और उनके इंटरेस्ट (Interest) में कमी करेगा। सिंपल इंटरेस्ट (Simple interest) लगाया जायेगा, और जो कर्जा तथा इंटरेस्ट है उस में ४० फीसद कमी की जायेगी। कानून से ही १९३६ के पहले का जो कर्जा है उसमें एकदम से ४० फीसद की कमी कर दी गई है। १९३६ के बाद और १९४५ के पहले का जो कर्जा है उसमें और उसके इंटरेस्ट में ३० फीसद कमी करने का भी प्राव्हिजन रखा गया है।

रेट आफ इंटरेस्ट (Rate of interest) के बारे में भी हुदूद लगाये गये हैं। १९३६ के पहले का जो कर्जा है उसका शेर सूद दोनों पार्टीज आपस में तय कर सकती हैं। यदि ऐसा तय न हो तो फिर यहां के मनिलेंडर्स ॲक्ट (Money Lenders Act) में जो शरेहसूद बताया गया है उस लिहाज से सूद लिया जायेगा। इन दोनों में से जो कम हो वह शरेहसूद रहेगा। यदि कोई कर्जा १९३६ के बाद का किंतु १९४५ के पहले का है तो उसकी बाबत भी इस कानून में यह रखा गया है कि दोनों पार्टीज इसको तय करें, या फिर जो शरेहसूद कानून से तय होगा वह ९ फीसद से ज्यादा न होगा। इन दोनों में से जो कम शरेहसूदहोगा वही लिया जायेगा।

यदि कोई कर्जा १९४५ के बाद का होगा तो उस पर ज्यादा से ज्यादा ६ परसेंट सूद लिया जा सकता है। खास केसेस में अदालत ६ फीसद भी सूद रख सकती है। जो मुकद्दमात अदालत के सामने पेश होंगे उनमें डेटर्स (Debtors) की माली हालत अदालत देखेगी, और उसकी पेइंग कॅपॅसिटी (Paying capacity) क्या है यह भी देखा जायेगा। उसकी जायदाद देखी जायेगी। डेटर की जायदाद का व्हॅल्युएशन (Valuation) कोर्ट की तरफ से किया जायेगा। सिव्हिल प्रोसिजर कोड (Civil Procedure Code) के तहत जो जो ॲसेट्स (Assets) या जायदाद आती है उसको व्हॅल्युएशन में नहीं लिया जायेगी। इसको छोडकर बाकी का व्हॅल्युएशन किया जायेगा और उसमें ४० फीसदी की कमी की जायेगी। क्लॉज ३० डेटर की पेइंग कॅपॅसिटी (Paying capacity) के बारे में है। उसकी पेइंग कॅपॅसिटी देखकर उसे ६० फीसद तक कम किया जायगा।

क्लॉज ३० में डेटर की पेइंग कॅपॅसिटी देखकर कर्जा ६० फीसद तक कम कर दिया गया है। कम किया हुआ कर्जा यदि ६० फीसद से कम है तो कर्जे में और भी कमी करने की गुंजायश रखी गई है। इस कानून के मुख्य प्रावहिजन्स आपके सामने रख दिये गये हैं।

[Mr. Dupty Speaker in the Chair]

लाजमी तौर पर कर्जे में कमी करने की गुंजायश इस बिल में रखी गयी है। हम ॲग्रिकल्चरल (Agricultural) कर्जे में कमी करना चाहते हैं। सिर्फ मसालिहत से या कनसिलियेशन से यह काम नहीं होने वाला है। माहिरीन की राय भी यही है। यदि हमें खेतका उत्पादन को बढाना है और यदि हम ॲग्रिकल्चर का बढावा देना चाहते हैं, तो काश्तकारों के कर्जे को हमें कम करना चाहिये। आज बोझा बढा हुवा है, उसे कम करने के बारे में हमें सोचना

चाहिये और अिसी मकसद से ऐवान के सामने यह बिल लाया गया है। मैं उमीद करता हूं कि आप इस बिल की हिमायत करेंगे, और इसे पास करेंगे।

श्री. ए. राज रेड्डी :—पॉइंट ऑफ इनफरमेशन सर, ऑनरेबल मिनिस्टर साहब यदि क्लॉज ११ के बारे में वजाहत फरमायेंगे तो ज्यादा अच्छा होगा।

श्री. देवीसिंग चौहान :—इस कानून का जो दफा ११ है, वह मैं आप को पढ कर सुनाता हूं।

"No application under Section 4 or 8 shall be entertained by the Court on behalf of or in respect of any debtor, unless the total amount of debts due from him on the date of the application is not more than Rs. 15,000."

इस क्लॉज ११ का मतलब यह है कि जिस व्यक्ति का कर्जा १५,००० रुपये से ज्यादा है उसको काश्तकार नहीं समझा जायेगा, और उसका यदि अप्लीकेशन कोर्ट के पास आता है तो उसे कोर्टस स्वीकार नहीं करेंगे।

* شری بی - ڈی - دیشمکھ (بھوکردن - عام) - مسٹر اسپیکر سر - آج ہاؤس کے سامنے جو بل آیا ہے واقعی وہ بہت اہم اور ضروری بل ہے - آنریبل منسٹر نے خود اپنی ابتدائی اسپیچ میں یہ بتلایا ہے کہ ملک کے حالات کے لحاظ سے اس قانون کی ملک کو کسقدر شدید ضرورت ہے - لیکن اس قانون کے لانے میں جو تاخیر کیگئی ہے اسکے لحاظ سے میں نہیں سمجھتا کہ آنریبل موور آف دی بل کسی تعریف کے مستحق ہیں - اس میں شک نہیں کہ یہ لائق تعریف ضرور ہے لیکن یہ قانون حیدرآباد میں سنہ ۱۹۳۹ع میں آنا چاہئے تھا - مختلف کمیٹیوں نے اس بارے میں رپورٹس پیش کی ہیں - ہم دیکھتے ہیں کہ ھندوستان کے دوسرے علاقوں میں سنہ ۱۹۳۰ع ۱۹۳۷ع میں یہ قانون آیا بمبئی میں سنہ ۱۹۴۷ع میں آیا جہاں سے حیدرآباد کیلئے یہ قانون لایاجارہا ہے - لیکن اس کے لئے بھی اتنی تاخیر کیگئی - مادھو راؤ کمیٹی نے بھی اس سلسلے میں اعداد و شمار دئے ھیں - جس سے معلوم ھوتا ہے کہ ہمارے ملک میں کسانوں کی مقروضیت بڑھی ھوئی ہے اور فی کس ۳۰ سے ۵۰ تک قرض کی مقدار پہنچ گئی ہے - ایسی حالت میں جو ڈیٹ رلیف ایکٹ لایا جارہا ہے وہ محض تکمیل ضابطہ نظرآتا ہے - ھمیں دیکھنا تو یہ ہے کہ ہمارے ملک کے کسانوں کو کسطرح قرض سے نجات دلائی جائے - یہ حکومت کی پالیسی کا اہم سوال ھونا چاہئیے - محض اسطرح کا قانون پاس کردینے سے یہ مسئلہ حل نہیں ھوجاتا - دیکھنا یہ ہے کہ آخر اس کسان کے اسطرح مقروض ھوجانے کی کیا وجہ ھوتی ہے - اسپر حکومت کو سوچنا پڑیگا - کانگریس اگریرین رپورٹ جو شائع ھوئی ہے اس سے بھی یہ واضح ھوگا کہ بمبئی میں سنہ ۱۹۴۷ع میں یہ قانون پاس ھوا - اس سے پہلے اس نے مختلف صورتیں اختیار کیں - پھر بھی یہ معلوم ھوا کہ ھندوستان کے کسان کی مقروضیت کم نہوئی - برسراقتدار جماعت یو پی - مدراس اور سارے ھندوستان میں اس بات کو محسوس

کرچکی ۔ اس قسم کا قانون لانے کے باوجود کسانوں کی مقروضیت بڑھتی ھی جارھی ھے ۔ یہ چیز پلاننگ کمیشن کے سامنے بھی آچکی ھے ۔ ایسی صورت میں ھرگز یہ نہیں سمجھنا کہ یہ قانون کسانوں کی مقروضیت کو حل کرنے کا واحد ذریعہ ثابت ھوگا ۔ میں تو یہ کہونگا کہ یہ قانون ۲۰-۲۵ سال پہلے لایا جانا چاھئیے تھا ۔ لیکن حکومت کی لاپرواھی کی وجہ سے یہ نہوسکا ۔ یہاں یہ سوال زیر بحث نہیں ھے کہ آیا یہ قانون متصلہ صوبجات کے قوانین سے بہتر ھے یا کیا ھے ۔ لیکن بمبئی میں سنہ ۱۹۴۷ع میں جو قانون بنایا گیا دیکھنا یہ ھے کہ اس قانون کے تجربہ کے لحاظ سے آیا ھمارے موجودہ قانون کو مدون کیا گیا ھے یا نہیں ۔ بمبئی کے ایکٹ کی خرابیاں یا خامیاں اس قانون میں دور کیگئی ھیں یا نہیں ۔ لیکن اس قانون میں ایسی کوئی خاص کوشش نظر نہیں آتی ۔ " مقروض " کی جو تعریف رکھی گئی ھے میں سمجھتا ھوں وہ نامکمل ھے ۔ اس میں انہوں نے یہ معیار مقرر کیا ھے کہ ایسے کاشتکار بھی اس میں آسکینگے جنکی زراعت کے علاوہ ۳۳ فیصد آمدنی ھو ۔ اس قانون کے ذریعہ جن حدود کے اندر رلیف دینے کا طریقہ رکھا گیا ھے اس سے مقروض قرض کے بوجھ سے نجات پانے والا نہیں ھے ۔ آخر کسان کیوں مقروض ھوتا ھے ھمیں اس بنیادی مسئلہ پر سوچنا ھے ۔ دوسری جنگ کے بعد باوجود زرعی پیداوار کی قیمتوں میں اضافہ ھوا لیکن چھوٹے کسان اپنے زرعی اخراجات اس اضافہ سے بھی پورے نہ کرسکے ۔ اسکی ضروریات زندگی کی قیمتوں میں بھی اضافہ ھوتا گیا ۔ بڑے لینڈ لارڈس کا بوجھ تو ھلکا ھوا ، انہیں فائدہ پہنچا لیکن متوسط اور چھوٹا کسان اس تبدیلی سے مستفید نہوسکا ۔ اسکی معیشت نہ بدل سکی ۔ اسکے قرض میں اضافہ ھی ھوتا گیا ۔ میں یہ واضح کردینا چاھتا ھوں کہ کسان جاھل ھونے سے یا پہلے ھی سے مقروض ھونے کی وجہ سے اسکا قرض بڑھتا نہیں گیا بلکہ قیمتوں میں اضافہ کے ساتھ جو گیارنٹی اسکو ملنی چاھئیے تھی نہ ملی ۔ ھمارے ملک میں ایک ایسا طبقہ بھی ھے جو کسان سے اس کی ساری پیداوار خریدلیتا ھے ۔ اور کافی عرصہ تک اس پیداوار کو اپنے پاس رکھکر گراں قیمتوں پر بیچتا ھے ۔ اور کنزیومرس سے بھی زیادہ رقم وصول کر کے نفع خوری کرتا ھے ۔ ایک اور امر یہ ھے کہ حالات کے لحاظ سے زراعت کی ترقی کیلئے حکومت کو کسانوں کی جو مدد کرنی چاھئیے تھی اس نے نہیں کی ۔ اسطرح کسان ترقی نہ کرسکے ۔ چھوٹے کسانوں کی زراعت میں کوئی اضافہ نہوسکا ۔ ایک اور وجہ یہ ھے کہ چھوٹے چھوٹے قطعات پر کاشت کرنے والے کسانوں کو اپنی زمین میں ایک فصل کی بجائے جو دو تین فصلیں کاشت کرنا چاھئیے تھا وہ اپنی زراعت کو دو فصلہ یا سہ فصلہ نہ بناسکے ۔ علاوہ ازیں حکومت نے ارریگیشن کا مسئلہ بھی حل نہیں کیا ۔ پراڈکٹویٹی بڑھنے کیلئے اور پرانے طریقوں میں اصلاح کیلئے حکومت کو جو کوشش کرنی چاھئیے تھی وہ نہیں کیگئی ۔ دوسرے ممالک زراعت کو ترقی کیلئے جسطرح سوچتے ھیں اور عمل کرتے ھیں ھندوستان کی حکومت نے ویسا نہیں کیا ۔ ھم اپنی زراعت کی پراڈکٹویٹی نہ بڑھاسکے ۔ ان حالات میں دوسری جنگ کے بعد اجناس کی قیمتوں میں اضافہ کے باوجود کسان کے قرض کا بوجھ ھلکا نہیں ھوا ۔ ایسے ماحول میں حیدرآباد اور ھندوستان میں منی لنڈرس کا

ایک طبقہ پیدا ھوگیا - یہ طبقہ جو ۲۵ سے ۵۰ فیصد تک سود لیتا ھے اسکو روکنے کیلئے حکومت کو سوچنا چاھئے تھا - کوآپریٹیو سوسائٹیز اور قرضہ بنکس قائم کر کے جس طرح کام کیا جانا چاھئیے تھا نہیں کیا گیا - اسکا نتیجہ یہ ھوا کہ سوسائٹی کی خرابیوں کوحکومت محسوس کرتے ھوئے بھی ان منی لینڈرس (Money lenders') کو ختم کرنے پر عملاً حکومت آمادہ نہیں ھے - حالانکہ وہ یہ چاھتی ھے کہ انکو ختم کرے لیکن ختم کرنا ایسا معلوم ھوتا ھے کہ اسکے امکان میں نہیں ھے - وجہ یہ ھے کہ متوازی طریقہ حکومت نے اختیار نہیں کیا ھے - جب تک کوئی متوازی طریقہ اختیار نہ کیا جائے یہ چیز ختم نہیں ھوسکتی کیونکہ ضرورت مند تو بہرحال ان کا متلاشی رھتا ھے - جو کوئی اسکو پیسہ دے وہ اسکے پاس جائیگا چاھے اسکے لئے جو بھی شرائط اسکو منظور کرنے پڑیں - یہاں کوآپریٹیو کے بارے میں بہت کچھ کہا جاتا ھے - اسکو فائیو ایر پلان (Five-Year Plan) میں بھی رکھا گیا ھے - ٹیننسی بل میں بھی کوآپریٹیو بیسس پر دوسرے کاروبار کو چلانے کے بارے میں کہا جاتا رھا ھے لیکن اس چیز کی جانب جیسی توجہ دینی چاھئیے تھی نہیں دیگئی ھے - آج بھی دیہات میں جا کر آپ دیکھئے تو معلوم ھوگا کہ منی لینڈرس کا طبقہ کس طرح غریب کسانوں کا خون چوس رھا ھے - قانون قرض دھندگان کی وجہ سے ممکن ھے کچھ پابندیاں عائد ھوگئی ھوں لیکن وہ قانون بھی تشنہ ھے اور جیسا چاھئیے ضرورت کو پورا نہیں کرتا - اور یہ قانون بھی جو لایا گیا ھے وہ ایسا نہیں ھے کہ کسانوں کو قرض دھندوں سے نجات دلاسکے اس سے تو یہ ھوگا کہ منی لینڈرس زمینات کو ھضم کرجائینگے اور کسان کو کہیں کا بھی نہیں رکھینگے - اور ان واقعات کی تحقیقات کرنا عدالت کے بس کی بات نہیں ھے - نہ ھی یہ کمیٹیوں کے بس میں ھے - بادی النظر میں جو لوگ خلاف ورزی کرتے ھیں وہ اور اکثر منی لینڈرس اب بھی کھلے طور پر عدالت میں نہیں آتے کیونکہ قانون قرض دھندگان کے نفاذ کے بعد انہوں نے اپنے کاروبار کے نہج کو بدل دیا ھے اب وہ دوسرے طریقے سے اپنے کاروبار کررھے ھیں - اپنے دستاویزات میں قرض کا ذکر نہیں کرتے - بلا رجسٹری شدہ بیعنامہ جات مرتب کرلیتے ھیں - یا رھن نامے مرتب کرلیتے ھیں اس قسم کے بیسوں دوسرے طریقے اختیار کر کے انہوں نے ایسے حالات پیدا کرلئے ھیں کہ کسانوں کا طبقہ برباد ھوتا رھے میں سمجھتا ھوں کہ اتنی بربادی پچھلے زمانے میں نہیں ھوئی جتنی کہ اب ھورھی ھے - ھاؤز کے سامنے میں اس چیز کو رکھونگا کہ یہ قانون برباد شدہ کسانوں کی کس حد تک مدد کرسکتا ھے - میں نہیں سمجھتا کہ اس قانون کے نفاذ کے بعد بھی اس قسم کے قرضہ جات کو حکومت ختم کرسکتی ھے جو آج رائج ھیں - تاوقتیکہ حکومت ان کاروبار کو بند کرنے کیلئے خود ھلکے شرح سود پر ضرورت مند کسانوں کو قرضہ دینے کا انتظام نہ کرے محض اس قانون کے لانے سے یہ بند ھونے والی چیز نہیں ھے - ظاہر ھے کہ کسانوں کو زرعی کاروبار کے انجام دینے کیلئے پیسہ کی ضرورت ھوتی ھے - اوسکی ضرورت کو پورا کرنے کا کیا طریقہ ھوسکتا ھے اس پر جب تک ہم غور نکریں مقصد پورا نہیں ھوسکتا - امید ھے کہ موور آف دی

بل اس پر غور کرینگے ۔ اور اس قانون میں سنگینیت پیدا کرنے کی بجائے وہ کسانوں کی بھلائی اور بہبودی کے طریقے اختیار کرینگے ۔ کسانوں کے اشیاء کی قیمتوں پر کنٹرول کرنا بھی ازحد ضروری ہے ۔ یہ وہ مسائل ہیں جن پر ہمدردی کے ساتھ غور کرنا چاہئے ۔ اس قسم کے قرضہ جات کو کم کرنے کیلئے جو تدابیر اختیار کئے جانے چاہئیں وہ اختیار کرنا چاہئے اور اسکے لئے قانون میں جو پراویژنس ہونے چاہئیں وہ اسمیں لانا ضروری ہے ۔

شری کٹہ رام ریڈی (نلگنڈہ ۔ عام) ۔ مسٹر اسپیکر سر ۔ یہ کہا جاسکتا ہے کہ ایک مکمل قانون هاؤز میں لایا گیا ہے لیکن ''موت کے بعد ڈاکٹر'' کا جو مقولہ ہے وہ یہاں صادق آتا ہے ۔ یہ قانون اوس وقت لایا جانا چاہئے تھا جب کہ قرض دھندگان مقروض کسانوں سے اپنے قرضہ کے ضمن میں اراضیات کھینچ لیتے تھے ۔ انکو اراضیات سے بیدخل کر کے خود قابض ہوجاتے تھے ۔ جبکہ یہ کہا جاتا تھا کہ یہ جاگیردارانہ نظام ہے ۔ سنہ ۵۸ ف کے بعد کافی وقت تھا لیکن یہ قانون نہیں لایا گیا ۔ اسکا انتظار کیا گیا ۔ اور لاپروائی برتی گئی ۔ چاہئے تھا کہ اب جو قانون پیش کیا گیا ہے اوسکے نتائج پر آنریبل موور آف دی بل پہلے خود غور کرلیتے ۔ انہیں غور کرنا چاہئے تھا کہ آیا اس کے نفاذ کے بعد حیدر آباد کے اگریکلچرسٹ کو کچھ مدد ملیگی ۔ کچھ رلیف ملیگی یا نہیں ۔ کیونکہ جب اسکو اگریکلچرسٹ رلیف بل کہا جارہا ہے تو اس میں وہ خصوصیت سے دیکھنا چاہئے ۔ ہم ایک طرف تو ڈیٹ رلیف (Debtors' Relief) کرنے کی کوشش کررہے ہیں لیکن ہمارے پاس کوئی کنسٹرکٹیو پروگرام نہیں ہے کہ آیا کسان کو اسکی ضروریات کے وقت کچھ روپیہ بھی فراہم کیا جاسکتا ہے یا نہیں ۔ یہ تو کہدینا بہت آسان ہے کہ ہم نے کسان کے فائدہ کیلئے قانون بنایا ہے لیکن کیا اس میں اسکی واقعی ضرورت کا خیال رکھا گیا ہے کہ کاشتکار کو اسکی ضرورت کے وقت روپیہ مہیا ہوسکے ۔ اسکے متعلق مادھو راؤ کمیٹی نے اپنی رپورٹ میں کہا ہے کہ ایسی سوسائیٹیز ہمارے پاس نہیں ہیں کہ جن سے کم شرح سود پر قرض کسانوں کو مل سکے ۔ دوسری چیز یہ ہے کہ اس وقت جو قانون ہمارے سامنے لایا گیا ہے اس میں کسان کی جو تعریف کی گئی ہے اس کے تعلق سے یہ تعین نہیں کیا گیا ہے کہ کسان کس کو سمجھا جائیگا ۔ کس قدر آمدنی والے کو کسان سمجھا جائیگا ۔ کیا پانچسو روپیہ کمانے والا یعنی جسکی زرعی آمدنی پانچسو روپیہ ہو وہ کسان ہے ۔ کیا ایسے کسان کو وہ فائدہ حاصل ہوگا جو آپ اگریکلچرسٹ کو پہنچانا چاہتے ہیں یا صرف بڑے بڑے زمینداروں کو ہی اس سے فائدہ ہوگا ۔ آج آپ کو ایسی مثال نہیں ملیگی کہ کوئی کاشتکار پندرہ بیس ہزار روپیہ کا قرض دار ہے ۔ کون اس کو اتنا زیادہ قرض دیگا ۔ کو آپریٹیو سوسائیٹیز جب قائم ہوئے اور اس وقت زمینداروں نے اپنی اراضیات کو مکفول کرکے قرض حاصل کیا اوس وقت البتہ دس پندرہ ہزار روپیہ قرض مل جایا کرتاتھا لیکن اون ہی لوگوں کو ملتاتھا جن کا اثر ورسوخ تھا ۔ و یسے ہی لوگوں نے قرضہ حاصل کیا اور ویسے ہی لوگوں نے ادا بھی نہیں کیا ۔ ڈیٹرس رلیف ایکٹ پر غور کرتے وقت اگریکلچرسٹ کی حالت پر بھی غور کرنا چاہئیے کہ

دیہات کا معاشی ڈھانچہ کیسا ہے ۔ کوئی زراعت کرنے والا ہے دو چار ہزار روپیہ رکھنے والا ہے کسی کی حیدرآباد میں بلڈنگ ہے توآیا اس کو آپ زراعت پیشہ کی تعریف میں لینگے یا کیا ؟ اگر حقیقت میں زراعتی کاروبار کرنے والے کے فائدے کے لئے یہ قانون لا رہے ہیں تو اس میں یہ صراحت ہونی چاہیئے کہ آخر آپ اگریکلچرسٹ کس کو سمجھتے ہیں ۔ اگر زراعت پر گزر بسر کرنے والے کو سمجھتے ہیں تو پھر یہ چیز قانون میں آنی چاہیئے ۔ چونکہ یہ بمبئی میں نافذ ہے اس لئے یہاں بھی لائے ہیں چاہے محل سے ہو یا نہو چاہے موقع پر ہو یا نہو تو اور بات ہے ۔ ہمیں دیکھنا چاہیئے کہ یہ موقع و محل کے لحاظ سے صحیح ہے یا نہیں ۔ . . . . . .

شری دیوی سنگھ چوہان ۔ اسی لئے تو آپ کے سامنے پیش کررہے ہیں ۔

شری کٹھ رام ریڈی ۔ اگریکلچرسٹ کی کیا تعریف ہے اور قرضہ کتنا ہو اس کا معیار مقرر کرنا چاہیئے ۔ یہاں اس کا خیال نہیں رکھا گیا ہے ۔ ٹیننسی بل میں تین یا ساڑھے چار فیملی ہولڈر کو بھی کاشتکار قرار دیا گیا ہے ۔ اسی طرح اس میں بھی تعین ہونا چاہیئے کہ آخر کاشتکار کی تعریف میں کس معیار کا کاشتکار داخل ہے ۔ اور اس کو کس حد تک رلیف دیجانی چاہیئے ۔

اس بل میں دوسرا نقص یہ ہے کہ اس ایکٹ کے نفاذ کے تین مہینے کے اندر درخواست پیش ہونی چاہیئے ۔ کیا آج کے ہمارے اسٹیٹ کے حالات کے لحاظ سے ہمارے عوام کے عام معلومات کے لحاظ سے ہم اپنے تجربہ کی بناء پر یہ کہہ سکتے ہیں کہ یہاں کی تعلیمی حالت اس قابل ہے کہ وہ جو احکام نافذ ہوں اون سے فوراً واقفیت حاصل کرلیں ۔ ایسی حالت میں جبکہ نافذہ احکام سے تعلیم یافتہ افراد خود فوری واقف نہیں ہوتے عوام سے جن کی اکثریت غیر تعلیم یافتہ ہے کیسے توقع کی جاسکتی ہے کہ ۔ وہ ان احکام سے فوری واقفیت حاصل کرلیں گے ۔ اس لئے میں کہوں گا کہ یہ ناممکن سی بات ہے ۔ اس طرح اگریکلچرسٹ کو پابند کرنا میں سمجھتا ہوں کہ ایک غلط طریقہ کار ہے ۔ نیز یہ کہ جہاں تک مجھے کوآپریٹیو ڈپارٹمنٹ کے حالات معلوم ہیں ان کی بناء پر میں یہ کہہ سکتا ہوں کہ عوام اس طریقہ کار میں بھی دقت محسوس کرتے ہیں ۔

کوآپریٹیو سوسائیٹیز کی کریڈٹ (Credit) پر عوام کو اعتماد نہیں ہے ۔ سکشن ۳ میں سیو (Save) کرنے کی کوشش کی گئی ہے لیکن سیو کرنے کا کلاز (۲۶-۳۲) دیکھیں تو معلوم ہوگا کہ اگر کوئی ڈیٹر (Debtor) درخواست پیش کرے تو وہ چھوٹ نہیں سکتا ۔ کریڈٹ سوسائیٹیز سے غریب کسان جو رقومات حاصل کیا تھا (خاص طور پر میں تلنگانہ کے تعلق سے کہوں گا) اس میں زیادہ تر رقومات پٹیل اور پٹواریوں نے حاصل کئے ہیں لیکن آج تک ان لوگوں نے ایک حبہ بھی ادا نہیں کیا ۔ اور جن جائداد اونوں کو مکفول کیا گیا تھا وہ بڑی تعداد یعنی روپیہ میں باو آنے

فروخت کردی گئی ہیں۔ سنہ ۵۰ ف کے بعد وہ اس فکر میں ہوئے کہ کوئی موقع آئے تو اپنے اپنے قرضہ کی بابتہ سو کو پچاس اور پچاس کو چالیس ادا کرکے بے باق کرلیں گے ۔ اس میں شک نہیں کہ اگر کوئی اگریکلچرسٹ نادار ہے تو ہم معاف کرسکتے ہیں لیکن ایسے لوگوں کے ذمہ قرضہ باقی رکھا جائے جو استطاعت رکھتے ہیں اور ادا کرسکتے ہیں تو میں کہوں گا کہ اس کے معنی یہ ہوئے کہ کو آپریٹیو سوسائٹیز کا دیوالیہ نکالنا مقصود ہے۔ اگر یہ منظور ہے تو اور بات ہے۔ اس سلسلے میں بنکس کا بھی حوالہ دیا گیا لیکن میں کہوں گا کہ بنکس کا طریقۂ کار دوسرا ہوتا ہے بنکس میں اصل و سود علحدہ علحدہ کالم میں لکھے جاتے ہیں بیس سال میں اصل سے سود بڑھ جاتا ہے ۔ اگر کمپاؤنڈ انٹرسٹ نہ بھی ہو اور سمپل انٹرسٹ ہو تو تیس تا چالیس سال میں اصل سے بہت بڑھ جاتا ہے ۔ اس کو ملحوظ رکھنا چاہیئے کہ اصل سے ڈبل سود نہ ہو ۔ آخر میں یہ رکھا گیا ہے کہ اقساط سے نٹ انکم تیس چالیس فیصد ہوگی ۔

اگریکلچرسٹ کی تعریف اس طرح کئے ہیں کہ جتنے بڑے بڑے زمیندار ہیں وہ اس کے تحت آتے ہیں ۔ اقساط کے متعلق کہا جاتا ہے کہ ۴۰ پرسنٹ ڈسکاؤنٹ ہو تو (۱۲) سال میں ادا کرنا ہوگا ۔ تلنگانہ کی حد تک میں کہوں گا کہ (۷۵) پرسنٹ بنکس دیوالیہ نکالینگے۔ یا موقع دیکھ کر لوگوں کو ڈوبائینگے ۔ اب بھی سو میں سے دس فیصد غریب کاشتکار ہیں اس لئے اس کو ڈپارٹمنٹلی طریقہ پرحل کیا جانا چاہیئے ۔ خاص طور پر کریڈیٹ سوسائٹیز کو ہم کو خاص نظر سے دیکھنا چاہیئے ۔ کلاز (۳۲) اور (۲۶) دیکھنے سے معلوم ہوگا کہ سوسائٹیز اس طرح ہوسکتی ہیں۔ اس پر بھی غور کرنا چاہیئے کہ کسی کاشتکار کی تعریف کا تعین کس طرح کیا جائے ۔ کس قسم کے کاشتکار کو ریلیف دینی چاہیئے۔ اس کا تعین ہو جائے تو اس کے بعد دیکھنا پڑیگا کہ قرضہ کا کیا معیار رکھا جاسکتا ہے ۔ (۱۵) ہزار کا کوئی کاشتکار قرضدار نہیں ہوسکتا بلکہ زمیندار ہی ہوسکتا ہے ۔ اور خصوصاً کو آپریٹیو سوسائٹیز کا جو قرضہ ہے جتنے مختلف ایکٹ میں نے دیکھا ہے ہر نوبت پر کسی نہ کسی طرح پبلک کا پیسہ ڈوبانا چاہتے ہیں۔ میں نے دوتین سال سے دیکھا ہے کوئی کریڈیٹ کی کسی عہدہ دار نے سفارش نہیں کی ۔ نہ ان غریبوں کا سود معاف کیا لیکن بڑے لوگ اپنے حاشیہ کے لوگوں کو لیکر معافی کے لئے آتے ہیں۔ میں کہوں گا کہ یہ بل اس وقت تک کامیاب نہیں ہوسکتا کہ جبتک کہ ضرورت پر کاشتکار کو سستے سود پر وقت پر قرضہ نہ ملے۔ ورنہ آپ کا ایکٹ ایکٹ ہی رہیگا اور وہ لوگ اپنا دھندہ جاری رکھینگے ایک اور چیز جو غور کرنے کی ہے وہ یہ ہے کہ سنہ ۴۳ یا ۴۴ ع سے پہلے بھی کریڈیٹ سوسائٹیز زندہ حیثیت سے تھے کیا آنریبل ممبرس کہہ سکتے ہیں کتنے ایسے منی لینڈرس ہیں جو سالہا سال سے ایک کاشتکار پر قرضہ رکھتے ہوئے آرہے ہیں ۔ اگر حکومت یہ سمجھتی ہے تو وہ میں سمجھتا ہوں کہ وہ غلط فہمی میں ہے ۔ کوئی ساہوکار سنہ ۳۶ ع سے سالواری قرضہ نہیں دے رہا ہے۔ ساہوکار یہ کوشش کرتے ہیں کہ ہرسال قرضہ معہ سود کے وصول کرکے

نیا قرضہ دیا جائے ۔ اس لئے اس ایکٹ کو بناتے وقت منی لینڈرس ایکٹ کو دیکھنا ضروری تھا ۔ جس میں یہ کہا گیا ھے کہ کوئی شخص بغیرلیسنس کے قرضہ دے تو دعویٰ نہیں کرسکیگا ۔ لیکن ھائی کورٹ میں مختلف طور پر مختلف اوقات میں یہ طے کیا گیا کہ دعوی کرتے وقت اگراوس کے پاس لیسنس رھے تو دعوی ھوسکتا ھے ۔ سنہ ۱۹۴۹ع میں قانون قرض دھندگان نافذ ھوا اور منی لینڈرس بزنس کا پروفیشن ختم ھوگیا اور اوسط طبقہ کے اثرات و رسوخ کے تحت ھی قرضہ دیا جاتا ھے ۔ اور پھرادائی نہیں ھوتی ھے تو بیل یا اناج وغیرہ لیاجاتا ھے ۔ پریکٹیکللی اس ایکٹ کے نافذ ھونے کے بعد اکچوللی کاشتکار کو کوئی ریلیف نہیں مل سکتی ۔ اگر ریلیف ملیگی تو جھگڑا ھوگا اور غریب لوگوں کی حدتک ایک دو کا فرق رھیگا ۔ آج کل دیھاتوں میں حالت ایسی ھے کہ ھر منی لینڈر غریب کاشتکار کو قرضہ نہیں دیتا سونا وغیرہ لیکر قرضہ دیتا ھے ۔ یا اوسط درجہ کے کاشتکار جن کے پاس سرپلس غلہ ھو اون کو دیتا ھے ۔ اس لئے اس ایکٹ کے نافذ ھونے کے بعد معمولی طبقات میں کشمکش ھوگی ۔ ھم اس کو کس طرح سے دور کر سکتے ھیں اس پر غور کرنا چاھیئے ۔ ایک اور چیز ھے خصوصاً اس ایکٹ میں پلیڈرس کو ممنوع کیا گیا ھے میرا مقصد یہ نہیں کہ وکیلوں کو اس سے بہت فائدہ ھوتا ھے ۔ یہ بات نہیں ۔ آج کل کے اسٹرکچر کے لحاظ سے دیکھنا چاھیئے ۔ اگر حکومت یہ سمجھتی ھے کہ ھر کاشتکار نمونہ کا فارم بھر کر درخواست دیدے تو کافی ھوگا اس سنس میں دیکھنا میں سمجھتا ھوں غلط ھے ۔ یہاں جو رسٹرکشنس عائد کئے گئے ھیں کہ پلیڈرس کو الاؤ نہیں کیا جائیگا وہ غلط ھے ۔ کیونکہ خود بعض وکلا صاحبان کو قانون سمجھنے میں بعض وقت دشواری ھوتی ھے چنانچہ دفعہ (۱۱) کے متعلق کہا گیا وہ پیچیدہ ھے تو پھر غریب کاشتکار قانون کو کیسے سمجھینگے ۔ اس کے لئے البتہ یہ پروویژن رکھا گیا ھے "اگر افسر اجازت دے تو . . . . وغیرہ ۔ اس کا مطلب یہ ھوگا ھر چیز میں چاپلوسی کرنا پڑیگا کہ درخواست کر کے یہ کیا جاسکیگا ۔ یہ رسٹرکشن رکھنے سے مجھے یہ خدشہ ھے کہ آیا اس ایکٹ کو کوئی انٹیلیجنشیا آج سمجھ سکیگا ۔ مجھے تو یہ تشویش ھورھی ھے کہ جو لوگ ھزاروں روپیہ ڈوباتے ھیں اون کے لئے ھی یہ قانون بنایا گیا ھے ۔

مسٹر ڈپٹی اسپیکر ۔ کیا آپ اور وقت لینگے ؟

شری کشٹہ رام ریڈی ۔ میں تھوڑا سا وقت اور لونگا ۔

We now adjourn till 5-10 p.m.

مسٹر ڈپٹی اسپیکر ۔ تو پھر ھم اب اڈجرن کر کے ۵-۱۰ کو ملینگے ۔

The House then adjourned for recess till Ten Minutes past Five of the Clock.

The House re-assembled after recess at Ten Minutes Past Five of the Clock.

[*Mr. Speaker in the Chair*]

Motion for Grant of 1 Crore Rupees

Mr. Speaker : Dr. Melkote.

The Minister for Finance and Statistics (*Dr. G. S. Melkote*) : Sir, I beg to move:

"That a sum not exceeding I.G. Rs. 1 crore be granted to the Rajpramukh to be transferred from the Consolidated Fund of the State to the Contingency Fund during the year ending 31st March, 1953, in pursuance of the Hyderabad Contingency Fund Act, 1952. The Demand has the recommendation of the Rajpramukh."

Mr. Speaker : Motion moved. We shall take it up for discussion at some other day.

L. A. Bill No. XV of 1953, the Hyderabad Agricultural Debtors' Relief Bill

Mr. Speaker : I want to know whether the First reading of the Hyderabad Agricultural Debtors Relief Bill can be completed today or not, because today......

بات یہ ہے کہ ہاف این اور ڈیبیٹ (Half an hour debate) ہوگی - اورساڑھے سات بجے سے اس کو لیا جائیگا - ایسی صورت میں ہاؤس سے یہ دریافت کرنا چاہتا ہوں کہ آیا اس کی فسٹ ریڈنگ آج ہم ختم کرلیں یا کیا - اگر ختم کرلیں تو پھر مجھے اسی طریقہ سے ریگولیٹ (Regulate) کرنا پڑیگا - یا اگر ہاؤس کی خواہش آج کی بجائے کل اس کو ختم کرنے کی ہوتو کل آفٹرنون (Afternoon) یعنی اس وقت تک یا اس کے بعد بھی رکھا جاسکتا ہے اور اسی لحاظ سے ٹائم ریگولیٹ (Regulate) کیا جاسکتا ہے -

شری کشٹ رام ریڈی - یہ ایک مکمل بل ہے اور بہت امپارٹنٹ بل (Important Bill) ہے - اس کی فسٹ ریڈنگ ادھورے طریقہ سے ختم کرنا مناسب نہ ہوگا - اس لئے کل شام تک ......

شری وی ۔ ڈی ۔ دیشپانڈے ۔ میرا بھی یہی کہنا ہے کہ اس بل کی فسٹ ریڈنگ پر کافی ڈسکشن ہونا مناسب ہوگا ۔ کل اس کی فسٹ ریڈنگ ختم ہوسکتی ہے ۔

مسٹر اسپیکر ۔ مگر کل کب تک ؟ کیا کل شام تک ہم اس کو رکھیں ۔ میں یہ نہیں چاہتا کہ اگریکلچرل ڈیٹرس بل پر ڈسکشن نہ ہو لیکن ڈسکشن کو آخر کہیں نہ کہیں ختم کرنا پڑتا ہے ۔ اگر ہاؤس کی خواہش ہو تو کل شام کے آٹھ بجے تک اس کو کنٹینو (Continue) کرینگے ۔ اور اسی طریقہ سے تصفیہ کیا جائیگا ۔ یا یہ بھی ہوسکتا ہے کہ بزنس کمیٹی (Business Committee) بلا لیں اور اس کا تصفیہ کرلیں ۔ خیر آج تو ہم اس کو ختم نہیں کریں گے ۔

شری وی ۔ ڈی ۔ دیشپانڈے ۔ ٹینٹیٹیولی (Tentatively) ہم کرسکتے ہیں یا اگر بزنس کمیٹی بلا رہے ہیں تو ....

مسٹر اسپیکر ۔ آج ساڑھے سات بجے تک فسٹ ریڈنگ جاری رکھی جائیگی اور اس کے بعد ہاف این اور ڈیبٹ (Half an hour debate) ہوگی ۔

شری کٹھ رام ریڈی ۔ اس بل میں بعض قرضہ جات کو پریفرنس (Preference) دیا گیا ہے ۔ اس میں سیزنل فینانس (Seasonal finance) کی جو تعریف کی گئی ہے اس کو دیکھنا ضروری ہے ۔ سیزنل فینانس کس قسم کے ہیں یہ دیکھنا چاہیئے ۔ ریزرو بنک آف انڈیا جو سیزنل فینانس ہیں ایک سال میں ادائی کے لئے اگریکلچرل آپریشنس کے لئے دئے جاتے ہیں ۔ اور جب کسی انڈیویجول کاشتکار کو سیزنل طورپر دیتے ہیں اس کے متعلق جانچ کرلی جاتی ہے خصوصاً موسمی حالات کے لحاظ سے کاشتکار جو رقم حاصل کرتا ہے اوس میں انٹرسٹ غلہ کی صورت میں زیادہ لیتے ہیں ۔ اس میں سیزنل فینانس کی یہ تعریف کی گئی ہے وہ قرضہ جو سیزن کے لئے دیا جائے ۔ لیکن ہم کو اس پر غور کرنا چاہیئے کہ جو پیداوار وہ پیدا کرتا ہے اور جو خرچہ کرتا ہے اس میں ہرسال اس کو بھرتی کرنا پڑتا ہے ۔ اس واسطے سیزنل فینانس جو ریزرو بنک آف انڈیا کے ہیں وہ بہت کم سود پر دئے جاتے ہیں یہاں جو سیزنل فینانس کی تعریف کی گئی ہے وہ ریزرو بنک آف انڈیا کی تعریف کی طرح نہیں بلکہ شیڈولڈ بنکس لکھا گیا ہے کلاز (۳) اور سب کلاز (۷) میں جو لکھا گیا ہے میں سمجھتا ہوں وہ ریزرو بنک آف انڈیا کی تعریف کے مطابق ہونا چاہیئے ۔ اس واسطے ہم کو اس کی جانچ کرنا ضروری ہے ۔ سنہ ۴۹ ع میں مادھوراؤ اگریرین ریفارمس کمیٹی نے بتایا تھا کہ پرھیڈ (۳۰) ہے یا پر فیملی (۹۰) ہے اس لحاظ سے بھی ہم کو دیکھنا چاہیئے ۔ اس کے علاوہ موجودہ حالات میں مارکٹ ویالیو کے لحاظ سے جبکہ قیمتیں بڑھ گئی ہیں اور ممکن ہے کہ اور بھی آگے بڑھیں یہ دیکھنا چاہیئے کہ کیا ہم اس کو یہیں بنا سکتے ہیں ۔ یا اس کو بڑھ سکتے ہیں یا اضافہ کرسکتے ہیں ۔ اس پر غور کرنے کے بعد ہی ہم اگریکلچرسٹ کی صحیح خدمت کرسکتے ہیں یا اوس کی صحیح

ضروریات کی تکمیل کر سکے ہیں۔ ورنہ موجودہ تعریف کے لحاظ سے ہمارے اوسط درجہ کے کاشتکاروں کو اس کا فائدہ نہیں ہوگا ۔ ایک اور چیز جو مجھے کہنا ہے وہ یہ ہے کہ موجودہ اڈمنسٹریشن کے لحاظ سے سیزنل فینانسس جو ریزروبنک آف انڈیا سے ملتے ہیں اون کے کاشتکار کے ہاتھ میں آنے کی گنجائش نہیں نظر آتی ۔ اس کا ثبوت یہ ہے کہ کو آپریٹیو سوسائٹیز جو رقومات دیتی ہیں وہ درخواست دینے کے دو مہینے کے بعد ملتی ہیں۔ یہ سیزنل فینانس نہیں ہیں۔ جب ضرورت ہو تب اوس کو ملنا چاہیئے ۔ جب وقت پر رقم نہیں ملتی تو کاشتکار مجبور ہوجاتا ہے کہ دوسروں کے پاس ہاتھ پھیلائے ۔ اور زیادہ انٹرسٹ ادا کرے ۔

اگر اس بل کے مقصد کو کامیاب بنانا ہے ۔ اور ہم اس کو اسی وقت کامیاب کہہ سکتے ہیں ۔ جبکہ کاشتکاروں کے لئے بروقت فراہمی رقم کا معقول اور مناسب انتظام کیا جائے ۔ ورنہ جیسا کہ چیف منسٹر صاحب نے فرمایا کہ ہمارے پاس بہت سے بیکار ہتیار بھی رہتے ہیں ویسا ہی یہ قانون بھی بیکار ہتیار کی طرح پڑا رہے گا ۔ جیسا کہ میں نے تشویش ظاہر کی ہے اس ایکٹ کا اثر جلد ہی کریڈٹ سوسائٹیز پر پڑنے والا ہے۔اس پر آنریبل ممبر س خاص توجہ دیں تو مناسب ہے۔ ورنہ یہ ہوگا کہ آج کل کے حالات کے لحاظ سے سنٹرل بینکس اور کریڈٹ سوسائٹیز بھی اس ضرورت کی تکمیل نہیں کرسکتیں ۔ اس کی وجہ یہ ہے کہ یہ چیز پہلے سے بڑے بڑے زمینداروں کے ہاتھ میں تھی ۔ آج ہوتا یہ ہے کہ سکوست تعلقدار کو لکھتی ہے۔ تعلقدار تحصیلدار کو لکھتا ہے وغیرہ وغیرہ لیکن نتیجہ کچھ نہیں نکلتا ۔ اس طرح پندرہ بیس سال گزر جاتے ہیں ۔ ہمارے پاس ایسی مثالیں موجود ہیں کہ کریڈٹ سوسائٹیز سے لیا گیا تھا ۔ اس کے بعد زمینات فروخت کردی گئیں لیکن سوسائٹیز کا بقایا ادا نہ کیا گیا ۔

آج ہم یہ بل کاشتکاروں کے فائدے کے لئے بنا رہے ہیں تو اس میں انڈیویجول کی بجائے سیزنل (Seasonal) کی تعریف ہونی چاہیئے۔ اس بل کا اصل مقصد ومنشا صرف یہ ہے کہ اگریکلچرسٹ کس کو کہنا چاہیئے اور ریلیف کس شخص کو دیا جانا چاہیئے ۔ اس کے سوا کوئی اور چیز نہیں ہے۔ میں نے یہ بات پہلے ہی کہی ہے کہ یہ تصور نہ کرنا چاہیئے کہ اس بل سے بہت زیادہ فائدہ ہونے والا ہے کیونکہ وہ وقت گزر چکا ہے ۔ کوئی ساہوکار اگر قرض دیتا ہے تو وہ کھاتہ پر جائداد وغیرہ دیکھکر ہی دیتا ہے ۔ غریب کاشتکار جس کی کوئی جائداد نہیں ہوتی اسے قرض بھی نہیں مل سکتا ۔ اس لئے میرا یہ سجیشن ہے کہ اگریکلچرسٹ کی تعریف میں ایوریج انکم والے کو بھی شریک کرنا چاہیئے جس طرح کہ مادھوراؤ کمیٹی رپورٹ میں بتلایا گیا ہے۔ ہمارا بھی یہ تجربہ ہے کہ ڈیڑھ دو ہزار روپیہ سالانہ جو شخص کماتا ہے اس کو سالانہ ایک سو روپیہ آمدنی والے کے مقابلہ میں زیادہ قرض ملتا ہے ۔ یہ نہیں ہوسکتا کہ ایک سو روپیہ والے کو بھی اتنا ہی قرضہ ملتا ہے یہ تو ایک ہنسی کی بات ہوگی ۔ یہ ایک بے معنی چیز ہوگی کیونکہ قرضہ دینے والا بھی اس کی حیثیت ۔ اس کی آمدنی ۔ اس کی جائداد وغیرہ دیکھکر ہی دیتا ہے ۔ اس لئے اگر اگریکلچرسٹ کو زیادہ سے زیادہ ریلیف دینا ہے اور کسی اور کو فائدہ پہنچانا نہیں ہے تو یہ

امونٹ تین ہزار سے نہ بڑھنا چاہئیے - اگر ایک سو روپیہ آمدنی والوں کا حساب لگایا جائے تو میں سمجھتا ہوں کہ ۹۰ فیصد ایسے ہیں جو دوسو - تین سو - چار سو - پانچ سو تک آتے ہیں - اس لئے جو میکزیمم یہاں رکھا گیا ہے وہ غیر مدبرانہ ہے کیونکہ اس سے سرمایہ‌داروں کی مدد ہوگی - لہذا اگر اس ایکٹ کا مقصد غریب کاشتکار کو کریڈٹ فسیلٹیز دینا ہےجو دوسوتا پانسو کے اندر ہوں تو انہیں ریلیف دیا جاسکتا ہے ورنہ بصورت دیگر اس سےمضر اثرات پڑنے والے ہیں جن کی وجہ سے ہم کریڈٹ سوسائٹیز نہیں چلاسکتے -

یہ چند الفاظ کہتے ہوئے میں آنریبل ممبران سے درخواست کرتاہوں کہ وہ اس بل پر کاشتکار کے نقطۂ نظر سے غور کریں - سرمایہ دار یا لینڈلارڈ کے نقطۂ نظر سےغور نہ کریں ورنہ اس عوامی حکومت کا اس بل کے متعلق جو تاثر ہے وہ ختم ہوجاتا ہے -

श्री. रुखमाजी घोंडीबा पाटील (अष्टी) :—मिस्टर स्पीकर सर, शेतकऱ्याचे कर्जामुळे होणारे नुकसान रोकण्यासाठीं आणि त्याचे जीवन सुधारण्यासाठी हे जे बिल आपल्या समोर आणले गेले आहे त्याचे मी मनःपूर्वक स्वागत करतो.

श्री. के. रामरेड्डी :—उर्दू में बोलिये ।

श्री. रुखमाजी घोंडीबा पाटील :—पूर्वी हिंदुस्थानांत अिंग्रज येण्याच्या सुमारास आणि ते येण्याच्या अगोदर सुद्धां सावकाराच्या पंजात सांपडलेल्या शेतकऱ्यांनीं या सावकारीच्या विरुद्ध आवाज अुठविलेला होता. अुदाहरणच द्यावयाचे झाल्यास त्या काळांतील "रोखे फाडी चळवळीचे" घेतां येअील. त्या वेळी ही चळवळ प्रत्येक खेड्यापर्यंत पोंचली होती व सावकारांचे कर्ज नष्ट करण्यासंबंधीं सरकारला विनंती करण्याचा कार्यक्रम शेतकऱ्यांनीं हातीं घेतला होता. पण त्या वेळी अिंग्रज सरकारने ही चळवळ दडपून टाकली.

परंतु ही शेतकऱ्यांची चळवळ येथेच थांबली नाहीं तर त्यानंतरहि सावकारीविरुद्ध आवाज निघत राहिला, आणि परिणामस्वरूप "शेतकरी कर्ज विमोचन" या नांवाचा कायदा तयार झाला. त्यांत अेक कलम १५–ब सावकारांच्या कमी फायद्याच्या दृष्टीने ठेवण्यांत आले होते. हा शेतकरी कर्ज विमोचन कायदा आमच्या हैदराबाद स्टेटमध्ये नव्हता. याचा परिणाम असा झाला कीं अिंग्रजी राज्यांत राहणारे कांही सावकार हैदराबाद स्टेटमध्ये आले व सावकारी करूं लागले. व शेतकऱ्यांकडून खरेदी खत, गहाण खत वगैरे करून घेवून त्यांनी त्यांच्या जमीनी लुबाडल्या व ते मोठमोठे जमीनदार झाले.

ह्या सावकारीमुळे ते सावकार जमीनदार झाले व त्यांच्या जवळ मोठमोठ्या रकमाहि शिल्लक पडल्या. हे सर्व त्यानी गरीब शेतकऱ्यांच्या कष्टावर केले आहे, म्हणून मला सरकारला अशी विनंती करावयाची आहे कीं, ज्या शेतकऱ्यांच्या जमीनी खरेदी खतामुळे किंवा गहाणखता मुळे सावकारांच्या ताब्यांत गेल्या असतील त्यांच्या जमीनी या कायद्यान्वये त्यांना परत मिळाव्या. तेव्हां या बिलामध्ये अशी प्रोव्हिजन (Provision) करावयास पाहिजे कीं २५ वर्षापूर्वी ज्या शेतकऱ्यांच्या जमीनी सावकाराच्या घरांत गेल्या त्यावर फेरविचार करण्याचा अधिकार ट्रिब्यूनल (Tribunal) ला असावा आणि अशा रीतीनें या बिलाला येणाऱ्या सुधारणा

स्वीकारून किंवा सिलेक्ट कमेटी (Select Committee) कडे पाठवून, शेतकऱ्यांच्या दृष्टीने जास्तीत जास्त उपयुक्त बनवावे अशी माझी विनंती आहे.

आज सावकारीविरुद्ध देशामध्यें कम्युनिस्ट, सोशलिस्ट, कॉंग्रेस वगैरे पक्ष चळवळ करीत आहेत ते चांगलेच आहे, पण सरकारनेहि शेतकऱ्यांसाठीं निरनिराळे चांगले कायदे करून त्यांना फायदा पोचविला पाहिजे. मला पुन्हा असे सांगावयाचे आहे कीं गहाण खत किंवा त्यावरून खरेदी खत करून ज्यांच्या जमीनी घेतल्या आहेत, त्या त्यांना परत मिळण्याची, या कायद्याने सोय केली पाहिजे.

तेव्हां माझी ऑनरेबल मुव्हर साहेबांना अशी विनंती आहे की, त्यांनी हा कायदा जास्तीत जास्त शेतकऱ्यांच्या फायद्याचा करावा आणि शेतकऱ्याला योग्य न्याय मिळेल अशा यांत सुधारणा कराव्यात. त्यांनी हे बिल आणल्याबद्दल त्यांना धन्यवाद देऊन मी आपले भाषण संपवितो।

شری گوپال راؤ (باکهال) - مسٹر اسپیکر سر - جو قانون ایوان کے سامنے آیا ہے وہ زرعی قرضہ جات کو کم کرنے کیلئے لایا گیا ہے - اب ایوان کو یہ دیکھنا ہے کہ آیا اس سے ہماری موجودہ ضروریات پوری ہوسکتی ہیں یا نہیں - اسکے علاوہ ساہوکاروں کو جو متی (سود) دیجاتی ہے وہ کتنی دیجاسکتی ہے یا کاشتکار کہاں تک دے سکتے ہیں یا ہم اس سے کہاں تک دلاسکتے ہیں یہ بھی اس سلسلہ میں دیکھنا ہے - ابھی آنریبل منسٹر فرمارہے تھے کہ بھروچہ رپورٹ کے مطابق نود (۹۰) کروڑ کا زرعی قرضہ ہے - اور آئینگار رپورٹ کے مطابق لگ بھگ ڈیڑہ سو (۱۵۰) کروڑ کا حیدرآباد میں قرضہ ہے - گویا دوسرے معنوں میں یہ رقم حیدرآباد کے تین سال کے بجٹ کے برابر ہوتی ہے - اگر تین سال تک ساہوکاروں کی ادائی اس رقم سے کیجائے تو اس صورت میں قرضہ جات پورے طور پر ادا ہوسکتے ہیں - چونکہ یہ کاشتکار کا معاملہ ہے اسلئے مالگزاری کے حساب سے دیکھیں تو معلوم ہوگا کہ یہ ۳۸ سال کے زر مالگزاری کی آمدنی کے برابر ہے - گویا جو قانون ایوان کے سامنے ہے اس میں یہ دیکھنا ہے کہ ۱۵۰ کروڑ روپیہ کا قرض کسطرح ادا کیا جانا چاہئیے - اسمیں کتنی کمی کرنی چاہئیے یا آیا وہ پورا ادا ہو بھی سکتا ہے یا نہیں -

اس قانون میں کوئی نمایاں فرق نہیں ہے اور اگر میں یہ کہوں تو بیجا نہوگا کہ سوائے چند تعریفات کے بمبئی ایکٹ کی نقل کر کے بل کی شکل میں اسکو ایوان میں پیش کیا گیا ہے - بمبئی میں یہ ایکٹ پاس ہو کر چھ سال کا عرصہ ہوتا ہے - بمبئی کے کاشتکاروں کو اس سے کتنا ریلیف ملا ہے اس پر دھیان دینا ہے - اور اگر حیدرآباد میں ڈیڑھ سو کروڑ کا قرضہ ہے تو ریاست بمبئی میں ۳۰۰ کروڑ کا قرضہ ہوسکتا ہے - اس قانون کے ذریعہ بمبئی اسٹیٹ میں اس قرضہ میں کتنی کمی ہوئی ہے یا اور یہاں اسمیں کتنی کمی ہوسکتی ہے یہ دیکھنا ہے - اسکے اسٹاٹسٹکس اپنے پاس نہیں ہیں - حیدرآباد میں جتنا قرضہ ہے اسکے بھی کوئی اسٹاٹسٹکس نہیں ہیں - یہ اندازہ ہے کہ ڈیڑھ سو کروڑ روپیہ کا قرض ہے - اس سے یہ جو ڈیڑھ سو کروڑ قرض کاشتکار دنیا ہے اس میں اصل کتنا ہے اور سود

کتنا ہے یہ معلوم کرنا مشکل ہے - یہ اندازہ کیا جاسکتا ہے کہ کم سے کم اصل سے سود ۱۰ - یا ۱۰ گنا زیادہ ہوسکتا ہے - یعنی اس ڈیڑھ سو کروڑ میں زیادہ سے زیادہ ۲۰ کروڑ اصل ہوسکتا ہے جسکی متی اب تک اتنی ہوگئی ہے - میرا یہ اندازہ ہے آنریبل منسٹر اسکی توضیح کریں تو مناسب ہے - میرے پاس کے اعداد و شمار کے لحاظ سے اس بل کے دفعہ ۲۰ کے تحت جو کمی کی کوشش کیگئی ہے میں اسکی وضاحت کرتا ہوں اس قانون میں دو چیزیں ہیں - ایک تو اصل کتنا ہوگا - دوسرے سود کتنا ہوگا - کیا ڈیڑھ سو کروڑ حیدرآباد کے کاشتکار دے سکتے ہیں - اس میں کتنا معاف کرنا چاہئے - دوسری چیز یہ کہ ایک ساہوکار قرضہ دیتا ہے تو اسکو کتنی متی دینا چاہیئے - اصل سے دوگنی - تگنی یا چوگنی - دراصل یہ طئے کرنا ہے - ایک زمانہ سے عوامی اداروں کا یہ مطالبہ رہا ہے کہ کاشتکار کا پرانا قرض معاف کیا جائے - لیکن اس قانون کے تحت بھی وہ مطالبہ پورا نہیں ہورہا ہے - اس قانون کے لحاظ سے سنہ ۱۹۱۰ع کے پہلے کے حسابات جوں کے توں رہینگے - ان پر اندھا دھند عمل ہوگا - گویا اسطرح عوام کا جو مطالبہ رہا کہ پرانا قرض معاف ہونا چاہئے اسکے لئے ۱۹۰۰ یا ۱۹۱۰ یا ۱۹۲۰ع کوئی سنہ مقرر کیا جاکر معافی کا تعین نہیں کیا گیا ہے - اگر حساب لگایا جائے تو معلوم ہوگا کہ سنہ ۱۹۱۰ع سے ۱۹۵۳ع تک کتنی متی ہوتی ہے - تفصیلات تو نہیں بتلاتا اسلئے کہ آئندہ اسکا موقع ہے لیکن مثال کے طور پر عرض کرونگا کہ یہ مدت ۳۸ سال کی ہوتی ہے - منی لنیڈرس ایکٹ سنہ ۱۹۳۹ع میں آیا اس سے پہلے ۱۲ سے ۱۸ فیصد تک سود کی شرح تھی اور یہ قانون آنے کے بعد شرح پر ۱۲ اور ۹ فیصد کی پابندی لگائی گئی - دیہاتوں میں تو ساہوکار ڈھائی تین روپیے متی رکھتا ہے - اب حساب لگائیے سنہ ۱۹۱۰ع میں ایک شخص ۱۰۰ روپیے قرض لیتا ہے - ۱۹۱۰ سے ۱۹۳۹ع تک ۲۹ سال میں بحساب ۱۸٪ جو منی لینڈرس ایکٹ کے تحت جائز ہے - ۴۳۲ روپیے متی ہوتی ہے - ۱۹۳۹ع سے ۱۹۵۳ع تک ۱۴ سال کے لئے بحساب ۱۰٪ ۱۴۸ روپیے متی ہوتی ہے - اسطرح جملہ (۵۸۰) روپیے صرف متی کے ہوتے ہیں - اس ایکٹ کے تحت یہ رقم ادا کرنی پڑیگی - اور پھر کاشتکار سالانہ کم ازکم ۱۵ روپیے اسکی بابتہ ہر سال ادا کرتا رہتا ہے - جس سے ۵۷۰ روپیے ادا ہوجاتے ہیں - یعنی ۱۰۰ روپیے اصل کے بابت ۵۷۰ روپیے ۳۸ سال میں متی میں ادا ہوگئے - اس کے بعد بھی ۱۰۰ روپیے اصل باقی رهتا ہے - پھر بھی ۱۰ روپیے متی میں باقی رهجاتے ہیں - اس قانون میں یہ بتلایا گیا ہے کہ ۴۰ فیصد کی کمی کیجائیگی - یعنی ۴۰ روپیے اصل میں اور ۴ روپیے متی میں کم ہونگے اسطرح جملہ ۶۳۶ روپیے اصل اور سود دینا پڑیگا - اگر وہ ۱۰ روپیے ہر سال دیتا رہا ہوتو کچھ اور کمی ہوگی - گویا اگر کوئی شخص ۳۰-۴۰ سال قبل ۱۰۰ روپیے قرض لیا ہوتو اس کو ۶۳۰ روپیے یعنی اصل کا چھ ساڑھے چھ گونا لینے کی اجازت اس قانون کے لحاظ سے دیجارہی ہے - یہ بتایا تو گیا ہے کہ ۴۰ فیصد کی کمی کیجائیگی - لیکن اس کمی کے باوجود ۱۰۰ کے ۵۰۰ دینا پڑتا ہے - کیا آج کے حالات میں حیدرآباد کا کسان اس قدر بوجھ برداشت کرنے کی سکت رکھتا ہے - اگر پرانے حساب سے بھی دیکھا جائے

تو نقد کے قرض کو دو گنے پر اور غلے کے قرض کو تگنے پر بے باق سمجھا جاتا تھا - لیکن اس قانون میں تو وہ بھی نہیں رکھا گیا ہے - ایک جگہ یہ بتلایا گیا ہے کہ سود اصل سے زائد ہوجائے تو اس میں کمی ہوگی - لیکن یہ چالو کھاتے کیلئے ہے - پرانے قرض کے لئے نہیں ہے - اور عموماً کم سے کم تین سال میں رجوع مقابلہ ہوتا ہے - اس وقت تک ساھوکار کو جو کچھ بھی پہنچتا ہے وہ مدّی میں شمار ہوتا ہے - اصل میں شمار نہیں ہوتا - ایسے حالات میں کیا یہ قانون عوام کے مطالبات کو پورا کرتا ہے - جہاں تک میرا خیال ہے کہ اس قانون سے کاشتکاروں کو کوئی فائدہ نہیں پہنچ سکتا - اس میں یہ صاف طور پر رکھا جانا چاہئے تھا کہ سود چاہئے کتنے ہی عرصہ کا ہو ۱۰ سال کا ہو یا ۱۵ سال کا ہو کسی صورت میں بھی اصل سے نہ بڑھ سکیگا - پرانے اصول کے لحاظ سے بھی ڈبل پر ختم کیا جاسکتا ہے - آنریبل منسٹر اس پر غور کریں تو مناسب ہے - اس میں شک نہیں کہ یہ پہلے کے قانون سے زیادہ پراگریسیو (Progressive) ہے - لیکن بمبئی میں اس ایکٹ پر عمل کرنے کا جو تجربہ ہے اگر اسکو سامنے رکھا جاتا تو مناسب ہوتا -

اس قانون کے دفعہ (۵) میں یہ بھی رکھا گیا ہے کہ قرضدار اپنا قرضہ جن جن ساھوکاروں سے جتنی مدت جس شرح اور جس طریقہ سے ہے وہ مقررہ طریقہ پر عدالت کے سامنے پیش کردے - یہ امر مسلمہ ہے کہ ہمارے پاس کا کاشتکار انپڑھ ہے - ظاہر ہے کہ وہ حکومت کا پر اسکرائیبڈ فارم (Prescribed form) جو عموماً ۳۲-۳۸ یا ۵۵ خانوں کا ایک نمونہ ہوتا ہے کسطرح سمجھکر پر کرسکیگا - اسکو یہ بتلانا پڑیگا کہ اس نے کونسی تاریخ پر کس ساھوکار سے قرض حاصل کیا تھا - اور کتنا ادا کیا - کیسے ادا کیا - وغیرہ - اگر اتفاقاً وہ اپنے اس رٹن اسٹیٹمنٹ (Written statement) میں کسی اندراج میں کوئی چیز بھول جائے اور اس سے کوئی سہو ہوجائے تو اس کو سزا دیجائیگی اور قانون کے تحت اس کو جو رعایت ملنے والی تھی اس میں کمی ہوجائیگی - آنریبل منسٹر سے میں یہ کہونگا کہ کسان کی جہالت کے مدنظر کسان کا یہ بتلادینا کافی سمجھا جانا چاہئے کہ اس نے کس سے قرض حاصل کیا ہے - کیونکہ دفعہ (۵) کے تحت یہ بھی ہے کہ سب ساھوکار اپنے قرضدار کے جملہ حسابات عدالت میں داخل کریں - اور اسکی ایک کاپی مقروض کو بھی دیں - بمبئی میں مقروض پر یہ شرط کس لحاظ سے رکھی گئی ہے معلوم نہیں - لیکن ہمارا یہ کام نہیں ہے کہ وہاں جیسا ہے اسکو بالکل اسی طرح قبول کرلیں -

ایک اور چیز یہ ہے کہ آسامی کے دیوالیہ کی نوبت آتی ہے تو ایسی صورت میں بھی گورنمنٹ کو یہ فکس (fix) کرنا چاہئے کہ وہ کاشتکار کو کتنی زمین چھوڑے - پہلے ایکٹ میں یہ ہے کہ ۵۰ روپیے کی اراضی رکھے - اب یہ بتانا ضروری تھا کہ ٹیننسی ایکٹ کے تحت ایک فیملی ہولڈنگ یا ھاف فیملی ہولڈنگ یا ۵۰ روپیے زر مالگزاری ادا کرنے کے قابل زمین کاشتکار کے پاس چھوڑی جائے - گورنمنٹ اسکا حساب کتاب کر کے

وقتاً فوقتاً ترمیم کرسکتی ہے ۔ عدالت کی رہنمائی کیلئے یہ کرسکتے ہیں کہ ایک فیملی ہولڈنگ چھوڑ کر باقی لے سکتے ہیں ۔ اس میں شک نہیں کہ اس قانون سے بہت سے عوام اور قرضداروں کو مدد ملیگی ۔ لیکن جو بنیادی چیزیں میں نے ھاؤز کے سامنے رکھی ہیں انہیں پیش نظر رکھنا ضروری ہے تاکہ اس سے پورا پورا فائدہ حاصل ہو ۔ مجھے امید ہے کہ آنریبل منسٹر اس پر توجہ کرینگے ۔ اور اس طرح کسانوں کی کچھ مدد ہوسکیگی ۔

श्री. लिबाजी मुक्ताजी पानसंबळ (माजलगांव) :—अध्यक्ष महाराज, आज जो कायदा विचाराकरिता आला आहे तो म्हणजे "शेतकरी कर्ज निवारण बिल" हा होय. वास्तविक पाहता कूळ वहिवाट कायदा जो आहे त्यापूर्वीच हा कायदा यावयाला पाहिजे होता कारण त्या कायद्यापेक्षा याचे महत्व अधिक आहे. या कायद्याचे महत्व ठरवितांना आपण हे पाहिले पाहिजे कीं, आपणास कूळ वहिवाट कायदा कां करावा लागला ? याला कारण अेकच आहे आणि ते म्हणजे अेकाच व्यक्तीजवळ अधिक जमीन अेकत्रित होणें. शिवाय शेतीचे अुत्पादन वाढावे हाही त्याचा अुद्देश आहेच. आणि याकरिता शेतकऱ्याला जमीनीचा मालक बनविण्याचा प्रयत्न त्या कायद्यांत केला गेला. तेव्हां या कायद्याला महत्व असण्याचे कारण म्हणजे हा कायदा शेतकऱ्यांचे कर्जबाजारीपण नष्ट करतो. कर्जबाजारीपणामुळे शेतकरी शेतीचे अुत्पादन बरोबर करूं शकत नाहीं हे आज निर्विवाद सिद्ध झाले आहे. शेतकरी कर्जबाजारी असल्यामुळे तो शेतीला बरोबर पैसे लावू शकत नाहीं, त्यामुळे शेतीचे अुत्पादन वाढत नाहीं अशी ह्या सर्व गोष्टीची साखळी आहे. तसेच मुद्दलव्याज करतां करतां सावकाराने शेतकऱ्यांची जमीन आपल्या ताब्यांत घेतली व अेकाच व्यक्तीकडे जास्त जमीन अेकत्रित झालीं. हा कायदा शेतकऱ्यांची आर्थिक परिस्थिति सुधारतो व कूळवहिवाट कायद्याचे जे अुद्देश आहेत ते सर्व मुळांतच सुधारतो म्हणून या कायद्याचे कूळवहिवाट कायद्या पेक्षां जास्त महत्व आहे. आणि हा कायदा हाअुस समोर आणल्याबद्दल मी मुन्हर साहेबांना धन्यवाद देतो.

या बिलावर बोलतानां पूर्वीच्या अेका सन्माननीय सभासदाने सांगितले आहे कीं, ज्या शेतकऱ्यांच्या जमीनी सावकाराकडे गहाणाच्या रूपाने अथवा कर्जात पण खरेदी खताच्या रूपाने गेल्या आहेत त्या त्यांना वापस मिळण्याची व्यवस्था व्हावी. मला सांगावयाचे आहे कीं, तशी व्यवस्था या कायद्यामध्ये आहे. ३१ सालापासून गहाणामध्ये किंवा कर्जामध्ये गेलेल्या जमीनीचा विचार करण्याचा अधिकार कोर्टास आहे, पण त्यामध्ये आणखी जास्त सवलती देण्याची मात्र जरूरी आहे.

या कायद्यांतील विशेष महत्वाची बाब, म्हणजेच ह्या कायद्याचा अुद्देश जो आहे, तो म्हणजे "शेतकऱ्यांचा कर्जबाजारीपणा नष्ट करून त्याला आर्थिक बाबतींत स्वावलंबी बनविणे" हा आहे. याकरिता हा कायदा शेतकऱ्यांचे कर्ज निवारण्याची व्यवस्था करतो आणि सावकारावर निरनिराळी बंधने घालतो. यामुळे कदाचित सावकार लोक कर्ज देणे बंद करतील अशा परिस्थितीत शेतकऱ्याला शेतीला अुपयुक्त कर्ज मिळण्याची व्यवस्था झाली पाहिजे. नाहीं तर त्याला कर्ज मिळणे मुश्किल होईल. या दृष्टीने या कायद्यामध्ये फायनान्सिंग ऑफ क्रॉप्स (Financing of crops) आणि सीझनल फायनान्स (Seasonal finance) या दोन गोष्टींकरिता

दिलेल्या कर्जावर सावकारांना बंधन नसल्याने ह्या बाबी करता कर्ज देण्यास सावकार अनमान करणार नाहीत हे योग्य आहे. ही जी शेतकऱ्यांना कर्ज देण्याची सावकारांची प्रवृत्ति कायम ठेवण्याची व्यवस्था आहे ती चांगली आहे पण या बाबतीत महत्वाची अेक गोष्ट आहे ती ही कीं ह्या बाबींच्या नांवाखाली १९४५ पूर्वीचे ही कर्ज येअील की काय? त्याबद्दल मला ऑनरेबल मुन्हर साहेबाकडून खुलासा पाहिजे आहे तो त्यांनी आपल्या भाषणांत दिला तर बरे होअील, ती बाब म्हणजे, या कायद्यान्वये सावकारांना कर्जाच्या ज्या त्या दोन सवलती देण्यांत येणार आहेत हा कायदा अमलांत येण्यापूर्वीच्या या बाबींकरिता दिलेल्या कर्जाबद्दल ही देण्यांत येणार आहेत काय? ही बाब या कायद्यांत स्पष्ट झालेली नाहीं.

दुसरा मुद्दा जो विचाराकरिता घेणे आवश्यक आहे तो म्हणजे ह्या कायद्याचा फायदा जास्तींत जास्त शेतकऱ्यांना मिळावा. या दृष्टीने पाहता या कायद्यांत तरतूद अशी आहे कीं ज्या शेतकऱ्यांचे शेतीशिवाय अितर बाबींचे अुत्पन्न त्यांच्या सर्व अुत्पन्नाच्या अेकतृतीयांशाहून किंवा ५०० रुपयाहून जास्त नसेल अशा शेतकऱ्यांनाच या कायद्याचा फायदा घेता येअील आणि अितरांना याचा फायदा मिळणार नाहीं। म्हणजे कूळवहिवाट कायद्याचे जे फॅमिली होल्डिंग (Family Holding) होते तीच मर्यादा या कायद्यांत ठेवलेली आहे. या तरतुदीमुळे माझ्या मते जास्त शेतकऱ्यांना फायदा मिळणार नाहीं. वास्तविक पाहतां ज्यांच्या जवळ जास्त जमीन म्हणजे १०, १५ शेत किंवा १००, २०० अेकर जमीन आहे ते शेतकरीहि फार दुःखी आहेत. त्यांचीहि आर्थिक परिस्थिति फारच खराब आहे, व त्यांच्या वरहि कर्जाचा बोजा फार आहे. म्हणून या कायद्यांतील जी अेकतृतीयांश अुत्पन्न किंवा ५०० रुपयाची जी मर्यादा आहे ती वाढविली पाहिजे. असे बरेचसे शेतकरी आहेत जे शेतीशिवाय अितर धंदे करतात व ज्यांचे अितर धंद्याचे अुत्पन्न या कायद्यांत घातलेल्या मर्यादेपेक्षां जास्त आहे. बरेचसे शेतकरी रिकामपणाच्या वेळांत गाडीभाड्याची कामे करतात. अशी कामे त्यांना करणे भागच असते. नाही तर त्यांचा अुदरनिर्वाह चालणे अशक्य होअून बसते अशा गरीब शेतकऱ्यांनाहि या कायद्यांत वाव मिळणार नाहीं ते या कायद्याच्या फायद्यापासून वंचित राहणार आहेत. तेव्हां माझे असे म्हणणे आहे कीं जास्तींत जास्त शेतकऱ्यांना या कायद्याचा फायदा होअील अशा रीतीने यांत सुधारणा केली पाहिजे।

दुसरा मुद्दा म्हणजे ज्या शेतकऱ्यावर १५,००० रुपयापेक्षां जास्त कर्ज आहे अशा शेतकऱ्यांना या कायद्याचा फायदा मिळणार नाहीं पण मला असें सांगावयाचे आहे कीं पंधरा हजार रुपयापेक्षां जास्त कर्ज असणारे असे कितीतरी शेतकरी आहेत कीं ज्यांनी पंधरा हजार रुपये कर्ज घेतलेले नाहीं। मूळ कर्ज फक्त तीन चार हजार रुपये आहे पण त्याचे व्याज वरून त्याच्याकडून निरनिराळ्या वेळी सावकाराने कर्ज रोखे लिहून घेतले आहेत व अशा रीतीने त्याचे कर्ज आज १५,००० रुपयापेक्षां जास्त होत आहे आणि निरनिराळ्या वेळी कर्ज रोखे लिहून घेतलेले असल्यामुळे आज त्या शेतकऱ्याला व्याज किती व मुद्दल किती हे कोर्टात सिद्ध करणे कठीण होणारे आहे. अशा शेतकऱ्यांना ही या कायद्यापासून फायदा मिळाला पाहिजे. यासाठीं १५,००० रुपये मूळकर्ज समजले पाहिजे. तसेच आज असे शेतकरी दिसतात कीं, ज्यांचेवर कर्ज पंधरा हजारापेक्षां जास्त आहे पण त्यांची विस्टेट मात्र फारच कमी आहे अशा शेतकऱ्यालाहि या कायद्याची मदत मिळणार नाही. म्हणून अशी अट

घालतांना हा विचार होणे आवश्यक आहे कीं १५,००० रुपये कर्ज म्हणजे कसे ? मूळ कर्ज कीं व्याजासह झालेले कर्ज. मला वाटते १५,००० रुपये म्हणजे मूळ कर्ज असावे. व्याजासह झालेले कर्ज नसावे. नाहींतर या कायद्याचा फायदा फारच थोड्या शेतकऱ्यांना मिळेल. म्हणून या कलमांत माझ्या. सूचनेप्रमाणें उल्लेख करणे जरूर आहे असे मला वाटते.

दुसरा महत्वाचा मुद्दा असा आहे कीं, या कायद्यांत कर्जाचे हप्ते पाडतांना शेतकऱ्यांची कर्ज फेडण्याची अैपत ठरविली आहे आणि ती म्हणजे त्याच्या जायदादीच्या किमतीच्या शेकडा सात टक्के आहे. अशी अैपत ठरवितांना आणखी काहीं गोष्टींचा विचार होणे आवश्यक आहे. समजा अेका शेतकऱ्याचे कर्ज १५,००० हजार रुपये आहे व त्याचे बारा हप्ते पाडावयाचे आहे ह्यातून त्याला कायद्याप्रमाणे चाळीस टक्के सूट मिळेल असे धरले तर त्याचे कर्ज ९,००० रुपये उरते. हे बारा वर्षांत फेडावयाचे म्हणजे ७५० रुपयाचा अेक असे बारा हप्ते पडतील. पण तेवढी त्याची बचत आहे काय ? ह्या वेळेस त्याच्या अिस्टेटीच्या किमतीबरोबरच त्याच्या वार्षिक अुत्पन्नाचाहि विचार करणे आवश्यक आहे व त्यावरून हे पाहिले पाहिजे कीं, तो हा हप्ता देअू शकेल कीं नाहीं. शेतकऱ्यांचे वार्षिक अुत्पन्न ठरवितानां तीन चार गोष्टी विचारांत घेतल्या पाहिजेत. त्याची जायदाद किती आहे, जायदादीची किंमत किती आहे, त्याचे दरसाल अुत्पन्न किती आहे, त्यातून त्याला स्वतःच्या प्रपंचाकरिता किती पाहिजे, शिवाय त्याला पुढील वर्षी शेतीला लावावयास किती खर्च लागेल ह्या सर्व गोष्टींचा विचार करून नंतर मग त्याची कर्ज देण्याची अपत ठरविली पाहिजे. या कायद्यांत वरील गोष्टींचा विचार केलेला दिसत नाहीं. हा विचार जर केला नाहीं तर हा कायदा केला आणि न केला सारखेच होअील असे माझे मत आहे. कारण त्यावर नवीन कर्ज होण्याचा संभव कायमच आहे. करिता मी सांगितलेल्या गोष्टींचा विचार करून शेतकरी दरवर्षी किती कर्ज फेडू शकतो हे पाहिले पाहिजे आणि काहीं काळाने कां होअीना तो स्वावलंबी होअील याचा विचार केला पाहिजे. या दृष्टीने या कायद्यांत हप्त्यांच्या विचारसरणीत बदल करणे जरूर आहे असे मला वाटतें।

दुसरे या कायद्यांत संयुक्त हिंदू कुटुंबाचा विचार करण्यांत आला आहे. या बाबतींतहि अितर बाबींप्रमाणे ४० टक्के सूट आणि १५,००० रुपये कर्जाची मर्यादा ठेवलेली दिसते. असे ठरवितांना कूळवहिवाट कायद्यातील फॅमिली होल्डिंग (Family holding) सारखा विचार केलेला दिसत नाहीं. त्याच तत्वाचा अुपयोग येथे हि करण्यांत आला पाहिजे. समजा अेका कुटुंबात चार लोक आहेत आणि पुढेमागे ते वेगळे निघाले तर त्यांच्या चार शाखा पडतील व कर्जाचा बोजा चार लोकांवर पडेल म्हणून संयुक्त हिंदू कुटुंबासाठीं ही मर्यादा जास्त ठेवली पाहिजे. नाहींतर योग्य न्याय होणार नाहीं.

आणखी अेक गोष्ट विचारांत घेण्यासारखी आहे. ती म्हणजे व्याजाच्या दराबद्दल होय. या कायद्यांत कर्जाचा हिशेब करतांना विशिष्ट कर्जासाठीं ६ टक्के व्याजाचा दर आणि काहीं कर्जासाठीं ९ टक्के व्याजाचा दर ठरवण्यांत आला आहे. मला वाटते हा व्याजाचा दर जास्त होतो. कारण हा कर्ज निवारण कायदा आहे व याचा शेतकऱ्यांना जास्तीत जास्त फायदा होअील अशा रीतीने याला तयार केले पाहिजे. १९४५ सालापूर्वी ३० वर्षे म्हणजे हा कायदा १९१५ सालापासून या कर्जांना लागू होअील. शेकडा ६ किंवा ९ टक्के दराने जवळजवळ १६ वर्षांत दामदुप्पट होते. ह्या हिशो-

बाने पाहिले तर या ३० वर्षांच्या काळांत जर ६ टक्के व्याजाचा दर लावला तर शेतकऱ्याला मुद्दलाच्या तीनचार पट रक्कम द्यावी लागेल. केव्हां केव्हां सावकाराने मुद्दल वसूल केलेलेच असते आणि कर्ज रोखे फक्त व्याजाच्या पैशाचे असतात म्हणजे सावकार व्याजाच्या रूपाने मुद्दल वसूल करून घेत असतो. तेव्हां हा व्याजाचा दर फार होतो तो कमी केला पाहिजे तेव्हांच शेतकऱ्याला याचा फायदा होअील. तसेच यांत शेतकऱ्याला जी ४० टक्के सूट देण्याचे ठरविले आहे तीही फारच कमी आहे. हे सुटीचे प्रमाणहि वाढविण्याची आवश्यकता आहे. आमचा शेतकरी तर म्हणतो कीं सावकाराला चालत आलेल्या जुन्या कर्जाबद्दल काहींच देण्याची आवश्यकता नाहीं. कारण त्याने व्याजाच्या रूपाने मुद्दलापेक्षांहि जास्त रक्कम वसूल केलेली असते. या दृष्टीने व्याजाचा दर कमी करण्याची आणि सुटीचे प्रमाण वाढविण्याची आवश्यकता आहे. तसेच कर्जाचा निवाडा करतांना शेतकऱ्याकडून सावकाराच्या घरांत किती रक्कम गेली आणि त्याने अजून किती देणे योग्य आहे याचा विचार करणे आवश्यक आहे.

आणखी महत्वाचा मुद्दा म्हणजे यांत सरकारचे कर्ज, को-ऑपरेटीव्ह सोसायटींचे कर्ज यांचा समावेश सूट देण्यांत केलेला नाहीं. हे बरोबर आहे. या कर्जात कपात होणे बरोबर नाहीं. पण हे कर्ज परत करावयाच्या प्रद्धतीमध्यें थोडी सुधारणा होणे आवश्यक आहे. या कर्जाचे व्याज जे असेल ते कमी प्रमाणांत आकारल्लें गेले पाहिजे. या कर्जाचे हप्ते पाडलेले असतील तर या कर्जाचे हप्ते आणि अितर कर्जाचे हप्ते यांचा बरोबर मेळ बसला पाहिजे. यांत असेहि कलम आहे कीं सरकारी रक्कम अगोदर चुकविली जाअील. या कायद्याप्रमाणे कर्जफेडीचा काळ बारा वर्षांचा आहे. या काळांत त्याचे सर्व कर्ज फिटेल अशी व्यवस्था केली पाहिजे. हा काळ वाढला तरी चालेल पण कर्जाचा अेकंदर हप्ता जो कोर्ट ठरवील तो जास्त असता कामा नये म्हणजे या कर्जाचे हप्ते अशा रीतीने पाडले पाहिजेत की तो शेतकरी १२ वर्षानंतर स्वावलंबी होअील. म्हणून हा कर्जाचा हप्ता त्याच्या निव्वळ अुत्पन्नाच्या किंवा बचतीच्या अेकतृतीयांश किंवा अेकषष्ठांश यापेक्षां जास्त नसावा असे आपण काहीं तरी प्रमाण ठरविले पाहिजे. हप्ते ठरवितांना त्याच्या अेकंदर अुत्पन्नाचा विचार न करता त्याच्या निव्वळ अुत्पन्नाचा विचार केला पाहिजे. या बाबतींत फार तर असे करता येअील की सरकारचे कर्ज फेडत असतांना फार तर त्यांचे बारापेक्षां जास्त हप्ते पाडता येअील पण. ते हप्ते त्याच्या बचतीच्या किंवा निव्वळ अुत्पन्नाच्या अेकतृतीयांश किंवा अेक चतुर्थांशपेक्षां जास्त नसावे. नाहीं तर तो शेतकरी या बारा वर्षांच्या काळानंतरहि स्वावलंबी बनणार नाहीं.

दुसरा महत्वाचा मुद्दा असा आहे कीं आमच्या प्रांतांतील शेतकऱ्यावर अितर प्रांतातील सावकारांचे कर्ज असेल तर काय करावे याचा या कायद्यांत मुळींच विचार केला गेला नाहीं. हा नवीन मुद्दा आहे. कारण मी ज्या भागांत राहतो त्या भागांत आपल्या प्रांतांत काहीं भाग मुंबअी प्रांताचा आला आहे. तसेच तेलंगणांत मद्रास प्रांताचाहि आला असेल तेव्हां अशा भागांतील जे शेतकरी आहेत त्यांचे सावकार दुसऱ्या प्रांतात असणे संभवनीय आहे. अशा शेतकऱ्याबद्दल या बिलांत विचार केला नाहीं. या बिलांत फक्त हैदराबाद मध्यें झालेल्या व्यवहाराचा विचार केला आहे. म्हणून परक्या प्रांतांत झालेल्या व्यवहाराबद्दल यांत विचार व्हावयाला पाहिजे. आपण शेतकऱ्यांच्या सर्व सुखसोयीचा यांत विचार केला आहे तेव्हां या सुखसोयीचाहि यांत विचार करण्याची अत्यंत जरूरी आहे.

अशा रीतीने हा कायदा मी सुचविलेल्या सूचनांचा समावेश करून शेतकऱ्यांना अधिकाधिक अुपयुक्त केला तर फार चांगले होअील. अितके बोलून मी आपले भाषण संपवितो.

श्री. देवीसिंग चव्हाण :—आपण अिन्क्ल्यूजिव्ह व्हिलेजेस (Inclusive Villages) म्हणतां, म्हणजे काय ? हा कायदा जेव्हां स्टेट मध्यें लागूं होअील तेव्हां तेथेहि लागूं होअील.

श्री. लिंबाजी मुक्ताजी पानसंबळ :—माझ्या म्हणण्याचा अर्थ असा कीं जे कर्जदार पूर्वी परप्रांतात राहात आणि आतां त्यांचा समावेश आपल्या प्रांतात झाला आहे, पण त्यांचे सावकार अजूनहि दुसऱ्या प्रांतातच आहेत, अशा सावकारांना आपण या कायद्याप्रमाणें जबाबदार धरूं शकाल काय ?

श्री. देवीसिंग चव्हाण :—जर कर्जदार आपल्या स्टेटमध्यें असेल तर त्याचा सावकार कोठेही असला तरी त्याला हा कायदा लागू होअील.

श्री. लिंबाजी मुक्ताजी पानसंबळ :—जर असे आहे तर फारच चांगले आहे. शिवाय मी ज्या आणखी काहीं सूचना केल्या आहेत आणि ज्या अडचणी सांगितल्या आहेत त्यांचाहि यांत समावेश केला तर फार चांगले होअील.

श्री. वीरेंद्र पाटील (अलंद) :—अध्यक्ष महोदय, आज अिस असेंब्ली में हमारे सामने अॅग्रिकल्चरिस्ट डेटर रिलीफ बिल आया हैं। किसी भी मुल्क के मआशी हालात वहां के जो कास्तकार हैं अुनकी खुशहाली परमबनी है। यदि हमारे मुल्क को तरक्की करनी है तो हमारे कास्तकारों के मआशी हालात ज्यादा अच्छे होने चाहिये। किसी भी मुल्क में या हमारे मुल्क में तरक्की करनी हैं और पैदावार बढानी है कास्तकारकी मआशी हालत अच्छी होनी चाहिये। हमारे मुल्क में ७५ फीसद लोग कास्तकार हें। और मै यदि कहूं कि ८० फीसद कास्तकार हैं तो भी बेजा न होगा। लेकिन आज हमारे कास्तकार कर्जे के भार के नीचे दबे पडे हैं अुनपर आज कर्जे का काफी बोझा हें। वह जो पैदावार आज निकालते हैं अुसमें से बहुत सारी तो कर्जे की अदायगी में जाती हें। और वे बिलकुल मआशी पस्ती में पडे रहते हैं। अुनकी कास्त से जो सालाना आमदनी होती हैं अुसमें से ज्यादातर हिस्सा कर्जे की अदायगी में जाता हैं। और अपनी कास्त अच्छी करने के लिये अुनके पास पैसा नहीं रहता। अपनी पैदावार बढाने केलिये वे नये अिम्प्लिमेंट्स अिस्तमाल नहीं कर सकते। और अिसी वजह से आज हमारे मुल्क में पैदावार घट रही है। यह खुशी की बात हें कि अिसके मुताल्लुक हुकूमत बहुत गौर से सोंच रहीं है। और काफी सोंचकर आजके हमारे मिनिस्टर साहब नें यह कानून असेंब्ली के सामने लाया है। पहले जो डेट्स रिकन्सिलियेशन बोर्ड था वह काम अच्छा नहीं कर सका अुसकी अिम्तेहान अजमायशी से मालूम हुआ कि अुसका काम फेल्यूर रहा। बोर्ड बनाने में जो हुकूमत का मकसद था कि अॅग्रिकल्चरिस्ट का कर्जा कम हो वह मकसद पूरा नहीं हो सकता था। अिस बोर्ड को अितनाही पॉवर था कि वह डेटर और क्रेडिटर को अेक जगह लाकर अुनमें कनसिलियेशन कराने की कोशिश कर सकते थे। अिससे ज्यादा अिस बोर्ड को कोअी पॉवर नहीं था। अिस लिये अिस बोर्ड से गव्हर्नमेंट का पूरा मकसद हासिल नहीं हो सकता था। यह जो बोर्ड बनाया गया था अुसका काम अेक जिले के दो या तीन ताळुके में अेक्सपेरिमेंट के तौर पर किया जारहा है। लेकिन वह बराबर साबित नहीं हुवा।

हुकूमत यह समझती है कि कास्तकारों के कर्जे का बोझा कम करना बहुत जरूरी है। और अिसी ख्याल से यह बिल लाया गया है। अिसमें बहुत कुछ बातें हैं। यह बिल देखने से यह बात साफ मालूम होती है कि कास्तकारों के कर्जे का बोझा कम करने के लिये यह बिल लाया जरा हा है। और अिस बात की कोशिश की जा रही है। यह जो बिल आज सरकार की तरफ से यहां पेश किया गया है वह काबिले मुबारिक बाद हैं और यह बिल ऑनरेबल मिनिस्टर साहब ने लाया है। अिस लिये मैं अुन्हें पहले मुबारिकबाद देता हूं।

यह जो बिल यहां लाया जा रहा हैं अुसके बारे में मै अपने चंद ख्यालात यहां रखना चाहता हूं। अिसमें जो ४ था क्लॉज हैं वह अॅडजेस्टमेंट्स ऑफ डेट के बारे में है। अुसमें यह बतलाया गया है कि सेक्शन ४ के तहत कोअी डेटर या क्रेडिटर अिस कानून के नाफिस होने के बाद तीन महिने में अपना डेट अॅडजेस्टमेंट करने के लिये कोर्ट को दरखास्त कर सकता है। अैसी दरखास्त आने के बाद फिर कोर्ट अिसके बारें मे क्रेडिटर या तमाम क्रेडिटर्स को अित्तला देगी और अुसके बाद गव्हर्नमेंट को-ऑपरेटिव्ह सोसायटीज और दूसरों को नोटीस देगी। अिसके बाद डेटर या क्रेडिटर जो भी हो अुसे अपने पूरे अकाअुंट्स कोर्ट के सामने पेश करेंगे होंगे और तमाम डेट्स का तफसील भी देना होगा। और फिर अुनके अकाअुंट्स जाचें जायेंगे। और हालात के लिहाज से कर्जे को ३०, ४०, फीसद कम करेंगे। याने पूरे कर्जे में से ३०, ४० परसेंट डिडक्ट करेंगे। कोर्ट को यह अेख्तयार है कि वह जिसने अप्लिकेशन दी है अुसकी प्रॉपर्टी देखे और अुसका व्हॅल्युअेशन करें और यह बतलाया जायेगा कि जो कर्जा हैं अुसकी आदायगी किस तरह से होनी चाहिये। पहले जो अॅसेट्स है अुसकी अेक लिस्ट बनायी जायेगी। प्रॉपर्टी की जो लिस्ट बनायी जायेगी अुसके बाद अुसे कितना देना है अिसकी भी लिस्ट बनायी जायेगी। और अगर यह देखा गयाकि अुसके पास काफी जायदाद नहीं है और ५० फीसद जायदाद से कम हैं तो अैसी हालत में क्रेडिटर को पैसे कम करने के लिये कहा जाता है। और फिर अुसके बाद अॅडजेस्टमेंट होगा। अिस तरह कुछ अॅडजेस्टमेंट होने के बाद कास्तकार को फिर कर्जे की रक्कम आदा करनी होगी। कर्जा अदा करने की जिम्मेदारी को-ऑपरेटिव्ह बॅंक को दी गअी है। जहां तक हो सके गव्हर्नमेंट कास्तकारों का कर्जा कम करने की कोशिश कर रही है।

यह जो कानून लाया गया है वह काफी अच्छा हैं लेकिन अिसमें कुछ नुक्स नहीं हैं अैसी बात नहीं है। मुझे तो अिसमें कुछ खामिया नजर आती है वह मैं आपके सामने रखना चाहता हूं। अिसका मतलब यह नहीं हैं कि जो बिल बनाया गया हैं वह कुछ माने नहीं रखता हैं। लेकिन अिसमें कुछ डिफेक्ट्स मेरे ख्याल से जरूर रहें हैं। मैं समझता हूं कि मेरे जो ख्यालात हैं अुसके बारे में और मेरे जो शुबहात हैं अुसके बारें में ऑनरेबल मिनिस्टर साहब यदि कुछ वजाहत करेंगे तो अच्छा होगा। सबसे पहले डेट्स की जो तारीफ अिस कानून में की गअी हैं अुसमें मुझे अैसा लगता है कि कहीं डेट् की डेफिनिशन में रेंट न आ जाय। क्योंकि डेटर की जो तारीफ में यह बताया गया है कि लॅंड होल्डर याने टेनसी कानून में लॅंड होल्डर की जो तारीफ बतायी गअी हैं वही तारीफ अिस कानून में भी लागू होगी। अिसमें लॅंड होल्डर ही आये है मेरा ख्याल हैं। कि कर्जे की तारीफ में लगान को लाने की जरूरत नहीं है। अगर वैसे लगान को आपको कर्जे की तारीफ में लाना है तो फिर अलग बात हैं। लेकिन यह जो कानून टेनन्सी अमेंडिंग बिल लाया गया है, मैं देखता हूं कि अिसके लिये अुसमें बहुत कुछ प्राविजन

रखा है। रेंट्स के बारें में भी अिसमें सेक्शन हैं लेकिन रेंट्स को कर्जे की तारीफ में लाकर तसफिया कर सकते हैं तो मै समझता हूं कि ऑनरेबल मिनिस्टर साहब जब जवाब देंगे तो मेरा जो शुबा है असको रफा करने की कोशिश करेंगे और अिसकी वजहात फरमायेंगे।

अिसके बाद कानून में डेटर का डेफिनेशन आता है। असमे यह बताया गया है कि जो कर्जदार होगा असे डेटर कहा जायेगा और जिससे कर्जा लिया गया है असे क्रेडिटर कहा जायगा। जो सही माने में डेटर हैं वह अिस कानून से फायदा नहीं अठा सकते हैं। अिसमें डेटर की तारीफ की गअी है। असकी तारीफ से मुझको कुछ शुबहा मालूम हुआ। असकी अिस तारीफ में लैंड होल्डर को लिया गया है। लेकिन सिर्फ लैंड होल्डर को लेकर हमारा यह जो कानून बनाने का मकसद है वह पूरा नहीं होनेवाला है। अिसके बारें में हमारा मकसद यह होना चाहिये कि जो कर्जे का भार आज किसान पर है वह कम होना चाहिये। आज जो अॅग्रिकल्चरल लेबरर्स हैं या दूसरे जो जिरातपर काम करनेवाले हैं अनपर और छोटे छोटे कास्तकार पर कर्जे का भार ज्यादा है। जो बडे बडे लैंडलॉर्डस हैं अनपर तो कर्जा ज्यादा नहीं है। तो अिन लोगों पर जो कर्जे का भार ज्यादा है असे कम करना चाहिये। यदि हम लैंड होल्डर को असमें रखेंगे तो भलेही रखे लेकिन फिर बाकी लोगों को अिस कानून से फायदा नही मिलेगा। मेरी समझ में यह बात नहीं आती कि अिसमें टेनंट को किस लिये नहीं रखा है। होल्डर की जो तारीफ अिस अॅक्ट में की गअी है वह लैंड रेव्हिन्यु अॅक्ट मे जो तारीफ हैं वही ली गअी है लेकिन अिसमें अॅग्रिकल्चरल लेबरर्स या टेनंट्स की डेफिनेशन नहीं लाअी है। अिसमें यह डेफिनेशन लाने की जरूरत है। यदि यह नही किया गया तो अिस कानून का फायदा टेनंट्स (Tenants) को जितना मिलना चाहिये अन्हे वह नहीं मिलेगा।

डेटर की जो तारीफ की गअी है असमें अिडिव्हिज्युअल डेटर के लिये तीन शरायत है। जो अिन तीन शरायत को पूरा करता हैं वह डेटर की तारीफ में आता है। असमें यह बताया गया हैं कि जो अॅग्रिकल्चरल परपज के लिये जमीन अपने कब्जे में रखता हो और यह जमीन असके कब्जे में ३० सालों से ज्यादा टाअिम तक न हो याने ३० जनवरी १९४५ के पहले ३० तीस साल तक हो अैसे कास्त-कार डेटर की तारीफ में आ सकते हैं लेकिन अिससे यह बात जाहिर हैं कि वे तमाम लोग जो ३० साल से पहले के पुराने है वह अिस कानून की डेफिनेशन में नहीं आ सकते हैं। और असी तरह यदि कोअी आदमी अिस कानून के अेक साल पहले का डेटर है या कोअी गैर जीराती आदमी हैं तो वह अिस कानून में नहीं आता है। जिनकी गैरजीराती आमदनी 33⅓ फीसद से ज्यादा न हो और जिनका कुल अिनकम ५०० रुपये से ज्यादा हो तो वे डेटर की तारीफ में आ सकते हैं। अिसका मतलब यह हैं कि किसी की आमदनी यदि 33⅓ फीसद से ज्यादा गैर जीराती हो तो वह डेटर की तारीफ में नहीं आ सकतें हैं।

अिस कानून में यदि कोअी कंडिशन पूरे नहीं होते हैं तो असे साबित करने की जिम्मेदारी डेटर पर डाली गअी हैं। और डेटर को यह साबित करना पडता हैं कि ३० साल के पहले मैं अिस जमीन पर काबीज था मैंनें खुद अिस जमीन पर कास्त की थी और मेरी बिगर कास्त आमदनी अेक तिहाअी से ज्यादा नहीं है। यह तमाम डेटर को साबित करना पडता है। जब तक यह तमाम साबित न हो तब तक वह आगे नहीं बढ सकता।

क्या आज की हालत में अिन तमाम शरायत को साबित करने की अहलियत काश्तकार में है या नहीं अिसके मुताल्लुक आपको सोचना पडेगा। अगर यह भार हम काश्तकार पर डालेंगे तो मैं समझता हूं कि काश्तकार को अिस बिल का फायदा नहीं मिलेगा। पिछले डेट कन्सिलिअेशन अैक्ट में भी डेटर की तारीफ थी। लेकिन मैं अेक सीधीसादी तारीफ चाहता हूं और वह अिस तरह से होनी चाहिये कि डेटर वह शख्स है जिसके पास जिरायती जमीन है या जो जिरायती जमीन रखता हैं। अिसको अगर आप और बढाना चाहते हैं तो यह कह सकते हैं कि जो परसनली कल्टिवेट करता है वह डेटर समझा जायगा। लेकिन अिस हद तक शर्त आयद करना मैं मुनासिब नहीं समझता। क्योंकि बहुत से अैसे पेट्टी लैंडहोल्डर्स (Petty Landholders) हैं जिनके पास बैल वगैरह अेस्टेब्लिशमेंट की चीजें नहीं होतीं अिसलिये अुन्होंने अपनी जमीन मजबूरन दूसरे लोगों को काश्त करने के लिये दी है। अिस लिये जिरायती जमीन रखनेवाले को डेटर में शामिल करना मेरे ख्याल से काफी है। अिसमें जो डेटर की डेफिनिशन (Definition) दी गअी है अुसमें अेक के बाद अेक शर्त रखी गअी है जिसमे कअी तरह की पेचिदगियां पैदा होंगी और सच्चे मकरूज को अिससे फायदा हासिल नहीं हो सकेगा जिसके लिये हम यह कानून बनाने जा रहे हैं। बल्कि अिससे अुसका और अेक्स्प्लायटेशन होगा। अिस डेफिनिशन में जो 'And' 'And' लगाये गये हैं अुससे मुझे डर है कि अिस डेफिनेशन का गलत अिस्तेमाल होगा। अिसमें शरायतें रखी गअी हैं अुनमें से अगर वह अेक भी पूरी न कर सके तो वह डेटर की तारीफ में नहीं आयेगा। अिस लिये अिसके मुताल्लुक सोचने के लिये मैं अपने ख्यालात अैवान के सामने रख रहा हूं।

अिस कानून में जो पूरा प्रोसीजर है अुसको जड सेक्शन ४ है। अेडजस्टमेंट (Adjustment) वगैरह का जो प्रोसीजर है अुसकी बिना सेक्शन ४ है। अिससे यह होगा कि सेक्शन ४ के तहत अगर कोअी डेटर या क्रेडिटर सामने न आये तो कोर्ट कुछ नहीं कर सकेगी। डेटर अपनी जगह पर, क्रेडिटर अपनी जगह पर और कोर्ट अपनी जगह पर बैठे रहेंगे। सेक्शन ४ में जो अल्फाज अिस्तेमाल किये गये हैं अुनके अूपर हमको गौर करना पडेगा। अिसमें यह कहा गया है कि अिस कानून के नाफीस होने के बाद तीन महीने के अंदर क्रेडिटर या डेटर को कोर्ट में आकर रुजू होना चाहिये। मैं समझता हूं कि यह कलील मुद्दत है। अिस लिये कि आज हमारा काश्तकार देहात में रहता है और देहात के अंदर अैसे अिंटिरिअर पार्टस (Interior parts) हैं जहां पर आपके कानून की अित्तिला अिसके नाफीस होने के बाद तीन महीने के अंदर पहुंचना मुश्किल है। आपका कानून ज्यादा से ज्यादा जरीदे में शाया होगा। शायद यह कहा जाय कि अुनको मौके पर अित्तिला नहीं हुअी अैसा मालूम पडे तो अिसके लिये बाद में अेक्सटेन्शन दिया जायगा। लेकिन मैं समझता हूं कि अिसके लिये हमको आज ही अेक साल की मुद्दत देनी चाहिये। आखिर हमने यह बिल अिसी मकसद से लाया है कि मदयून पर जो कर्जे का बोझ है अुसको किसी तरह से हलका किया जाय। अगर अिस तीन महीने की कलील मुद्दत के अंदर वह कोर्ट में रुजू न हो सके तो अुसका मामला बैरूनी मियाद हो जायगा और अिस तरह से अुसको मुकदमेबाजी की कशाकश में मुब्तिला करना ठीक नहीं है। अिसलिये अुनको काफी मौका दिया जाना चाहिये। मेरी यह दरख्वास्त है कि यह मुद्दत अेक साल की होनी चाहिये। दूसरी बात यह है कि अिस बिल के अंदर जो प्रोवीजन्स हैं अुसके तहत यह बताया गया है कि अिस तीन महीने की मुद्दत के अंदर ही अिस स्टेट के जितने भी डेटर्स और क्रेडिटर्स हैं

अुनको आना चाहिये. आनरेबल मूव्हर आफ दि बिल(Hon. Mover of the Bill)शायद यह समझते हों कि शायद अिस तरह की शर्त से हम अिस लेनदेन के मसले को वन्स फॉर आल (Once for all) खतम कर देंगे. अगर अुनका यह मकसद हो तो बात अलग है. लेकिन शर्त यह है कि तीन महीने के अंदर पूरे डेटर्स और क्रेडिटर्स को आना चाहिये । फर्ज कर लिया जाय कि कोअी डेटर अिस मुद्दत के अंदर नहीं आया तो अुस सूरत में क्या अिलाज अिस बिल में रखा गया है ? क्या अिसमें अिस मुद्दत के बाद आने की गुंजाअिश है ?

श्री. देवीसिंग चव्हाण :—फिर अुसके बाद सेक्शन ५ है ।

श्री. वीरेंद्र पाटील :—मुझे जो शुबहा है वह मैं जाहीर कर रहा हूं । और किसान को कोअी नुकसान नही होगा.

श्री. के. व्यंकटरामराव :—अिस कानून के निफाज के बाद, तीन महीने के बाद जो लेनदेन होता है अुसके अॅडजस्टमेंट (Adjustment) के लिये क्या प्रोवीजन अिस बिल में है वह तो अिस बिल के पढने से मालूम नहीं होता । मुझे अैसा मालूम होता है कि यह तमाम बिल अुन कर्जजात के मुताल्लुक है जो अिस बिल के नाफीस होने के पहले लिये या दिये गये हैं । लेकिन अिसके बाद अगर कोअी कर्ज दिये जायं तो अुसके बारे में अिस बिल में कोअी प्रोवीजन नहीं दिखाअी देता । अिस बिल के निफाज के बाद कोअी कर्जा दे न दिया जाय अैसा तो अिस बिल में नहीं लिखा गया है और न अिस तरह की कोअी पाबंदी हम लगा भी सकते हैं । आज देहात की माआशी हालत अैसी है कि अुनको मनीलेंडर्स जोकि ज्यादा सूद खाते हैं अुन्हीं से काश्तकारोंको मजबूरन कर्जा लेना पडता है और यह सही बात है कि गवर्नमेंट आज अिस पोजीशन में नहीं है कि वह हरवक्त हर काश्तकार को अपनी तरफ से कोअी कर्जा दे सके । कुछ कोआपरेटिव सोसायटीज अिस दृष्टि से कायम की गअी हैं लेकिन हम देखते हैं कि अिन सोसायटीज की तरफ से काश्तकारों को अैसी माली अिमदाद नहीं मिल सकती जिससे काश्तकारों को मनीलेंडर्स से कर्ज लेने के लिये मजबूर न होना पडे । काश्तकार के सामने अैसे मसायल खडे होते हैं कि अुसको रकम की फौरी जरूरत पडती है और अुस वक्त मजबूरी हालत में आअिंदा साल में जो पैदावार होगी अुसमें से कर्जा देने के वादे पर अुसको कर्ज लेना पडता है । अुसको बरवक्त रकम मिलने के लिये कोअी अिन्तजाम हमारी तरफ से नहीं है । अिसी लिये भी आअिंदा लेनदेन का व्यवहार होगा लेकिन अुसके लिये कोअी मुमानियत अिसमें नहीं है । फर्ज कर लिया जाय कि अिस कानून के नाफीस होने के तीन या छ: महीने के बाद किसी क्रेडिटर ने किसी डेटर को कर्ज दिया तो अुसके लिये क्या किया जायगा ? मैं समझता हूं कि अिस बिल के अंदर अिसके लिये कोअी अिलाज नहीं है । अिस पर हमको गौर करना चाहिये ।

१९३६ के बाद जो ट्रान्जाक्शन्स (Transactions) हुअे हैं अुनके अकाअुंटस लाकर पेश करने के बारे में और कर्ज की अदायगी के अिन्तजाम के बारे में कुछ प्रोवीजन्स अिस बिल में हैं । मुमकिन है कुछ गलतफहमी से हो लेकिन मैं अपनी अेक राय अिसके बारे में जाहीर कर देना चाहता हूं । आज हम देखते हैं कि लॉ आफ लिमिटेशन्स (Law of Limitations) के तहत कोअी कर्ज दिया गया है तो कर्ज की अदायगी अगर तीन साल के अंदर नहीं हुअी है तो डेटर के मुकाबिले में दायन को दावा लाना पडेगा. अगर अैसा दावा वह नहीं लाता तो अुसके राअिटस और कर्ज बे-बाक तसव्वुर किये जायेंगे. यानी वह मामला बेरून मियाद करार दिया जाता है और फिर तीन साल

के बाद कोअी दायन कोर्ट में जाकर मदयून के खिलाफ दावा पेश नहीं कर मकता. लेकिन अिस बिल में हम यह देख रहे हैं कि १९३६ जनवरी के बाद जो कर्जाजात हैं अुनका अेक सिलसिला चला आ रहा है और वे बेरूनी मियाद हो गये हैं लेकिन अुनको अंदरूनी मियाद नसव्वुर कर के अुन पुराने कर्जाजात की अदायगी का अिंतेजाम किया जा रहा है। अिसका मतलब यह है कि जो क्रेडिटर अपने कर्जाजात वसूल करने के हक से महरूम होकर बैठ हैं अुनको आप फिर से फ्रेश राअिटस (Fresh Rights) देना चाहते हैं। अगर वाकअी हम अॅग्रिकल्चरल डेटर्स (Agricultural debtors) को अुनके कर्जे के बोझ से हलका करना चाहते हैं तो आपको यह समझ लेना चाहिये कि १९३९ से जो कर्जे चले आ रहे हैं अुनकी मूल रकम से तिगुनी या चौगुनी रकम क्रेडिटर्स ने हासिल कर ली है, वे लोग फिरसे अदालतों में आयेंगे-आप डेटर्स को ४० फीसद कन्सेशन देंगे वगैरह सब ठीक है लेकिन यह तो हमारा कभी मकसद नहीं होना चाहिये। जिन्होंने असली रकम से भी ज्यादा सूद अब तक हासिल किया है अुनके साथ हमदर्दी हमको वाकअी तौर पर नहीं होनी चाहिये और लॉ ऑफ लिमिटेशन्स भी यही कहता है कि तीन साल के अंदर अगर वह दावा पेश नहीं करता तो अुसके लिये बाद में कोअी चारेकार नहीं है। अिस लिहाज से हमको ये लिमिटेशन्स डाल देना चाहिये कि १९३५ से जो कर्जाचात हैं अुनके अकांअुंटस दिखाने की कोअी जरूरत नहीं है. अिस-लिये में यह मुनासिब समझता हूं कि १९४८ के पहले के जितने भी कर्ज हैं अुनकी तरफ कोअी ख्याल न दिया जाय। मेरी यह जाती राय है। अगर आप चाहें तो १९५० के पहले के कर्जों के बारे में कोअी रिआयत न दीजिये। या कम से कम १९४५ के पहले के जो कर्जेजात हैं अुनके मुताल्लुक कोअी रिआयत क्रेडिटर्स को नहीं मिलनी चाहिये. आखिर हमको कहीं न कहीं जाकर रुकना है। मैं असा कोअी प्रोवीजन अिसमें नहीं देखता। लेकिन अिसमें यह दिया गया है कि १९४६ के बाद के जितने कर्जेजात हैं अुनके अकाअुंटस कोर्ट देखेगी। अिसके लिये आप ४० परसेंट कन्सेशन देंगे अुसके बाद नाअिन ऑर सिक्स परसेंट (Nine or six per cent) सूद आयद करेंगे और ट्वेल्व्ह टाअिम्स (Twelve times) के अकसात पर बाकी कर्जा देने के लिये अिन्तजाम करेंगे। यह सब कुछ ठीक है। लेकिन अिससे काश्तकारों के साथ नाअिन्साफी होने के अिमकानात हैं। अिसलिये अिन प्रोवीजन्स की तरफ नजरसानी करने की जरूरत है।

अवार्ड देने के बाद अवार्ड के मुताबिक अगर कोअी मदयून कर्जा नहीं देता तो अुसकी वसूलीके लिये क्रेडिटर को रेविन्यू कोर्ट की तरफ जाना पडता है और अुसके जरिये से वसूली करवानी पडती है। यह कोअी ठीक तरीका नहीं है। साबिका डेट कन्सिलिअेशन बोर्ड में भी यही रखा गया था कि जो अवार्ड अुनने दिया है अुसको माना जाय तो अुसकी तामिली तालुकदार से कर दी जाय। लेकिन यहां अब आप कोर्ट को पूरे अेख्तियारात दे रहे हैं तो यह बेमानी है कि कोर्ट से ये अेख्तियारात छीन कर रेविन्यू के सुपुर्द किये जायें। अिसका मतलब ही मेरी समझ में नहीं आता। जिस तरह से आज यह होता है कि जिस कोर्ट ने फैसला किया वही अुसकी तामिली का जिम्मेदार होता है। वह अपनी जिम्मेदारी रेवीन्यू कोर्ट के सुपुर्द नहीं करता. अुसी तरह से अिसमें भी जो कोर्ट अवार्ड देता है अुसको तामिली भी अुसीके जरिये से होनी चाहिये। लेकिन आपने जो तरीका रखा है अुससे बहुत से काम्प्लीकेशन्स होते हैं। मान लीजिये कोअी अवार्ड मिला और कोअी शख्स अुसको नहीं मानता तो क्रेडिटर को वहां जाकर नकल हासिल करनी पडती है, हलफनामा तकमील करके

जिले में जाना पडता है, दरख्वास्त पेश करनी पडती है अुसके वाद तहसील को लिखेंगे और अुसके वाद अेक चपरासी जायगा और गिरदावर को साथ ले कर तामिली करेगा। यह प्रोसीजर बहुत रद्दी है । कोअी कोर्ट अवार्ड देता है तो अुसके माने यह नहीं है कि अुसकी तामिली करने से वह गुरेज करे और अुनसे हम तामिली के अेख्तियारात छीन लें । अिसका कोअी खास मकसद में नहीं समझ रहा हूं । अिस लिये मेरी यह राय है कि जिस तरह से कोर्ट को पूरे आख्तियारात अेडजस्टमेंट (Adjustment) वगैरह के दिये गये हैं अुसी तरह से अवार्ड की तामिली के आख्तियारात भी अुसी कोर्ट को देने चाहियें न कि रेविन्यू कोर्ट को या कलेक्टर को ।

अिसके बाद अिसमें यह देखा गया है कि वकालतन पैरवी ममनूअ की गअी है। लेकिन अिसके साथ यह भी सोचना है कि क्या तमाम क्रेडिटर्स बालिग होते हैं या वे अपने पूरे कारोबार करने की अहमियत रखते हैं? अैसा तो नहीं कहा जा सकता । बहुत से क्रेडिटर्स अैसे भी हैं जो नाबालिग हैं, बेवा हैं या औरतें है, किसी में कोअी अिनेबिलिटी है । जो खुद अपनी पैरवी नहीं कर सकते अुनके लिये क्या तरीका है, क्या प्रोवीजन अिसमें है? वकालतन पैरवी ममनू नहीं होनी चाहिये अैसा मेरा कहना नहीं है, वह होनी चाहिये . लेकिन अुसके साथ साथ जो खुद अदालत में हाजिर नहीं हो सकते अुनके लिये कुछ प्रोवीजन रखना चाहिये. चाहे क्रेडिटर हो या डेटर हो अगर वह नाबालिग है या औरत है या अुसमें कोअी अिनेबिलिटी है तो अुससे यह तवक्को नहीं किया जा सकता कि वह खुद कोर्ट में आकर तमाम कर्जेजात अकाअंटस पेश करे और तमाम चीजें सबित करे.

अिसमें वकालतन पैरवी भी ममनूअ की गअी है. डेट कन्सीलिअेशन अैक्ट में यह ममनुअ थी. लेकिन हमारा तजुरबा है कि मुख्तारनामा पेश होता था और वकीलों की तरफ से नहीं बल्कि पैरवीकारों की तरफ से पैरवी होती थी. बहुत से आनरेबल मेंबरान जो कि विकला हैं अुनको मालूम होगा कि यहां विकला से ज्यादा पैरवीकार हैं और अुन्होंने अच्छी तरह से अपना धंधा कर लिया है और वकीलों से ज्यादा वे कमाते हैं. वे बराबर मुख्त्यारनामा पेश कर सकते हैं, सिर्फ वकीलों को मुमानियत है। जब आप वकीलों को मुमानियत करना चाहते हैं तो अुसका मंशा यह होता है कि अिसमें कोअी तरीके निकालकर क्रेडिटर या डेटर को परेशान न किया जाय. अगर यह मतलब है तो क्रेडीटर या डेटर को मुख्तारतन पैरवी से या और किसी तरह के रिप्रेजेंटेशन से मुमानियत करनी चाहिये. चाहे तो अिसमें कुछ शरायत अैसी रखी जा सकती हैं कि जो खुद पैरवी नहीं कर सकते जैसे बेवा हैं या नाबालिग हैं तो अुनके लिये दूसरों की तरफ से पैरवी की जायगी. लेकिन जहां आप वकालतन पैरवी ममनूअ करते हैं वहां आपको मुख्तारन पैरवी को भी ममनूअ करना चाहिये. यह मेरी जाती राय है.

आखिर में मैं यह कहूंगा कि अिस तरह के जो कवानीन हैं जैसे मनीलेंडर्स अैक्ट वगैरह, अुनसे यह तजरुबा हुआ है कि बहुत से लोग जिनका पेशा लेन देन का था अुन्होंने अपना पेशा तर्क कर दिया है. लेकिन जैसी कि आज जिरायती पेशा लोगों की हालात है, वे बगैर रकमी की अिमदाद के अपने पेशे की बुकाति नहीं कर सकते. अिसके लिये भी हमको कुछ न कुछ रास्ता चाहिये. डेट कन्सिलिअेशन बोर्ड आये, अेकाध साल कुछ काम हुआ लेकिन नतीजा यह हुआ कि देहातों में जो लेन-देन का काम करते थे अुन्होंने अपना काम बंद कर दिया और अुसके बाद काश्तकारों को कितनी

मुश्किलात का सामना करना पडा। आज हमारी हुकूमत भी अैसी हालत में नहीं है कि जितनी रकमी अिमदाद की काश्तकार को जरूरत है वह हुकूमत की तरफ से दी जा सके. मैं समझता हूं कि अगर अिस बिल को हम सक्सेसफुली (Successfully) अिम्प्लीमेंट (Implement) करना चाहते हैं तो कोआपरेटिव सोसायटीज (Societies) ज्यादा से ज्यादा तादाद में हमको खोल नी चाहिये। आज हम देखते हैं कि ये सोसायटीज कुछ काम करती हैं। लोगों को कुछ तकावी देती हैं लेकिन अुनकी पैरवी के लिये लेनदार का बहुत सा पैसा खर्च होता है। सौ रुपये लिये तो अुसमें से २५ रुपये पैरवी के लिये और अिधर अुधर देने में ही खर्च हो जाते हैं। ये प्रेक्टिकल डिफिकल्टीज (Practical difficulties) हैं। गवर्नमेंट को अिसके बारे में सोचना चाहिये. आजकल हालत यह हो गअी है कि कोअी कर्जा देने के लिये तैयार नहीं होता, और अुन लोगों ने अपना कारोबार बंद कर दिया है, दूसरी तरफ वही रकम डालकर वे पैसा कमा रहे है। लेकिन आज काश्तकार के पास अितना पैसा नहीं है या अुसकी आमदनी भी अितनी नहीं है कि वह खेती करे खुद का खर्चा निभाये और फिर जिराअत की ज्यादा तरक्की के लिये कुछ बचाये। वह ज्यादा से ज्यादा तादाद में मकरूज हैं तो जब हम अुसके कर्ज का भार कम करने के बारे में सोचते हैं तो अुसके साथ साथ आअिंदा अुसको कर्ज लेने की नौबत न आये अिसके बारे में भी हमको सोचना चाहिये। अगर यह नौबत आये तो काश्तकार को कम सूद पर नक़द कर्ज किस तरह से मिल सकेगा अिस पर भी हमको अभी से सोचना चाहिये। अगर अेक ही साअिड (Side) से हम सोचें तो यह कानून अिम्प्लीमेंट नहीं हो सकेगा। क्योंकि पिछले जितने भी लेजिस्लेशन्स हुअे हैं अुनसे जो अेक तबका हमारे यहां था जो बाजारी तौर पर लेनदेन करता था वह खतम हो गया है। अुसके बाद देहातों में अैसा अेक तबका पैदा हुआ है जो खुद खेती करता है, जिसके पास अच्छी जमीन है और जिसने खेती पर काफी पैसा कमाया है वह दूसरे काश्तकारों को अिमदाद दे रहा है। मैं मानता हूं कि वह ज्यादा सूद खा रहा है। लेकिन कमसे कम वह बरवक्त काश्तकार की अिमदाद करता है। वे लोग भी अगर अिस कानून के बाद खतम हो गये तो जिराअत पेशे को अंजाम देने में बहुतसी मुश्किलात का काश्तकारों को सामना पडेगा। अिस लिये अैसे काश्तकारों को कम सूद पर बरवक्त कर्जा सप्लाय हो सके अिसके बारे में गवर्नमेंट को सोचना चाहिये। अिन चंद सजेशन्स के साथ जो बिल लाया गया है वह वाकअी नेक मकसद के साथ लाया है अितना कह कर मैं अपनी तकरीर खतम करता हूं।

شری عبدالرحمن (ملک پیٹھ) - مسٹر اسپیکر سر - قانون مصالحت قرضہ تیرہ چودہ سال پہلے نافذ ہوا وہ قانون مکمل نہ تھا اسلئے ضرورت تھی کہ ایک مکمل قانون لایا جائے لیکن جو قانون اب پیش کیا گیا ہے اور اسکے جو مقاصد بتائے گئے ہیں اوس سے یہ نتیجہ اخذ نہیں کیا جاسکتا کہ یہ بھی کوئی مکمل قانون ہے تاہم حکومت نے جس نیک نیتی کے ساتھ اسکو پیش کیا ہے اسکے لئے وہ قابل مبارکباد ہے - میں نے اس قانون میں چند نقائص دیکھے جنکو میں پیش کرنا چاہتا ہوں تا کہ حکومت ان چیزوں پرسنجید گی کے ساتھ غور کرے -

بتایا گیا ہے کہ قانون کے نافذ ہونے کے تین مہینے کے اندر درخواستیں پیش ہونا چاہئے - میں عرض کرونگا کہ تین مہینے کی ملت اتنی کم ہے کہ دارالطبع سے گزٹ

چھپکر شائع ہوکر اضلاع میں پہنچنے اور اسکی تشہیر ہونے تک میں سمجھتا ہوں کہ تین مہینے گزر جائینگے - اس سے قطع نظر ہمارے لاکھوں کسان جو معمولی نوشت و خواند سے تک واقف نہیں ہیں اس انگریزی میں طبع شدہ گزٹ کو کیسے پڑھ سکینگے اور وہ کیسے واقف ہوسکینگے - مناسب ہوتا اگر کسانوں کی مادری زبان میں اس قانون کی اشاعت کا انتظام کیا جاتا - میں مانتا ہوں یہ کہا جائیگا کہ تحصیلدار اسکی اشاعت اسطرح کرائیگا کہ تحصیل کے نوٹس بورڈ پر اسکو چسپاں کریگا - لیکن یہ کیا ضروری ہے کہ کوئی کسان تحصیل کے نوٹس بورڈ پر جا کر پڑھے - اسکو اپنے موضع سے تحصیل تک جا کر اس نوٹس بورڈ کو پڑھنے کی کیا ضرورت ہے نتیجہ یہ ہوگا کہ اسکو اطلاع نہ ہوسکیگی اور یہ تین مہینے کی مدت یوں ہی گزر جائیگی - اسلئے میں کہونگا کہ یہ مدت بہت کم ہے - دوسری چیز یہ ہے کہ اس قانون پر قانون میعاد سماعت کا اطلاق ہوگا یا نہیں پوری طرح واضح نہ ہوسکا - مجھے ایک مقدمہ میں کام کرتے ہوئے اسکا اتفاق ہوا ہے - میں اس قانون کی ضرورت آج سے آٹھ نو سال پہلے محسوس کیا تھا - ایک مقدمہ تھا پریم ناتھ بنام اکناتھ جو سشن میدک میں چلا تھا - بارہ ہزار روپیہ قرض حاصل کیا تھا - (۴۳) ہزار روپیہ قرض گیرندہ نے ادا کردئے اسکے باوجود بقیہ کئی ہزار رقم کا دعوی کیا گیا تھا اور مدعی پریم ناتھ کو ڈگری مل گئی تھی - مدیون ڈگری نے حسابات کی جانچ پڑتال کیلئے کمیشن کے تقرر کی استدعا کی - جب اس کی جانچ ہونے لگی تو اوسوقت معلوم ہوا کہ جس وقت قرضہ لیا گیا تھا تو قرض گیرندہ کی عمر ۱۲ سال کی تھی اور قرض کی ادائی کا سلسلہ پچاس سال سے چلا آرہا ہے اصل سے کئی گونہ زائد ادائی ہونے کے باوجود تیرہ ہزار روپیہ کی یکطرفہ ڈگری صادر ہوئی تھی بعد میں معلوم ہوا کہ یہ دعوی بیرون میعاد تھا نتیجتاً اس عذر سے مدیون کو فائدہ پہنچا - یہاں یہ قانون کسانوں کے فائدہ کیلئے پیش کیا گیا ہے لیکن قانون میعاد سماعت کا اس میں تذکرہ نہیں ہے - اسکا اثر کیا ہونے والا ہے معلوم نہیں - اسلئے میں یہ کہنے پر مجبور ہوں کہ یہ قانون کسانوں کے نام سے بڑے ساہوکاروں کے دعووں کی میعاد کے تحفظ کیلئے لایا گیا ہے - میں سمجھتا ہوں کہ اس قانون سے قانون میعاد سماعت کا تعلق ہونا چاہیئے اور اس چیز کو واضح طور پر ظاہر کرنا چاہئے - ایک اور چیز یہ ہے کہ قانون قرض دہندگان کا اس سلسلہ میں کوئی ذکر نہیں ہے - قانون قرض دہندگان کے تعلق سے جب عدالت میں مقدمات جاتے ہیں تو کسانوں کو فائدہ پہنچتا ہے - بہت سی چیزیں ایسی ہیں جنکی وجہ سے دعوی خارج ہوجاتا ہے یا تو وہ لیسنس ہولڈر (License holder) نہیں ہوتے یا تجدید لائیسنس نہیں کراتے وغیرہ - ہمیں شبہ ہوتا ہے کہ اس قانون سے کہیں ایسے ساہوکاروں کا تحفظ تو مقصود نہیں ہے جس نے لائیسنس حاصل نہیں کیا ہے - اگر ایسا نہیں ہے تو قانون قرض دہندگان کے اثرات کا بھی اسمیں ذکر ہونا چاہئے -

اسکے بعد میں عرض کرونگا کہ اس میں ایک چیز جو بہت مضحکہ خیز ہے وہ یہ ہے کہ اسمیں وکالتاً پیروی کی اجازت نہیں دیگئی ہے - کیا آپ سمجھتے ہیں کہ یہ (۱۰)

لا کہ کسان ذاتی طور پر مقدمات میں جوابدھی کرنے کے قابل ھیں ۔ میں سمجھتا ھوں کہ ساھوکاروں میں البتہ کوئی شخص ایسا نہوگا جو تھوڑا بہت پڑھا لکھا نہو ۔ حساب میں تو وہ ایسے ماھر ھوتے ھیں کہ سود در سود کا حساب لگانا انکے بائیں ھاتھ کا کھیل ھوتا ھے ۔ ھاں ساھوکار اپنا دعوی آپ پیش کرسکتا ھے اور یہ بتاسکتا ھے کہ اس نے اتنا مجھ سے لیا تھا اسمیں سے اتنا ادا کیا اور اب اتنا باقی ھے ۔ لیکن کسان بیچارہ جو انپڑھ ھوتا ھے اسکے لئے یہ بھی مشکل ھے کہ اپنے مافی الضمیر کو صحیح طور پر ادا کرسکے ۔ بھلا وہ عدالت میں جا کر کیا کہیگا ۔ وہ کسطرح اپنے کیس کو عدالت میں پیش کرسکتا ھے ۔ کسانوں کو اگر فائدہ پہنچانا ھے تو ھر قسم کی سہولت انکو ملنی چاھیئے ۔ بلکہ میں تو یہ عرض کرونگا کہ جسطرح نابالغین کے مقدمات میں عدالت اپنے طور پر نابالغین کے مفاد کے تحفظ کیلئے ولی کا تقرر کرتی ھے اوسی طرح ان مقدمات میں بھی کسی مختار یا ناظر یا وکیل کا تقرر کیا جانا چاھئے ۔ اوسی وقت کہا جاسکیگا کہ واقعی یہ قانون کسانوں کی بھلائی کیلئے لایا گیا ھے ۔ مجھے امید ھے کہ میرے دوست جو سرکاری بنچس پر بیٹھے ھوئے ھیں اس سے اتفاق کرینگے ۔ یہ کوئی پارٹی کا مسئلہ نہیں ھے ۔ سیدھی سادھی سی بات ھے ۔ ھم بھی یہی چاھتے ھیں کہ کسانوں کی بھلائی ھونی چاھئے اور آپ بھی یہی چاھتے ھیں کہ کسانوں کی بھلائی ھو ۔ جب ایسا ھے تو اسمیں جہاں تک ھوسکے کسانوں کو مدد دینی چاھئے ۔ عدالتوں میں ایسے فنڈس مہیا کرنے چاھئیں جن سے کسانوں کی جانب سے پیروی کرنے والے وکلاء کو فیس ادا کیجاسکے ۔ اس قانون میں نقائص کی ایک وجہ یہ بھی ھوسکتی ھے کہ یہ قانون نقل ھے اسطرح چھوڑ چھوڑ کر نقل کیگئی ھو یا ممکن ھے کہ سہو نظری ھوئی ھو ۔ میں سمجھتا ھوں کہ حکومت نے چونکہ نیک نیتی کے ساتھ یہ قانون لایا ھے اسلئے منسٹر صاحب اسکے موجودہ نقائص کو دور کرنے کی کوشش کرینگے ۔ ھوسکے تو ان نقائص کو دور کرنے کیلئے اسکو سلکٹ کمیٹی کو بھیجا جائے ۔

شری بھگونت راؤ گاڑ ھے (عنبڑ) ۔ مسٹر اسپیکر سر ۔ آج جو بل ھمارے سامنے غور کرنے کیلئے آیا ھے میں اسکے لئے حکومت کو مبارکباد دونگا کیونکہ یہ ایک ضروری قانون تھا ۔ جیسا کہ اس سے پہلے کہا گیا کہ قانون مصالحت قرضہ پہلے نافذ ھوا تھا ۔ اوس کے تحت چند مقامات پر بورڈس قائم ھوئے لیکن اوس سے حقیقی طور پر جو فائدہ پہنچنا چاھئے تھا نہیں پہنچا ۔ جن مقامات پر مجالس مصالحت قرضہ قائم ھوئے تھے وہ بھی اب بند ھوچکے ھیں ۔ اس میں صرف فریق کو ترغیب دینے کا پراویژن (Provision) رکھا گیا تھا ۔ اگر کوئی فریق یا ساھوکار ناراض رھے تو بجز اسکے کہ ترغیب دیجائے اور کسی قسم سے مصالحت نہیں ھوسکتی تھی ۔ میرا منشاء یہ ھے کہ اوس قانون کے مقاصد گو نیک تھے لیکن اوس سے کوئی خاص سہولت مقروض کسانوں کو نہیں ملی ۔ یہ جو قانون ھمارے سامنے آیا ھے وہ نہایت موزوں ھے ۔ اسمیں کافی پراویژنس رکھے گئے ھیں ۔ جو چند اعتراضات کئے گئے ھیں انکا اعادہ کرنا میں ضروری نہیں سمجھتا جو میرے تاثرات ھیں صرف وھی عرض کرونگا ۔ جب اس سلسلہ میں دفعہ واری بحث ھوگی اوس وقت تفصیلات

پر بحث ہوسکتی ہے ۔ اسوقت صرف دو تین چیزیں عرض کرونگا ۔ ایک اعتراض یہ کیا جارہا ہے کہ گورنمنٹ کو ساہوکروں کا تحفظ منظور ہے ۔ یہ اعتراض سراسر غلط فہمی پر مبنی ہے ۔ جو شبہ قانون قرض دہندگان کے تعلق سے ظاہر کیا جارہا ہے وہ بھی صحیح نہیں ہے ۔ وہ اپنی جگہ قائم ہے اسمیں اسکے ریپیل (Repeal) کی گنجائش یہاں نہیں ہے ۔ دوسرا عذر یہ ہے کہ وہ قرضہ جات جو بیرون معیاد ہوگئے ہیں انکو ازسرنو اندرون میعاد تو نہیں قرار دیا جائیگا ۔ اس شبہ کا اظہار کیا گیا ہے ۔ ظاہر ہے کہ جس پر قرض کی ادائی کی ذمہ‌داری باقی نہیں ہے وہ کیسے رجوع ہوگا ۔ یہ چیز قرین قیاس نہیں ہے اسلئے میں سمجھتا ہوں کہ یہ شبہ غلط فہمی پر مبنی ہے ۔ دوسری چیز وکالتاً پیروی کے بارے میں ہے ۔ میں یہاں وکیلوں کی وکالت کرنا نہیں چاہتا ۔ لیکن یہ بات البتہ صاف ہے کہ ہمارے عوام جو مقروض ہیں یا جو کاشتکار مقروض ہیں اون کی تعلیمی حالت ۔ اون کا سیاسی شعور ۔ اونکی معاشی حالت کے پیش نظر کیا اون سے یہ توقع کی جاسکتی ہے کہ وہ صحیح معنوں میں اپنی نمائندگی کرسکیں ۔ اسکے متعلق مجھے شبہ ہے ۔ یہ ممکن ہے کہ وہ عہدہ‌دار جن کے تفویض یہ کام کیا گیا ہو خود بہ حیثیت فریق اون کے حقوق کی حفاظت کریں ۔ اندا اگر وہ خیال رکھیں تو اسمیں کسی قسم کی قانونی پیروی کی ضرورت لاحق نہیں ہوگی ۔ یہ دوسری بات ہے لیکن مجھے اس بارےمیں شبہ ہے ۔ اس لئے ان کو جو قانونی مواقع حاصل ہیں اون کے ثمرہ سے صحیح طور پر استفادہ کرنے کے سلسلہ میں سختی نہ ہونی چاہیئے۔ یہ کہنا کہ وکیلوں کی وجہ سے لیگیشن بڑھتا ہے اور پروسیڈنگس بڑھتے ہیں ۔ صحیح نہیں ہے ۔ یہ بھی ہوسکتا ہے کہ وکیلوں کی نہ رہنے کی وجہ سے بھی طوالت کے امکانات پیدا ہوں ۔ درخواست پیش کرنے کیلئے تین ماہ کی مدت رکھی گئی جس کے اندر وہ لوگ جو اوارڈ چاہتے ہیں درخواستیں پیش کریں ۔ ظاہر ہے کہ یہ مدت ناکافی ہے ۔ اس میں اضافہ کی سخت ضرورت ہے ۔ میری ذاتی رائے ہے کہ اس بارے میں تو کوئی مدت مقرر ہی نہ ہونا چاہیئے ۔ بلکہ اسمیں وقتاً فوقتاً توسیع ہونا چاہیئے۔ جیسا کہ گزشتہ قانون میں تھا اگر ایک سال مجلس کاروبار ختم نہ کرے تودوسرے سال توسیع کیجائے ۔ اس لئے اس موقع پر یہ کہنا قبل از وقت ہوگا کہ ہم ایک سال کے اندر یا دو سال کی مدت کے اندر یا چھ ماہ کی مدت کے اندر تمام مقدمات کا تصفیہ کرینگے ۔ یا مقروض کاشتکار ہمارے پاس آکر رجوع ہونگے ۔ البتہ آج کے حالات کے لحاظ سے ہم یہ چیز طے نہیں کرسکتے اس لئے میں یہ سجسٹ کرونگا کہ تین ماہ کی مدت جو رکھی گئی ہے وہ نہ رکھی جائے بلکہ گورنمنٹ یہ اختیار لے کہ اسمیں وقتاً فوقتاً توسیع کی جاسکیگی ۔ دوسری چیز یہ ہے عدالتوں کے کام کرنے کے جو طریقے ہیں اور جس طرح مقدمات میں طوالت ہوتی ہے اوس سے میں سمجھتا ہوں کہ قانون پیشہ حضرات بخوبی واقف ہیں ۔ موجودہ کام کے علاوہ اس کام کا بار بھی ہماری ابتدائی عدالتوں پر پڑنے والا ہے ۔ اگر اس نقطہ نظر سے غور کیا جائے تو مجھے شبہ معلوم ہوتا ہے کہ اس کے تصفیہ میں بھی کافی طوالت ہوگی ۔ اور پھر یہ کہ جب کسی ایک حاکم کے پاس اتنے مقدمات اگر رجوع

ہونگے تو میں سمجھتا ہوں کہ اسکے کہ کرنے کی جو صلاحیت اور قابلیت ہوگی وہ اس کے لئے کافی نہ ہوگی ۔ اور پھر یہ بھی ہے کہ قانون کا امپلیمنٹیشن پالیسی کے تحت ہونا چاہیئے ۔ میں یہ کہنا نہیں چاہتا کہ گورنمنٹ کی پالیسی کو رو بہ عمل لانے کے لئے ہماری عدالتیں اہل نہیں ہیں ۔ لیکن اون کے جو گونا گوں مصروفیات ہیں اوسکا لحاظ کرتے ہوئے اس کی تعمیل اور امپلیمنٹیشن میں کافی تاخیر کا اندیشہ ہے ۔ اس لئے میں سجسٹ کرونگا کہ عدالت کی بجائے ایک نان آفیشیل بورڈ قائم کیا جائے جس میں ایک عہدہ دار عدالت اور دو ارکان غیرسرکاری ہوں ۔ جیسا کہ دوسرے حصوں میں بھی ہے ۔ میرا جہاں تک خیال ہے مدھیہ پردیش میں اس قسم کے بورڈس ہیں ۔ البتہ اوس کا تصفیہ جو ہوگا اوسکی اپیل ڈسٹرکٹ ججس کے پاس رکھی جائے ۔ اس قانون میں بھی ایسا پرویزن رکھتے ہوئے غیر سرکاری و نان آفیشیل بورڈس رکھنے کے متعلق جوسجیشن دیا ہوں اوس پر غور کیا جائے تاکہ ایک طرف مقروض اور دوسری طرف ساہوکاروں کی نمائندگی ہوسکے ۔ اور عہدہ دار صحیح نتیجہ پر پہنچ سکیں ۔ اسکے بعد ڈیٹر (Debtor) کی تعریف وغیرہ کے سلسلہ میں بھی چند باتیں قابل غور ہیں ۔ بس وقت اس کے اوپر ہم تفصیلی غور کرینگے اوس وقت اسکے متعلق بھی کہا جاسکیگا ۔ لیکن یہ بات کہنا چاہتا ہوں کہ بہت سے قرضے ساہوکاروں کی ہوشیاری کی وجہ سے باقی رہ گئے ہیں اور قانونی اثرات کو زائل کرنے کے لئے ایسی ایسی چیزیں ساہوکاروں نے کیں کہ جیسا کہ آنریبل ممبرس نے کہا قرضہ کی شکل ہی باقی نہیں رکھی گئیں ۔ اور معاہدات قرض کو اس طرح تبدیل کردیا گیا کہ معلوم ہورہا ہے کہ وہ معاہدات قرض ہی نہیں ہیں ۔ ایسی صورت میں دیگر قوانین مثلاً قانون شہادت ۔ قانون معاہدات وغیرہ اون کے تعلق سے جو مانعتیں ہیں اور ثبوت پیش کرنے کے سلسلہ میں ۔ نتائج اخذ کرنے کے سلسلہ میں آئیں جیسا کہ قانون انتقال جائداد اراضی زرعی کی دفعہ (۱۰) میں (جو ریپیل ہوا اسمیں) جو پرووپژن رکھا گیا اوسی طرح صراحتاً اجازت یہاں رکھنا چاہیئے ۔ گو یہاں اس چیز کو ٹچ (Touch) ضرور کیا گیا لیکن اس کی صراحت کی ضرورت ہے ۔ اسکے بعد مدت کے تعلق سے پھر ایک مرتبہ غور کرنے کی ضرورت ہے اور وہ ہے دفعہ (۲۴) کے تعلق سے دفعہ (۲۴) میں تین مہینے کی جو مہلت رکھی گئی ہے میں سمجھتا ہوں وہ کافی نہیں ہے اسمیں اضافہ ہوجائے تو مناسب ہوگا ۔ قانون مصالحت قرضہ کے لحاظ سے جو حقوق زائل ہوچکے ہیں یا قانون قرض دہندگان کے تحت لیسنس نہ لینے کی وجہ سے یا اور وجوہات کی بناء پر جو حقوق ساقط ہوچکے ہیں اون کو مکرر تازہ کرنے کی گنجائش نہیں ۔ اس لئے جیسا کہ میں نے ابتداء عرض کیا اسکی بھی صراحت ہوجائے تو غلط فہمی کے امکانات رفع ہوجائینگے ۔ یہ چند چیزیں عرض کرنے کے بعد میں یہ عرض کرونگا کہ یہ جو نیک اقدام کیا جارہا ہے جو کوشش کیجارہی ہے اسکی تعمیل کے سلسلہ میں بھی اتنی ہی کوشش اگر کی جائے اور ویسے پرووپژن رکھے جائیں تو مناسب ہوگا ۔ عام طور پر ہمارے یہاں قانونی جو اصلاحات

ہوتی ہیں ان کی تعمیل اور اون پر عمل کرنے کے لئے بعض رکاوٹیں پیدا ہوجاتی ہیں جسکی وجہ سے حقداروں کی بھلائی کرنے میں بعض مرتبہ مشکل ہوجاتی ہے ۔ یہ ایسا مسئلہ ہے جو ہر قانون کے تعلق سے سامنے آتا ہے ۔ اسواسطے ہمارے ہر قانون میں ایسے ہی پروویژن رکھنا چاہیئے جسمیں تعبیر یا تعویق کی بہت کم گنجائش ہو ۔ ایک سیدھا سادھا پروویژن اس کے اندر رکھنا چاہیئے ۔ میں جہاں تک اس نقطۂ نظر سے دیکھا ہوں اس قانون میں پیچیدگیاں ضرور نظر آتی ہیں اور ایک خاص امر اس قانون کے تعلق سے یہ ہے کہ جو اوارڈ (Award) عدالت صادر کریگی وہ رجسٹری کیلئے ایک سب رجسٹرار کے پاس بھیجا جائیگا ۔ یہ چاپٹر کا چاپٹر غیرضروری معلوم ہوتا ہے کیونکہ عدالت کے احکام جیسا کہ ایک آنریبل ممبر نے کہا ڈگری کی تعریف میں داخل ہوتے ہیں اس لئے جب عدالت ڈگری صادر کرے اور پھر اسکو رجسٹری کے لئے سب رجسٹرار کے پاس بھیجا جائے تو اسمیں قانونی نقطۂ نظر سے غیرمنقولہ جائداد پر بار عائد کرنے کا مقصد ہوتا ہے ۔ اسکی ضرورت لاحق ہوگی لیکن جہاں ہم قانون سازی کررہے ہیں یہ بھی اختیار حاصل ہونا چاہئے کہ اس خاص اوارڈ کی حد تک جو لوازمات قانون رجسٹریشن کے لحاظ سے ضروری ہیں ان سے اس کو مستثنیٰ کیا جائے ۔ اور عدالت جس نے اوارڈ صادر کیا ہے اوسکو اسکی اجرائی (تعمیل) کے حقوق عطا کردئے جائیں تاکہ اسکی تعمیل میں کوئی رکاوٹیں پیدا نہ ہوں ۔ ان خیالات کے عرض کرنے کے بعد آنریبل موور کو اس بل پر مبارکباد دیتے ہوئے میں اپنی تقریر ختم کرتا ہوں ۔

شریمتی معصومہ بیگم (شاہ علی بنڈہ) ۔ میں آنریبل موور سے وضاحت چاہتی ہوں کہ ڈیٹر کی تعریف کرتے ہوئے (اے) میں انڈیویجول (Individual) اور (بی) میں ان ڈوائنڈڈ ہندو فیملی (Undivided Hindu Family) جو بتایا گیا ہے تو کیا دیگر کمیونٹیز (Communities) کے فیملیز (Families) اس ایکٹ سے مستثنیٰ رہینگی ۔

श्री. देवीसिंग चौहान :—मैं आप के सवाल का मतलब समझ गया हूं। मैं आपकी जानकारी के लिये कहना चाहता हूं कि हमारे यहां दो कानून हैं। एक हिंदू जाइंट फॅमिली लॉ (Hindu Joint Family Law) और दूसरा मुस्लिम लॉ (Muslim Law) है। मुस्लिम लॉ के तहत सब जायदाद एक ही आदमी की समझी जाती है। जब तक उसका इंतकाल न हो, तब तक वह जायदाद उसकी होती है। लेकिन हिंदू लॉ में एक शख्स के यदि दो बेटे हैं तो उनके जन्म से अपने बाप के जायदाद में उनका हिस्सा माना जाता है। खास तौर पर उल्लेख किया गया है इस लिये यहां पर हिंदू लॉ की इस खासियत की वजह से अलग तजवीज करने की जरूरत पड़ी। जो कानून हैदराबाद स्टेट में राजय होगा वह सबके लिये लागू होगा।

శ్రీ గోపిడి గంగారెడ్డి

పూజ్యమైన అధ్యక్ష మహోదయా; ఇప్పుడు ఏదైతే ఇక్కడకు బిల్లు తేబడిందో....

مسٹر ڈپٹی اسپیکر - آنریبل ممبر هندی میں بولیں تو مناسب هوگا تاکه منسٹر صاحب اسے سمجھ سکیں -

श्री. गोपिडिगंगारेड्डी :—मुश्किल यह है कि मैं अपने विचार हिंदी में अच्छी तरह नहीं रख सकता हूं. अब यह जो बिल हमारे सामने आया है उसका तर्जूमा हमको नहीं दिया गया मैं समझता हूं कि यहां जो बिल पेश किये जाते हैं उनका तर्जूमा ऐसी भाषा में नहीं दिया जाता है जिसे हम समझ सके. । इससे यह जाहिर होता है आप लोग हमारी राय ही लेना नहीं चाहते हैं. इसी लिये हमको तर्जूमा कर के नहीं दिया जाता है । आपने क्या कानून लाया हैं यह तो आपको खुद को ही मालूम नहीं है । आपको तो कभी सही न बोलने की आदत ही होगई है। आपको यह भी मालूम नहीं है कि या आप के सिर पर टोपी हैं आया नहीं और फिर दूसरों को पूछते हैं कि मेरे सिरपर टोपी है यानहीं । यह जो बिल आज लाया जा रहा है उसका असर देहातोंपर ज्यादा होनेवाला है। यह तो एक देहातों का मसला है। देहातियों की जो तकलीफे हैं वह यहां आलेशान असेंबली में बैठकर आपके सामने नहीं आ सकती है । यह जो बिल लाया जा रहा है वह देहातोंकी हालत देखकर नहीं लाया जा रहा है ।

इस बिल का विचार करते समय पहले हमें यह देखना चाहिये की देहातियों का जो कर्जा हैं वह यह लोग जो व्यवसाय करते हैं उसके लिये लिया जाता है। ज्यादातर हम यह देखते हैं कि यह जो कर्जा हैं वह शादी ब्याह के लिये लिया जाता है और वह भी बालक विवाह के लिये लिया जाता है। यह कर्जा लेकर नाबालिक शादियां की जाती है और इस के लिये वह सावकार के पास कर्जा लेने के लिये जाते हैं ।

यह जो बिल है वह इसके कर्जे को कम करने के लिये लाया जा रहा है लेकिन यह नहीं देखा जाता है कि इस कर्जे की जड क्या है यह कर्जा वास्तव में होताही क्यों है। कर्जा कम कैसे किया जाय यह सोंचने के पहले यह कर्जा लेना बंद कैसे हो इसके बारे में सोचना चाहिये। साहूकार जो मनमाना सूद लेकर कर्जा देता है उसके बारे में कुछ नहीं किया जाता है और फिर बंबई में ऐसा है, मदरास में ऐसा है, इस तरह कहकर उनकी नकल कीजाती हैं, अमेरिका की भी नकल की जाती हैं ।

किसान ज्यादा तर लावती के वक्त कर्जा लेता है । जो कर्जा देता हैं वह १ रुपया सेकडा सूद लेता हैं और इस तरह धान्य लेकर वह किसान अपनी लावती करता हैं लेकिन २ रुपये फी मन से वह और अलग पैसे लेता है और धान्य देता है । सूद तो आपको दिखाने के लिये सेकडा १ रुपया ही देता है । और चोरी छिपे और रुपये उसे देने पडते है ताकि वह कानून में नहीं आसके । जो साहूकार होता है वह किसान को धीरेधीरे से कहता है फला फला आदमी ३ रुपये मनसे ले गया है तू भी ३ रुपया मनसे ले जा. । लेकिन मैं सूद का दर तो १ रुपया सेकडा लिखूंगा. ।

आज कल ऐसे साहूकार होगये हैं कि यदि कोई १०० रुपये का कर्जा मांगता हैं तो उसे १५० रुपये लेजाने के लिये कहते हैं और आजकल के कास्तकारों को लगता हैं कि यह सुन कर कितना अच्छा है हम जितना कर्जा मांगते हैं उससे भी ज्यादा कर्जा देने के लिये वह राजी होता है। लेकिन

वह कर्जे का सूद कितना लेना है यह तो आपको मालूम नहीं होता है। तो मेरे कहने का मतलब यह है कि आपने कर्जा कम करने का तो बिल लाया है लेकिन अभीतक साहूकारी अबॉलिशन का तो कोई बिल नहीं लाया है मेरा यह कहना है कि आपने अभी जो यह कानून लाया है वह भी उन पूंजी पतियोंकी इमदाद करने के लिये लाया है। हमारे धर्म ग्रंथ में यह बताया गया हैं कि ५० फीसद से ज्यादा सूद लेना तो पाप है। इससे ज्यादा सूद तो कभी नहीं होनां चाहिये। दुगने से ज्यादा सूद तो कभी नहीं लेना चाहिये। यह जो कानून बनाया जा रहा है उसमे यह नहीं बताया जा रहा है कि कर्जा हो ही नहीं इसके लिये क्या किया जाय। आपको जब जरूरत होती है तब आप देहात की तरफ जाते है लेकिन इस कानून के बनाते समय उनको नहीं पूछा गया है। देहातियों को कर्जा ही न हो इसकी कुछ गुंजायश इस कानून में नहीं रखी गई है। साहूकार जो कर्जे का हिसाब करता है वहतो कर्जा लेने वाला नहीं जानता है। कई ऐसे लोग होते हैं जो कि शादी के लिये बडी सूदपर कर्जा लेते हैं। नाबालिग शादी के लिये कर्जा लेते है। अगर किसान साहुकार के पास जाता है तो वह साहुकार से और कर्जा लेता है और उसके लिये उसे १२ मन ज्वार देनी पडती है। उसको पूरी तौर पर साहुकार पर आश्रित रहना पडता है।

यह बतलाया जाता है कि हमने यह जो बिल लाया है वह बॉम्बे सिस्टम से लाया है और बंबई के रिवाज से लाया है। बंबई सिस्टम वहां के लिये अच्छा होगा लेकिन वही सिस्टम हमारे लिये भी कैसे ठीक हो सकता है। बडे आदमी बंबई में रहते हैं इस लिये हमें भी बंबई में ही रहना चाहिये ऐसी कोई जरूरत नहीं है। हम तो बस बंबई कि नकल नहीं तो मद्रास कि नकल करते हैं लेकिन जो हालत बंबई में या मदरास में है वह जुदा है वह हालात हमारे यहां नहीं है. यह सोंचने की बात है जो बातें बंबई में अच्छी होगी वह हमारे यहां भी कैसे अच्छी हो सकती है. जिन्होंने यह बिल यहां लाया है वह भी नहीं जानते हैं कि इस तरह कानून की नकल कर के यदि बंबई जैसा या मद्रास जैसा कानून यहां लाया गया तो क्या नतीजा होगा। सारे कामों में बंबई, मद्रास की नकल करके हम कुछ बहुत अच्छा काम कर रहे हैं ऐसा बतलाने ने की कोशिश की जाती है। बंबई में इतने बच्चे पैदा होते है और हैदराबाद में इतने बच्चे पैदा होते हैं तो हमारे यहां भी उनकी नकल क्यों नहीं की जा सकती है। कहने का मतलब यह है कि इस तरह दूसरे स्टेटों की नकल करके आप के कानून किसनों की भलाई का कोई काम नहीं कर सकेंगे। बंबई की हवा और बंबई का माहोल कैसा है यह हमें पहले देखना चाहिये अगर हम यह बात ध्यान में रखेंगे तो फिर दूसरे की अंध नकल करने की कोशिश नहीं करेंगे.

Shri Devi Singh Chauhan : I would appeal to the intelligence and intuition of the hon. Member to suggest new things.

శ్రీ గోపిడి గంగారెడ్డి :— అయ్యా, మీరు ఏమి చెబుతున్నారో గాని, అదిమాకు తెలియదు. అదే మొట్టమొదట స్పీకరుగారు రూలింగు ఇచ్చారు. మరి ఇప్పుడు ఇట్లా ఇంకో భాషలో మాట్లాడితే ఎట్లా? మీ డోలు మీరు కొడుతున్నారు. నా డోలు నేను కొడుతున్నాము. అందుకే ఎక్కడికక్కడి ప్రాంతాల వారిని అక్కడక్కడ చేర్చాలని అంటున్నాము. అయితే ఇప్పుడు..

مسٹر ڈپٹی اسپیکر - آپ اگر ھندی میں تقریر فرمائیں تو زیادہ مناسب ہوگا اور آنریبل منسٹر بھی اسکو سمجھ سکینگے -

श्री. गोपीडी गंगारेड्डी :—बात यह है कि मैं तेलुगु में बात करता हूं और ऑनरबल मिनिस्टर साहब अंग्रेजी में बात करते हैं। मैं उन्हों ने क्या कहा कुछ नहीं समझ सका अगर वह ऐसी ज़बान में बोलें जिसे मैं समझ सकूं तो ज्यादा अच्छा होगा।

श्री. देवीसिंग चौहान :—मैं ऑनरेबल मेंबर से यह दरखास्त करना चाहता हूं कि वह यदि कुछ नई चीजें सुझाना चाहें तो सुझायें।

श्री. गोपीडी गंगारेड्डी :—नया तो कुछ नहीं है और मैंने नया कुछ बतलाया भी नहीं है। कर्ज कैसे कम करें इसके बारे में तो आप ने कानून लाया है। लेकिन कर्जा ही न हो इसके लिये तो आपने कुछ नहीं सुझाया है। आपने तो उनको जन्म से ही कर्जे से विमुक्ती दी है। जब इसकी फर्स्ट रीडिंग खतम होगी और अमेंडमेंटस आयेंगे तब मैं कुछ नञी चीजे बतला सकूंगा जैसे की ऑनरेबल मिनिस्टर साहब ने फरमाया है।

Mr. Deputy Speaker: Now it is almost time. We will now take up half-an-hour debate. Shri G. Hanumantharao.

Half-an-Hour Debate

Shri G. Hanumanth Rao: Clarification Sir:

" It has been brought to my notice that staff are misinterpreting the phrase 'The intention of Government in this connection' at the beginning of the second sentence in paragraph one of the order.

It is the expressed intention of Government to employ in the service of the Road Transport Corporation, on exactly the same terms and conditions as are now obtaining to them, the entire staff, gazetted and non-gazetted, now working in the R.T.D. who are willing to accept service under the Corporation; and in this connection this may be taken as a definite decision of Government, which will not be altered.

(Sd.)

Road Transport Superintendent.

Most of them chose to join the R.T.D. after that when the problem of R.T.D. brought in the State Assembly the Minister concerned declared that it was being run as a corporation

and hence no estimates were submitted to the House. But in his reply to my question he declares R.T.D. is a Government Department. As an employer in the year 1950-51 and 1951-52 the Government was bound to refer the demand of bonus to the Industrial Tribunal along with other demands. But the Minister replied that it is a matter of policy.

Further certain demands are accepted one of which, promises to de-casualise casual labour after 6 months and appoint them as temporary but still some casual labour is discharged after the strike. The Government in their press note which hon. the Minister concerned referred to and through their spokesman promised that there will be no victimisation but still cases are going on in the court, and casual labour is discharged as stated above.

In view of this it has become necessary to get all these points clarified and hence half an hour discussion is necessary.

I shall now lay on the table of the House the office order and the option form also.

Now, I shall read out my questions :

1. Whether option forms were given to R.T.D. workers at the time of separation of the R.T.D. from N.S.R. railway, and whether R.T.D. became a corporation since then ?

2. Whether the R.T.D. workers enjoy the privileges of the Government servants ?

3. Whether the Government were justified in refusing to refer the demand of bonus to the Industrial Court ?

4. Whether some cash payment was assured to the R.T.D. workers ?

5. Whether the Government have accepted some demands of the R.T.D. workers and given some assurances but is still taking recourse to victimisation.

After this, the workers have given a memorandum also to the Government.

I want a clarification on all these points, and after the hon. Minister gives his reply, if further questions arise, I shall put them, later.

منسٹر فار ھوم (شری دگمبر راؤ بندو) - آنریبل ممبر نے جس پریس نوٹ وغیرہ کا حوالہ دیا ہے وہ بالکل صحیح ہے - یہ واقعہ ہے کہ فینانشیل انٹی گریشن (Financial Integration) کے بعد جب اسٹیٹ کی ریلوے کو سنٹرل گورنمنٹ نے اپنے قبضہ میں لے لیا تو اس وقت آر - ٹی - ڈی - کو بھی سنٹر کے تحت لے لیا گیا - کیونکہ یہ بھی ریلوے کا ایک جزو تھا - اسکے بعد آر - ٹی - ڈی - کے بارے میں اسٹیٹ گورنمنٹ اور سنٹرل گورنمنٹ میں مراسلت ھوتی رھی کہ آیا اسکو ایجنسی بیسس پر چلایا جائے یا کیا - آخر سنٹرل گورنمنٹ نے یہ طئے کیا کہ آر - ٹی - ڈی چونکہ پراونشیل سبجکٹ (Provincial Subject) ہے اسلئے اسٹیٹ گورنمنٹ کے تحت اسکو چلانا چاھئے - اسلئے ایجنسی سسٹم ختم ھوگیا اور آر - ٹی - ڈی - پھر حیدرآباد گورنمنٹ کے قبضہ میں آگیا - اس وقت حیدرآباد گورنمنٹ نے ارادہ کیا کہ آر - ٹی - ڈی - کو کارپوریشن بنا کر چلانا چاھئے - اسی وقت پارلیمنٹ میں کارپوریشن ایکٹ (Corporation Act) پاس ھوا - کارپوریشن بنانے کے بارے میں آر - ٹی - ڈی - ورکرس سے پوچھا گیا اور یہ بتایا گیا کہ انہیں ان ھی شرائط و مراعات کے تحت کام کرنا پڑیگا جو ریلوے کے تحت رھنے کے زمانے میں نافذ تھے - میں سمجھتا ھوں کہ کارپوریشن بنانے کا فیصلہ غلط فہمی کی بناء پر کیا گیا تھا ، کیونکہ کارپوریشن ایکٹ جو پارلیمنٹ سے منظور ھوا تھا اس وقت تک حیدرآباد پر لاگو نہیں ھوسکتا تھا ، جب تک کہ پریسیڈنٹ اسکو حیدرآباد سے متعلق کرنے کی منظوری نہ دیدیں - چنانچہ موجودہ گورنمنٹ کے وجود میں آنے کے بعد میں نے پھر اس سلسلے میں کوشش کی کہ کارپوریشن ایکٹ حیدرآباد پر اپلائی (Apply) کیا جائے - چنانچہ اسٹیٹ منسٹری کی کوششوں سے گزشتہ ڈسمبر میں یہ ایکٹ حیدرآباد پر اپلائی ھوگیا جسکو ایک سال کا عرصہ ھوتا ہے - اس دوران میں اسٹیٹ گورنمنٹ نے متصلہ صوبہ جات کے اتھاریٹیز (Authorities) سے مشورہ کیا جنھوں نے کارپوریشن کے بارے میں تجربہ حاصل کیا تھا - بمبئی گورنمنٹ سے بھی کارپوریشن بنانے کے بارے میں مشورہ کیا گیا - وہ خود مطمئن نہ تھی - بمبئی گورنمنٹ نے ھمیں مشورہ دیا کہ ھم کارپوریشن کے جھگڑے میں نہ جائیں - ان حالات میں ھمنے یہ مناسب سمجھا کہ اس بارے میں کلوزلی اسٹڈی (Closely study) کریں - چنانچہ ھمنے اپنے آفیسرس مختلف مقامات کو بھیجے جہاں کارپوریشن یہ کام چلا رھی تھی - بالاخر حیدرآباد گورنمنٹ اور ھوم ڈپارٹمنٹ اس نتیجہ پر پہنچے کہ اس سے کم از کم گورنمنٹ کو تو کوئی مفید چیز حاصل نہ ھوگی - اور نہ انتظامات میں وہ خوبی رھیگی جو اب ہے - رھا یہ سول کہ ورکرس کے بارے میں کیا کیا جائے ؟ اس سے پہلے جب تک کہ کارپوریشن ایکٹ لاگو نہیں ھوا تھا گورنمنٹ نے یہ فیصلہ کیا تھا کہ کارپوریشن بنانے تک اس آر - ٹی - ڈی - کو گورنمنٹ ڈپارٹمنٹ کی طرح چلایا جائے - اور ملازمین پر بھی وھی رولس اپلائی ھونگے جو ریلوے کے زمانے میں تھے - یا سیول سرویس رولس لاگو ھونگے - ان دو صورتوں کے سوا کوئی تیسری صورت نہ تھی - ایسی صورت میں ورکرس (Worke s) کے تعلق سے کسی قسم کے شبہ کی گنجائش نہ تھی - ھماری یہ رائے تھی کہ جب تک گورنمنٹ کے قبضہ میں آر - ٹی - ڈی - نہ آئے اس وقت تک ریلوے کے

نافذ شدہ فیسیلیٹیز (Facilities)جو تنخواہوں وغیرہ کے بارے میں ہیں وہی برقرار رہیں ۔ اس کی خلاف ورزی کی کوئی شکایت آر۔ ٹی۔ ڈی۔ کے ملا زمین کی جانب سے پیش نہیں ہوئی ۔ اسکے بعد جو گورنمنٹ آئی تو اس نے گورنمنٹ رولس کے بموجب عمل کیا ۔ اور اب بھی یہی عمل جاری ہے ۔ گورنمنٹ اس بارے میں تصفیہ کریگی کہ ریلوے کے لئے جس طرح انتظامی بورڈ ہے اسی طرح اسکے لئے بھی قائم کیا جائے اور اون ہی لائنس (Lines) پر آر۔ ٹی۔ ڈی۔ کو ڈیولپ (Develop)کیا جائے ۔ جہاں تک میرے معلومات ہیں دوسری جگہ بھی ایسے بورڈس ہیں ۔ یو۔ پی۔ میں بھی اسکے لئے ایک بورڈ قائم ہے جو آر۔ ٹی۔ ڈی کا انتظام کرتا ہے ۔ اسکے بعد جسطرح میں نے کہا اگر سیول سرویس رولس (Civil Service Rules) لاگو ہوں تو اسکے لحاظ سے بھی امپلائیز کا کوئی نقصان نہیں ہوتا ۔ کیونکہ انکو وہی سہولتیں اور طمانیت حاصل ہوتی ہے جو دوسرے گورنمنٹ امپلائیز کو حاصل ہیں ۔ ایج بار (Age-bar) کے بارے میں مستثنی کرنے کے آرڈرس دیدئے گئے ہیں ۔ کیونکہ وہ پہلے ہی سے امپلائیمنٹ میں ہیں اور کام کررہے ہیں ۔

اسکے بعد بونس (Bonus) کا مسئلہ تھا ۔ بونس کا عام طور پر یہ اصول ہے کہ کسی صنعت یا کاروبار میں کیپیٹل (Capital) اور لیبر (Labour) دونوں شامل ہوتے ہیں ۔ اور اس سے جو نفع ہوتا ہے اس میں سے جس طرح کیپیٹل کو حصہ ملتا ہے اسی طرح لیبر کو بھی کچھ حصہ ملنا چاہئیے ۔ یہ ایک واجبی اصول ہے ۔ لیکن آر۔ ٹی۔ ڈی۔ کے بارے میں گورنمنٹ کا یہ نظریہ ہے کہ اس سے جو آمدنی ہوتی ہے کوئی پرافٹ (Profit) نہیں ہے بلکہ گورنمنٹ کے دوسرے ریوینیوز (Revenues) کی طرح ہے ۔ جس طرح دوسرے ریوینیوز اسٹیٹ کے چلانے میں کام آتے ہیں اسی طرح آر۔ ٹی۔ ڈی۔ کا منافع بھی ریوینیو میں شمار ہوگا ۔ یہ منافع جب ریوینیو کی شکل میں اسٹیٹ کے کام میں لگےگا تو ظاہر ہے کہ اس کا فائدہ پوری پبلک کو پہنچیگا ۔ بونس کے سلسلے میں جو ورکرس مجھ سے ملنے آئے تھے میں نے انہیں بھی یہی سمجھایا ۔ میں نے انہیں بتایا اگر آپ کو آدھی روٹی ملتی ہے تو آپ اس پر بھی غور کیجئیے کہ دوسروں کو آدھی بھی نہیں ملتی ۔ ہم تو یہ چاہتے ہیں کہ زیادہ سے زیادہ لوگوں کو روزگار فراہم ہو اور بیروزگاری دور ہو ۔ آر۔ ٹی۔ ڈی۔ سے جو منافع آئیگا تو وہ روڈس کنسٹرکشن (Roads Construction) اور بسیس کی تعداد بڑھانے میں صرف ہوگا ۔ اسطرح اگر ۱۰۰ بسیس کا اضافہ ہوتو اس سے ۴۰۰ افراد کو روزگار مہیا ہوگا ۔ میں نے ان سے کہا کہ وہ اپنے دل کو کشادہ کریں اور اپنے جو بھائی بیروزگار ہیں انہیں بھی روزگار دلانے میں حکومت کی مدد کریں ۔ اسلئے حکومت نے یہ طے کیا کہ بونس کا مسئلہ نہ اٹھایا جائے ۔ البتہ جیسا کہ میں نے پہلے بھی طمانیت دی ہے اور اب بھی میں اس پر قائم ہوں کہ سرویس کنڈیشنس (Service conditions) اچھے رہیں جس سے ان کی ایفشنسی بڑھے ۔ اس سلسلے میں جو بھی مسائل در پیش ہونگے انہیں آپسی بات چیت کے ذریعہ حل کیا جاسکتا ہے ۔ اسکے باوجود بھی کوئی چیز تصفیہ طلب رہ جائے تو اسے ٹریبونل

(Tribunal) کو رفر (Refer) کیا جاسکتا ھے - بونس کے تعلق سے بھی یہ کہا جاتا ھے کہ یہ مسئلہ کیوں نہ ٹریبیونل کے سپرد کیا جائے - اس بارے میں میں یہ کہونگا کہ کوئی بھی مسئلہ کیوں نہو گورنمنٹ کو یہ حق رھتا ھے کہ وہ اس کے تصفیہ کو رد کرے - یہ عجیب بات ھوتی اگر ھم بونس کا مسئلہ پہلے تو ٹریبیونل کو رفر (Refer) کرتے اور بعد میں اسکے تصفیہ کو ماننے سے انکار کرتے - کیونکہ یہ گورنمنٹ کا اختیاری ھے - اسلئے ھم نے یہ طئے کیا کہ اس کو ٹریبیونل کے سپرد نہ کیا جائے - باقی چیزیں جو مان لی جانی تھیں مان لی گئی ھیں - ایک مسئلہ فیکٹری ایکٹ کے لاگو کرنے کا تھا - ریلوے نے بھی اب تک فیکٹری ایکٹ کو چھوٹے چھوٹے کارخانہ جات میں جہاں ریپرنگ وغیرہ کا کام ھوتا ھے لاگو نہیں کیا ھے - اسکے بارے میں بہت سے لوگ یہ سمجھتے ھیں کہ آر - ٹی - ڈی - کے ڈیپوز میں فیاکٹری ایکٹ لاگو کرنے میں ھم سے بھول ھوئی ھے - مگر میں سمجھتا ھوں کہ فیکٹری ایکٹ (Factory Act) سے ھمارے لیبررس (Labourers) کو فائدہ ھوگا - انکی افیشینسی (Efficiency) بڑھیگی - اسکے بعد کیژول لیبررس (Casual Labourers) کا مسئلہ ھے - کیژول لیبررس دو طرح کے ھوتے ھیں - ایک تو وہ کہ آج آئے اور کل چلے گئے - اور دوسرے وہ کہ جنکو کچھ مدت کیلئے رکھا جاتا ھے - آر - ٹی - ڈی - میں کچھ کیژول لیبررس ایسے بھی ھیں کہ جن کے لئے ایک جگہ کام ختم ھوا تو دوسری جگہ کام نکل آتا ھے - اس طرح ان کے لئے مسلسل کام رھتا ھے - ایسے لیبررس کے متعلق یہ کہنا کہ وہ کیژول لیبررس ھیں میں سمجھتا ھوں کہ صحیح نہوگا - اس اصول کو گورنمنٹ نے مان لیا ھے کہ ایسے لیبررس کو جو مسلسل کام کرتے آتے ھیں اور پرمیننٹ سرونٹس کے ساتھ کام کئے جارھے ھیں انکی حیثیت ٹمپرری گورنمنٹ سرونٹس (Temporary Govt. Servants) کی ھوگی - وہ اوس تعریف میں نہیں آئینگے جو کیژول لیبر کی ھے یعنی چار آٹھ دن جو کام کرکے چلا جاتا ھے ، اوس مزدور کی تعریف میں وہ نہیں آئینگے - اس طرح عمل کیا جاتا ھے کہ جو شکایتیں اس سلسلہ میں وصول ھوئی تھیں انکے بارے میں دریافت کیا گیا تو معلوم ھوا کہ وہ جملہ لیبررس جو اسٹرائک کے ختم ھونے کے ساتھ ھی رجوع بکار ھوگئے انکو اوسی بیسس (Basis) پر لیا گیا ھے جیسا کہ فیصلہ کیا گیا تھا - البتہ تین چار کیسس ایسے ھیں جو آرڈر کے مطابق رجوع بکار نہیں ھوئے - صرف ان دو چار کیسس کو ملحوظ رکھکر یہ کہنا کہ آر - ٹی - ڈی - نے تصفیہ کی خلاف ورزی کی ھے صحیح نہیں ھوگا - یہ چیز ایسی نہیں ھے کہ اسکو میں مان سکوں - انڈیویجول کیسس (Individual Cases) کے بارے میں علیحدہ علیحدہ سوچنا چاھئے - میں نے ریکارڈ کو دیکھکر یہ نتیجہ اخذ کیا کہ اس بارے میں کوئی غلطی سرزد نہیں ھوئی ھے - اسکے بعد کہا جاتا ھے کہ اب تک وکٹیمائیزیشن (Victimisation) ھے - اگر وکٹی مائیزیشن اس لئے سمجھا جارھا ھے کہ جن لوگوں پر مقدمات چلائے جانے چاھئے تھے ان پر مقدمات چلائے جارھے ھیں تو میں بھی اسکو تسلیم کرتا ھوں کہ ھاں واقعی ان معنوں میں وکٹی مائیزیشن ھورھا ھے - لیکن اسکا تعلق اسٹرائک سے نہیں ھے بلکہ یہ اصول کا فرق ھے - جہاں کہیں خلاف ورزی

ہوتی ہے اور جو کوئی خلاف ورزی کرتا ہے چاہے وہ کانگریسی ہو یا کمیونسٹ ، یا کسی اور پارٹی سے تعلق رکھنے والا ہو چاہے کسی لیول (Level) کا آدمی ہو چاہے کسی پارٹی کا لیبل (Label) اوس نے لگا یا ہو چاہے وہ کوئی ٹریڈ یونینسٹ (Trade Unionist) ہو اوس نے جس کسی قانون کی خلاف ورزی کی ہو خواہ تعزیرات کی ہو یا ضابطہ فوجداری کی اوسکے خلاف برابر مقدمات چلائے جائینگے - ہماری پالیسی یہی ہے اور ہم اس پر سختی سے کاربند رہینگے - ایسے مقدمات جب عدالت میں جاچکیں تو ہم انہیں واپس نہیں لینگے - ہم نے اس بارے میں اسکی کوشش کی ہے کہ بلالحاظ پارٹی کے عمل کیا جائے - جب ایک مرتبہ کیس عدالت میں چلا جائے تو اسکا تصفیہ وہیں سے ہونا چاہئے - اگر ملزم بیگناہ ہے تو یقیناً وہاں سے بری ہوگا - اوسکو اپنی بیگناہی کے ثابت کرنے کا وہاں موقع ہے - اگر آپ ان چیزوں کو وکٹی مائیزیشن (Victimisation) سمجھتے ہیں تو میں مجبور ہوں - میرا خیال تو یہ ہے کہ اسکو وکٹی مائیزیشن نہیں کہا جاسکتا - وکٹی مائیزیشن اسکو کہا جائیگا کہ محض اس بناء پر کسی ملازم کی تنخواہ میں کمی کیجائے کہ اوس نے اسٹرائک میں حصہ لیا یا اسکو کسی اور قسم کی سزا دیجائے یا ایسا کوئی عمل اسکے ساتھ کیا جائے جسکے نتیجہ پر وہ ٹھیک طور پر کام نہ کرسکے - ایسی کوئی شکایت میرے پاس نہیں آئی کہ ایسا کوئی عمل ہمارے لیبرس کے ساتھ کیا گیا ہے - اگر ایسی کوئی شکایت ہوتو میرے سامنے لائی جائے - میں ضرور اسکی تحقیقات کرونگا - یہی وہ چیزیں ہیں جنکے بارے میں باہر بھی بہت کچھ کہا گیا اور یہاں بھی بیان کیا گیا - مجھے یہ کہنا ہے کہ ہم یہ چاہتے ہیں کہ جس طرح آل انڈیا ریلویز آرگنائیزیشن (All India Railways Organisation) ہے اوسی طرح کا ایک بورڈ یہاں بھی آر - ٹی - ڈی - کے تعلق سے تشکیل دیا جائے - یہ مسئلہ کیبینیٹ (Cabinet) میں زیرغور ہے - بورڈ کی تشکیل کے بعد جس طرح کا آرگنائیزیشن ریلوے میں ہے اوسی طرح آر - ٹی - ڈی - میں بھی ہوگا - آر - ٹی - ڈی - کے ملازمین کے ساتھ بھی اوسی طرح کا عمل ہونا چاہئے جس طرح ریلوے کے ملازمین کے ساتھ کیا جاتا ہے - یہ چیز زیر غور ہے - میں نے ان تمام امور کی اسلئے وضاحت کردی ہے کہ اسکے بعد غلط فہمی باقی نہ رہے - میں سمجھتا ہوں کہ اس بارے میں مزید کچھ کہنے کی مجھے ضرورت نہیں ہے - اسکے بعد بھی اگر آپ مجھ سے مزید کچھ دریافت کرنا چاہیں تو پوچھ سکتے ہیں -

Shri M. S. Rajalingam **(Warangal) : I would like to know whether the Government is contemplating to create a Bonus Equalisation Fund for labourers just as they have got a dividend equalisation fund for shareholders, as a permanent solution ?**

شری دگمبر راؤ بندو - آر - ٹی - ڈی کے تعلق سے ایسا کوئی مسئلہ میرے سامنے نہیں آیا -

Shri G. Hanumanth Rao : **" Whether some cash payment was assured to the R.T.D. workers ? "**

اسکا جواب نہیں دیا گیا اور اسکے بعد ایٹم (٥) کا بھی جواب نہیں دیا گیا ہے۔

شری دگمبر راؤ بندو۔ پریس نوٹ میں اسکی وضاحت کردیگئی ہے۔ یہ واقعہ ہے کہ بونس کے طور پر نہیں بلکہ اسطرح اگر کچھ رقم مانگیں کہ ہم نے اکسٹرا ورک (Extra work) کیا ہے اسلئے انعام کے طور پر کچھ رلیف (Relief) دیا جائے تو میں نے کہا تھا کہ اسطرح رلیف دینے پر ہمدردانہ غور کیا جائیگا بشرطیکہ اسٹرائیک نہ کی جائے ۔ اگر اسٹرائک نہ کیجاتی اور گورنمنٹ کا تقریباً چھ سات لاکھ کا مالی نقصان نہ ہوتا تو اس پر اوس نقطۂ نظر سے جیسا کہ میں نے کہا تھا غور کرنا آسان تھا لیکن اب جبکہ گورنمنٹ کے مالی نقصان کا اندازہ (کیونکہ ابھی ڈیفینٹ (Definite) طور پر معلوم نہیں ہوا ہے) تقریباً ٦-٧ لاکھ ہے اگر یہ نہوتا تو کچھ نہ کچھ رلیف دینے پر غور کیا جاسکتا تھا ۔ تاہم گورنمنٹ نے جس حد تک وعدہ کیا ہے وہ برابر عمل میں آئیگا ۔

شری جی-ہنمنت راؤ۔ ایٹم (٥) کا جواب نہیں دیا گیا ہے یعنی

"Whether the Government have accepted some demands of the R.T.D. workers and given some assurances, but is still taking recourse to victimisation ?"

شری دگمبر راؤ بندو۔ ہاں وکٹی مائیزیشن (Victimisation) کے بارے میں تو میں نے کہا ہے کہ ہمارے پاس اس قسم کی کوئی شکایت نہیں آئی ۔ اگر انڈیویجول کیسس کے بارے میں گرفتاریوں اور سزاؤں کو وکٹی مائیزیشن سمجھا جاتا ہے تو یہ اور بات ہے ۔ اس قسم کا وکٹی مائیزیشن تو برابر رہیگا ۔

شری جی - ہنمنت راؤ ۔ کیا جو ڈیمانڈ ایکسپٹ (Accept) ہوا ہے اوسکا امپلی منٹیشن (Implementation) ہوا ہے ؟

شری دگمبر راؤ بندو۔ ہاں امپلیمنٹیشن ہوا ہے ۔

شری جی - ہنمنت راؤ ۔ کیا آپ نے یہ نہیں کہا تھا کہ فینانس منسٹر یہاں نہیں ہیں جب وہ باہر سے آئینگے تو بونس کا کوئسچن ڈیل (Deal) ہوگا ؟

شری دگمبر راؤ بندو۔ میں نے کہا تھا کہ جانچ ہورہی ہے اوسکے بعد جو تصفیہ ہوگا اسکے مطابق عمل ہوگا ۔

شری وی ۔ ڈی ۔ دیشپانڈے ۔ جب لیبررس کی پوزیشن صاف ہوگئی کہ وہ سنہ ۵۱ و ۵۲ میں امپلائیز (Employees) تھے تو جسطرح دوسرے فیکٹریز کے امپلائیز نے بونس کا مطالبہ کیا ہے انہوں نے بھی کیا تو پھر اسکو قبول نہ کرنے کی وجہ کیا ہے ؟ اگر قبول نہیں کیا گیا تو جسطرح دوسرے فیکٹریز کے امپلائیز کے مطالبہ کو قبول نہ کرنیکی صورت میں انکے کیس کو انڈسٹریل کورٹ (Industrial Court)

کے سپرد کیا جاتا ہے اوسی طرح آر۔ ٹی۔ ڈی کے لیبررس کے مطالبہ کو بھی انڈسٹریل کورٹ کے سپرد کرنا چاہیئے تھا ایسا نہ کرنے کی کیا وجہ ہے؟

شری دگمبر راؤ بندو۔ اگر اس ڈپارٹمنٹ کی حیثیت ایک کارپوریشن کی ہوتی تو آنریبل ممبر جیسا کہہ رہے ہیں وہ درست ہوتا لیکن گورنمنٹ نے آر۔ ٹی۔ ڈی کو ایک ڈپارٹمنٹ کی حیثیت سے چلایا ہے ایسی صورت میں یہ سوال پیدا نہیں ہوتا کہ کسی فیکٹری یا کارپوریشن کے جیسا سلوک اسکے ساتھ بھی کیا جائے۔

شری وی۔ ڈی۔ دیشپانڈے۔ آپ سے ریلوے رننگ اسٹاف (Railway Running Staff) کی تنخواہوں اور جو سہولتیں انکو دیگئی ہیں انکا حوالہ دیتے ہوئے یہ مانگ کیگئی تھی کہ وہی سہولتیں آر۔ ٹی۔ ڈی کے اسٹاف کو بھی مہیا کیجائیں۔ ریلوے کے افسروں کی پے (Pay) بھی بتائی گئی تھی۔ آر۔ ٹی۔ ڈی۔ کا بجٹ ہمارے سامنے کیوں نہیں لایا جاتا۔

شری دگمبر راؤ بندو۔ اس سلسلہ میں فینانس منسٹر جواب دیسکتے ہیں کہ کیوں اسکو شریک نہیں کیا گیا۔ میں نے دوسرے پراونسس میں دریافت کیا تو معلوم ہوا کہ جسطرح ریلوے کا بجٹ ہاؤز کے ٹیبل پر رکھا جاتا ہے اسی طرح آر۔ ٹی۔ ڈی۔ کا بجٹ بھی ہاؤز کے ٹیبل پر رکھا جاتا ہے اور عام طور پر اس پر ڈسکشن کیا جاتا ہے۔ جو عمل دوسری جگہ ہے یہاں بھی ہونا چاہیئے۔ میں سمجھتا ہوں کہ فینانس ڈپارٹمنٹ آئندہ سال اس کا بجٹ بھی پیش کریگا یا کوئی اور طریقہ ہوسکتا ہے تو وہ اختیار کریگا۔ لیکن اس سے یہ نتیجہ نہیں نکالا جاسکتا کہ کارپوریشن نہ بننے پر بھی یہ تصور کرلیا جائے کہ وہ بن گئی ہے اور اسکے ساتھ وہی سلوک کیا جائے جیسا کہ کارپوریشن کے ساتھ کیا جاتا ہے۔ جب تک اسکی پوزیشن ڈپارٹمنٹ کی ہے اسکے ساتھ ڈپارٹمنٹ کا سا سلوک کیا جانا ضروری ہے۔ گورنمنٹ اپنی اس پالیسی کے تحت اسکو چلائیگی۔ البتہ گورنمنٹ یہ ارادہ ضرور رکھتی ہے کہ ریلوے رننگ ڈپارٹمنٹ (Railway Running Department) کی طرح اس کو چلایا جائے۔

شری کے۔ وینکٹ رام راؤ (چنا کنڈور) - آر۔ ٹی۔ ڈی۔ کے ملازمین پر مقدمات چلانے کے سلسلہ میں کیا آپ ایک امپلائر کی حیثیت سے اس پر سوچنے کیلئے تیار نہیں ہونگے کہ آپ کے ملازمین جو مقدمات کی پیروی کے سلسلہ میں جائینگے تو اس سے انکی کارکردگی اور افیشنسی پر برا اثر پڑیگا اور انکی کارکردگی متاثر ہوگی؟ ان حالات میں کیا آپ مقدمات کو واپس لینے کے بارے میں نہیں سوچتے؟ یا آپ یہ سوچتے ہیں کہ چونکہ ایک مرتبہ معاملہ عدالت میں چلا گیا ہے اس لئے اپنی بات کو نباھنے کے لئے مناسب ہے کہ جو تصفیہ ہو وہ عدالت ہی سے ہو۔ لیکن تین سو ملازمین کا وقت واحد میں رخصت لینے سے جو نقصان ہوسکتا ہے اس پر غور کیا جاتا تو میں سمجھتا ہوں کہ ان مقدمات کو واپس لینے کے بارے میں سوچا جاتا۔

شری دگمبر راؤ بندو - اس نقطه نظر سے نه حکومت غور کر رهی هے اور نه غور کریگی - هم یه سمجھتے هیں که جب کوئی آدمی جرم کا ارتکاب کرتا هے تو هر ایسے شخص کا مقدمه عدالت میں جانا چاهیئے - اگر اس مقدمه میں اصلیت نہیں هے تو ظاهر هے که وه وهاں سے بری هوجائیگا - عدالت اس کا فیصله کریگی - اور میں سمجھتا هوں که یہی کارکردگی اور افیشینسی کو بڑھانے کا طریقه هے -

شری کے - وینکٹ رام راؤ - ان تین سو ملازمین کے بار بار پیروی کے سلسله میں بھرنے سے آر - ٹی - ڈی - کا جو نقصان هوگا اس کا ذمه‌دار کون هوگا ؟

شری دگمبر راؤ بندو - اس کے لئے گورنمنٹ ذمه‌دار هے -

شری سی ایچ - وینکٹ رام راؤ - اس کو بجٹ میں کیوں نہیں شریک کیا گیا ؟

شری دگمبر راؤ بندو - اس کا فیصله گورنمنٹ نے ابھی نہیں کیا هے - گورنمنٹ تو یه سمجھتی هے که کارپوریشن بنانے سے کوئی فائده نہیں هے بلکه ایک بورڈ بنایا جائے - اس مسئله پر کیبینٹ لیول (Cabinet level) پر غور کیا جارها هے جو فیصله هوگا اس کے مطابق عمل کیا جائیگا -

شری جی - هنمنت راؤ - یه کہا گیا تھا که اسٹرائک ختم هوتے هی غور کرینگے لیکن اب تک نہیں کیا گیا -

شری دگمبر راؤ بندو - میں اوس وقت ایسے پوزیشن میں نہیں تھا که میں ایسا کوئی اشورنس (Assurance) دیتا - میں نے مجبوری ظاهر کی اور یه کہا که جب تک میں فینانس منسٹر سے کنسلٹ (Consult) نه کرلوں اور وه ایگری (Agree) نه کرلیں میں کچھ نہیں کہه سکتا - میں یه نہیں بتا سکتا که فینانس منسٹر اس سے ایگری کرینگے یا نہیں اس لئے میں کچھ نہیں کہه سکتا -

شری جی - هنمنت راؤ - میں فینانس منسٹر کے بارے میں نہیں پوچھ رها هوں - آپ کے بارے میں پوچھ رها هوں که آپ نے وعده کیا تھا یا نہیں ؟

شری دگمبر راؤ بندو - هوم سکریٹری کے لیٹر میں جو اشورنس دیا گیا هے اور اسٹرائک کے بعد جو اشورنس نوٹیفیکیشن کے ذریعه دیا گیا هے اس میں ان وعدوں کی وضاحت موجود هے - اس اسٹرائیک کی وجه سے گورنمنٹ کو کتنا نقصان آیا هے اس نقطه‌نظر سے بھی تو همیں غور کرنا هے -

شری وی - ڈی - دیشپانڈے - کیا آپ نے نہیں فرمایا تھا که تین ڈیمانڈس (Demands) و انڈسٹریل کورٹ کو بھیجے گئے هیں ان کو وتھڈرا کرکے هم آپس میں هی غور کرلینگے -

شری دگمبر راؤ بندو - ہاں - یہ تو اب بھی ہوسکتا ہے -

شری وی۔ ڈی۔ دیشپانڈے - کیا آپ نے نہیں کہا تھا کہ یہ کیس عدالت سے واپس لئے لئے جائیں گے اور ہم خود آپس میں طے کرلینگے -

شری دگمبر راؤ بندو- ہاں - ہاں آج بھی یہ ہوسکتا ہے - لیکن اسمبلی میں سوالات کرتے رہنے سے یہ مسائل حل نہیں ہوسکتے تاوقتیکہ اس کے حل کرنے کے مناسب طریقے اختیار نہ کئے جائیں -

The House then adjourned till Half Past Two of the Clock on Tuesday, the 6th October, 1953.
